

गती तल पर अनुपम,  
ह नित उच्च परम ।  
पापो का भार हरे,  
-जन मे उत्साह भरे ।

जी बनकर निज कार्य क्षेत्र मे डट जावे,  
जुजदण्डो का वे चिर अतीत गौरव पावे ।  
अमर कीर्ति उत्साह सलिल की धार वहे,  
पुनीत पत्रिका जन-जन मे उत्साह भरे ।

जावे आज शिक्षा ने,  
ज ज्ञान की शिक्षा से ।  
सब कोले सुविहार करे,  
जन मे उत्साह भरे ।

सभी जैन जो छिन्न-भिन्न हो रहे आज,  
दान-करे त्यागे सब अपने स्वार्थ काज ।  
देश मे भी नवजीवन का सचार करे,  
पुनीत-पत्रिका जन-जन मे उत्साह भरे ।

स्मारिका--

# सम्बोधिका

द्वितीय - पृष्ठ

प्रेरणा

श्रेयसश्च मतिः कीर्तिमान्तराः

सुरसाध

श्री इन्द्राक्षरं महता

श्री प्रेमचन्दं धारिणा

श्री सुमानसतं भाषु

श्री विमलचन्द्रं रत्नचन्द्रं आदरुः

श्री सुमन्त्रं धारिणा

विज्ञापन

धर्मं न इनीचाम

विक्रम

धर्मोत्तमः

विश्वं तदं प्रसाद

व्यग्रीचन्द्रं सुवर्णाः

म

नू

१

६

७

१

★

प्रधान सम्पादन  
विश्व मोक्ष

प्रबंध सम्पादन  
बन्धु धीमान्

मन्त्राह्वार सम्पादन  
प० भगवानराज ज्ञान

सदस्य  
विमलचन्द्रं भगवान्

गन्धर्वचन्द्रं श्रेयः

सुधाचन्द्रं मोक्ष  
कृतुमारं महामान

प्रकाशक

श्री जैन मित्र मण्डल, जयपुर-३

प्रकाशक

श्री जैना विशाल मण्डल

कुम्भीगरी ४ गी १० का राधा,

जयपुर-३



प्रकाशन  
कार्यक्रम

श्रम  
द्वितीय

वर्ष  
१९६१

प्रथमा

व्याख्या

१. विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 २. विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 ३. विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 ४. विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 ५. विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 ६. विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 ७. विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 ८. विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 ९. विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 १०. विद्वत् शिवाचार विद्वत्

विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 विद्वत् शिवाचार विद्वत्

विद्वत्

मुद्रक :

विद्वत् शिवाचार विद्वत्  
 जयपुर-४





# ≡ अनुक्रमिका ≡

## शुभकामना चन्द्रिका

- १ गणपति की वी० वा० गिरि
- २ गणेशपति का या लम नाथ
- ३ श्री कल्याण मा सुश्रमापी-संस्कृत
- ४ मुनि श्री मन्मथुमारदी लयम
- ५ कल्याण र्थ गुणी
- ६ धा वल वन
- ७ श्री विद्या विद्या मारा मा०

## विस्तार और प्रविष्टिस्थ

		पृष्ठ संख्या
१ गणेशकाम	—विद्या म म प्रदान मारा व	१-२
२ कल्याण	—गिरि धा र्थ मिय मारा	३-८
३ एक मारा मारा	—श्री सुश्रमापी मारा	९-१३
४ हारा मारा परिवार		१४-१९
५ मारा ?	—मन्मथुनि म मारा	२०
६ मारा मारा मारा— मारा मारा	—मारा श्री विद्या मारी	२१-
७ मारा मारा मारा मारा	—मारा मारा मारा	२२-२३
८ मारा मारा मारा मारा ?	—मारा मारा मारा	२४-२५
९ मारा मारा मारा मारा मारा ?	—मारा मारा मारा मारा	२६-२७

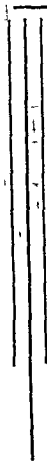
१०	कायोत्सर्ग और सामायिक	—श्री चन्दनमल नागौरी	३३-३६
११	एक चिन्तन	—श्री गणेशलाल महता	३७-३९
१२	दक्षिण भारत के जैन आचार्य	—आचार्य श्री तुलमी	४०-४१
१३	समन्वय का अद्भुत मार्ग अनेकान्त	—श्री अग्ररचन्द नाहटा	४०-४४
१४	अन्धकार पर प्रकाश की विजय वेला	—साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी	४५-४६
१५	धर्म और युवावगं	—मुनि श्री उदयमागरजी	४७-४८
१६	जैन समाज की अनेकता— कारण और निवारण	—मुनि श्री मिश्रीतालजी	४९-५०
१७	प्रेरक कहानी— जवाहरात के दो डिब्बे	—उपाध्याय श्री अमरमुनिजी (‘श्री अमर भारती’ मे मकनिन)	५३-५७
१८	लगडा विज्ञान-अन्धा धर्म	—श्री ईश्वरलाल जैन ‘न्यायतीर्थ’	५८-६२

### मुक्तक एवं अमृतवचन :

१	दो मुक्तक	—विमल भसाली	२
२.	महावीरवाणी	—भगवान महावीर	१३
३	मानव जीवन का अमृत— आत्म-विश्वास	—मुनि श्री राकेश कुमारजी	२३
४	हरकत	—उपाध्याय अमरमुनि	२७
५	आनन्द, आनन्द और आनन्द	—मुनि श्री राकेश कुमारजी	३६
६	महान् शशु आलस्य	—मुनि श्री राकेश कुमारजी	३९
७.	जौहरियो से	—उपाध्याय अमरमुनि	४१
८	कविता	—उपाध्याय अमरमुनि	४६
९	जीवन पथ	—उपाध्याय अमरमुनि	४८
१०	कल नही, आज	—मुनि श्री राकेश कुमारजी	५२



शुभकामिनी  
७ संदेश









राष्ट्रपति सचिवालय  
राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली-४



पत्रावली नं. ८-जी/७१  
२३ सितम्बर १९७१

प्रिय महोदय

राष्ट्रपतिजी के नाम दिनांक २० सितम्बर १९७१  
का आपका पत्र प्राप्त हुआ।

शुभकामनाओं सहित

भवनीय  
(खेमराज गुप्त)  
राष्ट्रपति के अपर निजी सचिव



उपराष्ट्रपति के सचिव  
नई देहली

दिनांक २४ सितम्बर, १९७१

प्रिय महोदय,

आपका पत्र दिनांक २० सितम्बर, १९७१ का उप-  
राष्ट्रपतिजी के नाम से प्राप्त हुआ, धन्यवाद ।

उप-राष्ट्रपतिजी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि  
आप अपनी वार्षिक स्मारिका "सम्बोधिका" का द्वितीय  
पुष्प स्वर्गीय भुनि श्री कातिसागरजी की पुण्य तिथि पर  
प्रकाशित करने जा रहे हैं । उप-राष्ट्रपतिजी स्मारिका  
"सम्बोधिका" की सफलता के लिये अपनी हार्दिक शुभ  
कामनाये भेजते हैं ।

आपका  
(वि० फड़के)

राजस्थान



सरकार

मुख्य मंत्री राजस्थान  
जयपुर



२४ नवम्बर १९७१

यह बड हफ का विषय है कि श्री जन मित्र मण्डल कुंदी  
गरा के भरजी का रास्ता जयपुर अपनी वार्षिक स्मारिका  
सम्बोधिका' का द्वितीय पुष्प स्वर्गीय १००८ मुनि श्री  
वात्सिागरजी महाराज साहब की प्रथम पुण्य तिथि पर  
प्रकाशित कर रहा है। धाशा है कि उक्त स्मारिका मे विभिन्न  
समयानुरूप विषयों का समावेश करत हुए जन दशन, साहित्य  
आदि से संबंधित जानकारी का दिग्शन हो सकेगा।

मैं स्मारिका की सफलता हेतु अपनी शुभ कामनाएं  
भेजता हूँ।

(बरकतुल्ला खां)  
मुख्य मंत्री राजस्थान

मुनि श्री महेन्द्रकुमारजी  
'प्रथम'

दिल्ली ।

दिल्ली

२६ नवम्बर ७१

संसार जिस गति से वैज्ञानिकता की ओर बढ़ता जा रहा है, सत्य का सन्धान उतना ही सुगम हो रहा है। मध्य युग में जब कि भारत में कुण्ठा छा चुकी थी, चिन्तन रुढ़ हो चुका था, अब विज्ञान व शिक्षा के प्रसार से वे मंत्र आवरण दूर हो रहे हैं। ऐसे समय में भगवान् महावीर के सन्देश का व्यापक प्रसार अत्यन्त आवश्यक हो गया है। चिन्तन के विस्तार के साथ भगवान् महावीर के सन्देश का तादात्म्य है। उस सन्देश को जितनी सुगमता से बौद्धिक व्यक्ति ग्रहण कर सकते हैं, उतने अन्य नहीं। यह कार्य युवकों को अपने पर लेना चाहिए मुझे प्रसन्नता है कि 'सम्बोधिका' के माध्यम से जयपुर के नवयुवक अपने इस दायित्व का निर्वहन करने में प्रयत्नशील हैं। सत् श्रद्धा, गहरी निष्ठा तथा अनवद्य प्रयत्न सदैव ही निखार लाते हैं।

—मुनि महेन्द्रकुमार 'प्रथम'

आचार्य श्री तुलसी  
दास (राजस्थान)

साइजू  
२५ मिनम्बर १९७१

हर युग के कुछ प्रश्न होते हैं। वे वर्तमान पीढ़ी से उसका समाधान चाहते हैं। वह या तो अतीत के गहरे में उलभी होती है या भविष्य के अनात में। इसलिए वह उनका समुचित उत्तर नहीं दे पाती। समस्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है।

आज की पीढ़ी जागरूक है यह प्रतिमासित हो रहा है। धर्म की अपेक्षा सम्प्रदाय मुख्य हो गए। युवक मानस में धर्म का विमुखता और समाज-विघटन का मुख्य कारण यही प्रतीत हो रहा है।

विचार और आचार-व्यवहार में सामंजस्य तभी स्थापित हो सकता है जब धर्म की अंतरात्मा का स्पर्श हो। आत्म-जागरण के बिना यह कैसे संभव हो सकता है ?

मैं धर्म को परम सत्य मानता हूँ। न केवल मानता हूँ, अनुभव भी करता हूँ। आत्मा की गहराई में गए बिना धर्म हमारे लिए परम सत्य नहीं हो सकता।

इस सम्बोधिका प्रसार आपकी सम्बोधिका का वाय होना चाहिए।

—आचार्य तुलसी

श्री यशपाल जैन  
नई दिल्ली

बनौट मक़म नई दिल्ली  
१०-२-७१

प्रिय भाई,

सप्रेम नमस्कार !

आपका ७ सितम्बर का पत्र मिला। यह जानकर हर्ष हुआ कि आप "सम्बोविका" का द्वितीय पुष्प प्रकाशित कर रहे हैं। उसकी सफलता के लिये मेरी अनेकानेक शुभ कामनाएं लीजिये। मुझे पूरा विश्वास है कि आप उसमें ऐसी सामग्री देंगे, जो समाज को शुद्ध एवं प्रबुद्ध करने में सहायक हो। आज देग के सामने दो प्रमुख समस्याएं हैं देशवामी नेक बनें और एक बनें। उनके लिए विचारों की क्रांति आवश्यक है। आप ऐसी रचनाएं लीजिये, जिन्हें हमारी जड़ता स्वार्थपरता तथा पदलोलुपता दूर हो।

विशेष कृपा।

भवदीय -  
(यशपाल जैन)

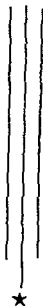
श्री विशाल विजय जी  
महाराज साहब  
बम्बई

एक अच्छे अवसर पर इतनी सद्भावना से हमें याद किया यह आनन्द की बात है।

स्मारिका का सम्बोधन प्राणवान बने।

यही शुभेच्छा !

—विशाल विजय



यह आवश्यक नहीं कि सम्पादक मण्डल लेखक के विचारों से पूर्णतः सहमत हो ।







यह आवश्यक नहीं कि 'सम्पादक मण्डल' लेखक के विचारों से पूर्णतः सहमत हो ।



# सम्पादकीय



★ विजय लोढा

अपनी कमी या त्रुटि को स्वीकार करना मात्र से वस्तुतः हम अपने कठिनार्थों की लम्बा परिधि के घराब से बच सकते हैं किन्तु उस कमी को सुधार कर हम अपने जीवन में निवारण भी ला सकते हैं। हमारा धर्म हमारे नियम केवल मात्र श्रद्धा का विषय हो बौद्धिक एवं युवा बग तथा यथार्थिक आज इस तथ्य का स्वीकार करने की स्थिति में नहीं है। आज का युग कहने का नही प्रत्यक्ष में कुछ कर निगान का युग है।

एक समय था जब किसी सन्नेह की अभिव्यक्ति के सत्य या असत्य की पुष्टि के बिना ही सभी बातें स्वीकार करली जाती थीं। पुत्र अपने पिता के शिष्य अपने गुरु के श्रावक साधु के और सामान्य जन अपने नेता के किसी कथन पर आपत्ति नहीं उठा सकते थे क्योंकि तब बुजुर्गों का अनुभव ही अग्रगण्य माना जाता था। आज भी कुछ लोग इस प्रकार का आग्रह करते हैं कि अमुक शास्त्र अथवा धर्म ग्रन्थ में यह लिखा है अतएव यही सही है। लेकिन विज्ञान ने यह सिद्ध कर दिखाया है कि यह आवश्यक नहीं कि सभी प्राचीन ग्रन्थों में प्रतिपादित वस्तु सत्य ही हो। विश्व के महानतम देश अमेरिका द्वारा अपनी अपालोयान योजना के अन्तर्गत प्राप्त सफलताप्राप्त न तो मानने समस्त विश्व के विभिन्न धर्मग्रन्थों में ग्यारहवीं ही मजा

दी है। विभिन्न प्राचीन धर्मग्रन्थों द्वारा चन्द्रलोक के बारे में दिया गया दृष्टान्त व्याख्याएँ तथा धर्मोपदेश आज मानव की इस अभूतपूर्व विजय के उपरान्त गलत साबित होने लगे हैं।

यथापि प्राचीन ग्रन्थ और कोषों में शास्त्र और ग्रन्थ प्रायः एकाधिक हैं फिर भी प्रमुख आधुनिक विचारकों एवं बुद्धिजीवियों की मान्यता है कि— शास्त्र आत्म बुद्धि के प्रतिपादक आध्यात्मिक उपदेश तथा ग्रन्थ इधर-उधर के विचारों का युगानुक्रम संकेत मात्र हैं अतएव न तो शास्त्र भूटे हो सकते हैं और न ही ग्रन्थ भगवत्वाणी ही। उनके अनुसार अतीत का आध्यात्मिक दृष्टिकोण और आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण परस्पर पूरक हैं विरोधी नहीं।

वैज्ञानिक शोध कार्यों पर आधारित सफलताएँ और नवीनतम रहस्योद्घाटन विज्ञान के क्षितिज पर वस्तु चरण हैं प्राचीन दृष्टिकोण का अनादर नहीं। वर्तमान वैज्ञानिक युग में केवल वही धर्म और सिद्धान्त जीवित रह सकते हैं जो मानव जीवन के नियम व्यावहारिक एवं उपयोगी सिद्ध हो सकें। धर्म आज आवश्यकता है रुढ़वादिता को छोड़ कर युगानुक्रम सुधार की।



# स्मारिका - "सम्बोधिका" द्वितीय गुण सन् १९७१

— सम्पादक-मण्डल —



बायें से दायें—सर्व मी सुभाष गोेलदा-सरस्व श्री प्रवीण लोडा-विलरुण सम्पादक मी पदम बहेर-सरस्व

श्री विजय सोदा-प्रधान सम्पादक श्री वनक मीमान-प्रकाश सम्पादक  
श्री विमल मधाली-सरस्व तथा श्री प्रवीण जूनीवाल-विशेषण सम्पादक





# अपनी बात

त्रिदश वर्षों से जयपुर के जन समाज में एक ऐसी समाज सेवा संस्था का जो कि रचना गच्छ पथ इत्यादि भेदभाव के समाज सेवा का वस्तुव्य पूरा कर सके प्रायः अभाव दर्शितगाचर था। फलस्वरूप विगत त्रिमास २५ अगस्त १९६६ को श्री जन मित्र मण्डल जयपुर का प्रादुर्भाव हुआ। उत्साह एव सद्भावो नवयुवकों की इस संस्था ने प्रारम्भ में एक सेवा दल के रूप में समाज के प्रत्येक आयोजन में भाग लेकर काफी ख्याति अर्जित की।

यह वय मण्डल की शशवास्था का तृतीय वय है। इसी अल्प अवधि में ही चतुर्मुखी लोकाप्रियता स्वयं ही अपने आप में मण्डल के सेवाभावी वस्तुव्यनिष्ठ दक्ष एवम् चतनशील युवा काय वर्तमानों की त्रियाशीलता का प्रमाण है। अपनी वस्तुव्य परायणता, काय करने की दक्षता एव साठनात्मक स्वरूप व कारण मण्डल ने समाज में अपना प्रतिभाशाली स्थान बना लिया है।

विगत वय में मण्डल की विभिन्न गतिविधियाँ एव प्रवृत्तियों की एक भलक यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में हम समाज की और अधिक सेवा के लिए आप सभी का और अधिक आतिथ्य सहयोग प्राप्त हो सकेगा।

मण्डल की निवर्तमान कायकारिणी समिति का विगत दिनांक २६-६-७१ को गठन किया गया था जिसमें श्री सुशीलकुमार बुरड अध्यक्ष श्री बनक श्रीमाल उपाध्यक्ष श्री उम्मदधर बरानी सचिव श्री विजय कुमार जोड़ा उपसचिव श्री प्रकाशचन्द वाठिया कोषाध्यक्ष श्री सुरेश बरानी सगठन मंत्री तथा श्री अजीत लोण श्री पदम पुगनिया श्री अजीत जूनीवाल श्री बलवत छजलानी श्री विजय वाठिया और श्री अशोक सिंधी का काय कारिणी का सदस्य निर्वाचित किया गया।

मण्डल की काय समिति के गठन को ४८ घण्टे का समय भी व्यतीत नहीं हुआ था कि हमें एक गहन आघात सहन करना पड़ा। हमारे प्रेरणा स्रोत देश के प्रमुख पुरातत्ववेत्ता जन संस्कृति साहित्य एव इतिहास के महान शोधन वर्ता भोजस्वी प्रवक्ता विद्वद्वर मुनि श्री कातिसागरजी महाराज साहब को प्रकृति के क्रूर हाथों ने हमसे सदव-सदव के लिये विनष्ट कर दिया। ऐसे नाजुक समय में मानो यह भी मात्र एक विडम्बना ही थी कि जयपुर श्री सघ के प्रमुख कायवर्तमानों सहित लगभग ६०० आवक आविष्कारों के दो यात्री सघ क्रमशः जसलमेर तथा बच्च के तीव स्थानों की यात्रा हेतु यात्रा प्रवास में थे। ऐसी परिस्थिति में मण्डल के कायवर्तमानों ने मुनिश्री की प्रतिम



क्रियाओं इत्यादि से सम्बन्धित सभी प्रबन्ध सुचारुतापूर्वक सम्पन्न कराने में अपना परिपूर्ण सहयोग प्रदान किया। दिनांक ३०-९-७१ को मण्डल की एक असाधारण सभा में शोक प्रस्ताव पारित कर तथा अगले दिन ही सार्वजनिक शोक सभा में मण्डल ने स्वर्गीय मुनिश्री को भाव भीनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर अपने आघात को घटाने का प्रयत्न किया।

### “सम्बोधिका” प्रकाशन :

मण्डल की वार्षिक स्मारिका—“सम्बोधिका” के प्रथम पुष्प का प्रकाशन गत वर्ष महावीर निर्वाण दिवस को सम्पन्न हुआ। स्मारिका की प्रथम प्रति स्मारिका के प्रधान सम्पादक श्री कनक श्रीमाल ने पूज्य आचार्य श्री धर्मेन्द्रसूरि जी महाराज साहब को भेंट की। तदुपरान्त जयपुर जैन श्वेताम्बर समाज के प्रत्येक परिवार तथा अन्य प्रमुख जन तथा भारत भर में अन्य नगरों की प्रमुख सस्थाओं, पुस्तकालयों, प्रमुख विद्वानों, आचार्य भगवन्तो तथा साधु तथा साध्वी वर्ग को “सम्बोधिका” उपलब्ध कराई गई। मुझे यह बताते हुए अत्यन्त प्रसन्नता है कि जिस किसी ने भी हमारी स्मारिका—“सम्बोधिका” के प्रथम पुष्प का अवलोकन किया, उसने ही इसे मुक्तकण्ठ से सराहा है। उसमें प्रकाशित जैन सस्कृति से सम्बन्धित उच्चकोटि की सामग्री के साथ ही प्रकाशित अलभ्य चित्रों को भी विशेषतः पसन्द किया गया। स्मारिका—“सम्बोधिका” का द्वितीय पुष्प आपके कर कमलों में है। परम पूज्य गुरुवर स्व० मुनि श्री कातिसागर जी महाराज साहब को समर्पित यह अक्षर भी आशा है आपको पहले से भी अधिक पसन्द आयेगा।

श्रीमेर, खोशाम, वरखेड़ा तथा मालपुरा का वार्षिक मेला एवं पोषवती दसमी की रथ-यात्रा—

अपनी स्थापना के वर्ष से ही मण्डल निरन्तर

प्रतिवर्ष जयपुर नगर के ममीप ही अत्यन्त रमणीय स्थानों पर अलग-अलग तिथियों को वार्षिक मेले के समय आयोजित पूजन तथा स्वधर्मो वात्सल्य के अवसरों पर वस अथवा टैम्पो द्वारा याता-यात तथा स्वधर्मो वात्सल्य में भोजन व्यवस्थाओं में सर्वाधिक कार्य भार मनाल कर अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं कर्तव्य परायणता का जो परिचय दिया है। उससे जयपुर जैन सकल श्रीसघ परिचित है।

तेईसवें तीर्थंकर भगवान श्री पार्वनाथ के जन्म दिवस पोष वती दसमी को तथा उसमें एक दिन पूर्व विशाल रथ-यात्रा की व्यवस्था में भी प्रति वर्ष मण्डल के स्वयं सेवक सक्रिय रहे हैं।

### भन्ध दिल्ली-यात्रा—

विगत दिनांक २४, २५, व २६ मार्च १९७१ को भारत की राजधानी दिल्ली में जगम युग प्रधान मट्टारक, मणिधारी पूज्य दादा साहब १००८ श्री जिनचन्द्र सूरि जी के अष्टम शताब्दी के अवसर पर आयोजित अत्यन्त विशाल समारोह में मण्डल के तत्वावधान में लगभग ४०० यात्रियों का श्रीसघ सम्मिलित हुआ। इस भन्ध-यात्रा आयोजन में स्पेशल बसों द्वारा मात्र २५ रु० प्रति यात्री टिकट में ही दिल्ली ले जाने-लाने के अतिरिक्त श्री हस्तिनापुर तीर्थ की यात्रा, रास्ते में नास्ते तथा हस्तिनापुर में भोजन की अत्युत्तम व्यवस्था भी उपलब्ध की गई। श्री हस्तिनापुरजी में भोजन व्यवस्था हेतु जयपुर के श्री हस्तीचन्द जी सा० महता श्री हीराचन्दजी ढड्डा व श्री रतनचन्दजी सा० सिंधी आदि का वित्तीय तथा श्री हस्तिनापुर पेढी के प्रबन्धकों का क्रियात्मक सहयोग हमें प्राप्त हुआ, जिसके लिये मण्डल उनके प्रति हृदय से आभारी है।

उपर्युक्त व्यवस्था के अतिरिक्त शताब्दी समारोह समिति, दिल्ली के आन्धान पर मण्डल

के लगभग २५ स्वयं भवकों ने दिल्ली स्थित छोटी दादाबागी मठ में हुए लगभग १२०० यात्रियों के नियमनास्त विवरण यानामात यवस्था तथा उनके सामान की सुरक्षा हेतु सुरमा ग्रह (लानर) की व्यवस्था व अलावा मुख्य ममारोह स्थल मरिण धारी नगर म भोजन की परीक्षणारी छादि म अपना सक्रिय सहयोग प्रदान कर मण्डल को गौरवाचित किया । दिल्ली यात्रा स सम्बन्धित उत्तम यवस्था के लिये हमारा दिल्ली यात्रा प्रवच उप समिति के सकोजव हमारे माननीय अध्यक्ष श्री सुशीलकुमार बुरड तथा सह सपाजको म मर दूसरे साथी एव तत्कालीन सचिव श्री उम्माचण बराठी के अनिरिक्त हमारे अन्य सभी सहयोगी कायकर्ता तथा यात्री गण भी प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने अपने पूण सहयोग द्वारा इस आयोजन को आशातीत सफलता प्रदान की ।

### सघ भक्ति —

शताब्दी समारोह म भाग नकर दिल्ली स वापस लौटन हुए विभिन्न नगरो के लगभग ग्यारह यात्री सघा के स्वागत सवा एव अभिनन्दन का सौभाग्य भी मण्डल को प्राप्त हुआ । बडौला स पघारे एक यात्री-सघ क सचपति श्री शान्तिलालजी सा पारल ने १०१) रुपय तथा राजीम (म प्र) के यात्री सघ ने ५१) रुपय भेंट स्वरूप मण्डल को प्रदान किये मण्डल की ओर स उन्हें धन्यवाद प्रेषित किया गया ।

### सविधान तथा निर्वाचन —

गत २५ मई ७१ को मण्डल की साधारण सभा म मण्डल द्वारा अपनी उक्त विचार गोष्ठी से पूव पास किये गय मण्डल के सविधान को तुरन्त लागू किये जान के लिये मण्डल की तत्कालीन कायकारिणी समिति न साधारण सभा व समस्त अपना स्वीका कर सविधान को लागू किय जाने की घोषणा के

साथ ही उसी सभा म नई काय-समिति के चुनाव का अनुरोध किया । फनस्वरूप श्री रतनवदजा सा कोठारी (निवाचन अधिकारी) की देख-रेख म मण्डल कायकारिणी के ग्यारह सदस्यों का विधानानुसार चयन किया गया । काय-कारिणा न अपने पदाधिकारिया का चयन भी उसी वक्त सम्पन्न कर लिया । कुछ दिना बाद नव निर्वाचित काय-समिति की प्रथम बैठक म श्री अजीत जूतीवाल तथा श्री सुभाष गोखला की कायकारिणी का समस्त मनोनीत किया गया ।

### श्री महावीर जयंती समारोह —

चौदसवें तीथकर भगवान महावीर स्वामी की पावन जन्म जयंती जयपुर के दिगम्बर एव श्वेताम्बर दोना सम्प्रदाय मिलकर सामूहिक रूप म श्रवण्ट हर्षोल्लास पूवक मनाते हैं । इम अवसर पर आयोजित विशाल जुलूस में इस वष प्रथम बार मण्डल ने अपनी ओर से जुलूस के साथ ठेले म तथा मुख्य समारोह सभा स्थल स्थानीय श्री राम-लीला भदान म वष के शीतल जन-सेवा का सराहनीय काय सम्पन्न किया ।

### उद्यापन समारोह

इम वष आयान् माम म पूव गुरुदेव श्री काति सागरजी म सा व मुनि श्री दशनसागरजी म सा क सानिध्य में जयपुर स्टेशन के निकट स्थित मन्िरजी में श्री बल्लभचन्दजी मसानो की धमपत्नी श्रामती माणुबदेवी व श्री बीशस्मानक नवपदाति तप प्रति के उपनक्ष म उद्यापन सम्पन्न हुआ । श्री मसाला जी क धामत्रण पर उक्त समारोह पर आयोजित भटठाई महोत्सव जुलूस व समस्त श्रीसय के स्वधर्मी चातुल्य आदि की व्यवस्था म मण्डल ने अपना सक्रिय सहयोग लिया ।

## सगीत विभाग :—

इस वर्ष पर्वाधिराज पर्युषण से कुछ दिन पूर्व ही हमारे “सगीत विभाग” की स्थापना की गई है। मण्डल के पास इस विभाग की नियमित कक्षा चलाने हेतु अपना कोई निजी भवन नहीं होने के कारण प्रारम्भ में ही हमें काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ा। अन्त में काफी प्रयत्नों के बाद केवल पर्युषण तक के लिये हमें श्री श्वेताम्बर जैन सैकेंड्री स्कूल में एक कमरा सगीत कक्षा के उपयोग हेतु प्राप्त हो सका, उक्त सहयोग के लिये स्कूल के प्रबन्ध समिति के सैकेंट्री महोदय तथा स्कूल के प्रधानाध्यापक महोदय के हम हृदय से आभारी हैं।

प्रारम्भ काल में ही इस विभाग की “सगीत मण्डली” को श्री विनयचन्दजी खवाड, श्री मिश्रीमलजी खिवसरा, श्रीकालूरामजी माणकचन्दजी गोलछा, श्री चम्पालालजी कोचर, श्रीलालचन्दजी वैराठी, श्री बुधसिंहजी हीराचन्दजी वैद, श्री नेमीचन्दजी भसाली, श्री डूगरमलजी श्रीमाल तथा श्री प्रतापचन्दजी लूनावत इत्यादि ने अपने यहां मास खमण, अठाई आदि तपस्या आदि के उपलक्ष में आयोजित जागरणों में आमंत्रित किया, मण्डली ने अपने प्रारम्भिक मास काल में ही उक्त आयोजनों में प्रदर्शित अपने कार्यक्रमों द्वारा सभी का मन मोह लिया। हमारे सगीत विभाग को हारमोनियम श्री पदमचन्दजी गोलछा की ओर से, तबला श्रीराजूरूपजी टाक की ओर से तथा ढोलक श्री कालूरामजी माणकचन्दजी गोलछा की ओर से प्राप्त हुये हैं, अतः मैं सगीत विभाग एवं मण्डल की ओर से सहयोगी महानुभावों का हार्दिक आभार प्रगट करता हूँ।

### तपस्वियों की भव्य शोभा-यात्राएँ :

परम पूज्य गुरुदेव श्री कातिसागरजी म सा एव शतावधानी विदुषी श्रद्धेय साध्वीजी श्री निर्मला

श्री जी. म. सा के प्रेरणास्पद प्रवचनों के प्रभाव से इस वर्ष तपश्चर्याओं की तो मानो झडी सी लग गई थी।

श्री कातिसागरजी म सा की निश्चामे श्री शिवजीराम भवन में सम्पन्न तपश्चर्याओं के सामूहिक आयोजन जिसमें ७ मास क्षमण, २ सत्रह उपवास, २ ग्यारह उपवास, २ नौ उपवास, २१ आठ उपवास, ७ पाच उपवास तथा २५१ से भी अधिक तीन उपवास करने वाले तपस्वियों ने सामूहिक रूप से भाग लिया। इस अभूतपूर्व आयोजन के अन्तर्गत दि० ६-८-७१ को जयपुर में प्रथम वार एक सामूहिक भव्य वर घोड़े (शोभा-यात्रा) का भी आयोजन किया गया था। शोभा यात्रा के अति विशाल इस जलूस में इन्द्र ध्वजा, अनेकों सजे हुए हाथी, ऊट, घोड़े, रथ, पालकी, भक्तिया, भव्य काष्ठ निर्मित रथ, कई वैण्ड सैकड़ों कारों एवं साधु एवं साध्वी वर्ग के अतिरिक्त हजारों की सख्या में श्रावक तथा श्राविकाएँ, स्कूल के विद्यार्थी आदि सम्मिलित थे। पचकलान के एक दिन पूर्व दिगम्बर जैन आचार्य रत्न श्रीदेशभूषण जी महाराज सा ने भी मुख्य समारोह स्थल पर पधार कर तपस्वियों को आशीर्वचन एवं प्रेरणादायी प्रवचन दिया।

इस भव्यतम ऐतिहासिक जुलूम को व्यवस्थित करने तथा सम्बन्धित अन्य प्रबन्धों का कार्यभार आयोजकों द्वारा मण्डल को सौंपा गया। और मुझे यह कहते हुये अपार हर्ष है कि हमारे कर्तव्य परायण साथियों ने उक्त आयोजन को सफल बनाने में जिस निष्ठा एवं क्रियाशीलता पूर्वक अपना योगदान कर मण्डल को गौरवान्वित किया है, वह अनुकरणीय है। इस सफलता के लिये अन्य साथियों के अतिरिक्त विशेष रूप से श्री उम्मेद वैराठी, श्री सुशील बुरड एवम् समाज के कुछ अन्य प्रमुख कार्यकर्ता भी धन्यवाद के पात्र हैं।

तपस्वियों का दूसरा सामूहिक आयोजन स्थानीय श्री वार्ता के रास्ते स्थित श्री आत्मानन्द जन मभा भवन में साध्वीजी श्रीनिमला श्रीजी की निष्ठा में सम्पन्न हुआ। इसमें तीन मासभरण के तपस्वियों एवं अन्य तपस्विन्या ने सामूहिक रूप से भाग लिया।

शोभा-यात्रा (वर घोडा) से पूर्व जयपुर नरेश श्री भवानीसिंहजी ने समारोह स्थल पर पधार कर तपस्विन्या का अभिनन्दन किया। इस सामूहिक वरघोडा अनुस में श्री आयोजक के भागनए पर मण्डन के स्वयं सवका ने व्यवस्था आदि कार्यों में भाग लिया।

पशु पशु पशु

इस वष पवारिगज पशु पशु के पुष्य भयमर पर जन्म छाटा ही तिन प्रात एव मध्याह्न में हमारे कायकर्ता श्री खरतर गच्छद सप के भागनए पर व्यवस्था सम्बन्धित कार्यों में व्यस्त रहने से रात्रि में हमारे 'गगन विभाग' ने अपने प्रभु भक्ति स्वरूप धरत्यन्त रावक भजन गायन नृत्य व एकाकी आदि के कायक्रम पाठ तिन प्रभु नगर के मध्य स्थित पाचो मन्दिर में एक एक तिन श्रीशिवजीराम भवन व श्री आत्मानन्द भवन में मात्र २० तिन से भी कम की सपारी द्वारा ही प्रस्तुत कर धरत्यन्त लोकप्रियता प्राप्त की। गीत मण्डली के सन्स्था द्वारा मधुर सहरी में प्रस्तुत भजन गायन छोरी-छोरी मालिनाओं द्वारा प्रस्तुत भावपूर्ण धारणक नृत्य तथा मिश्र-निम्न सन्स्था द्वारा जन सहृदयि में प्रेरित रावक एकाकी इत्यादि की धाराओं एवं दशकों ने काफी प्रशंसा की। इस विभाग की सफलता के निम्न इस विभाग के सयोजक श्री माणकचन्द गानछा तथा सह सयोजक श्री पलहगिह चरदिया विन्यत धन्यवाद के पात्र हैं।

एक दिवसीय तीर्थ यात्रा —

पशु पशु पवारोधन के उपरान्त जयपुर के समीप ही स्थित विभिन्न तीर्थ स्थानों की यात्रा विगन दो वष पूर्व ही श्री छुट्टनलाल जी बराठी द्वारा प्रारम्भ की गयी थी। इन यात्रा के धरन्तगत यात्रियाओं मुख्यत माहनवाडी दादाबाडी पुराना पाट भानना पाटक चाकगू ग्राम बरखेडा ग्राम जयपुर स्थेशन ग्रामर तथा सागानेर स्थिन मन्दिरा आदि के दर्शनों का भवसर प्राप्त होता है। इस वष लगभग १०० से भी अधिक यात्रियों ने इस का लाभ लिया। आयोजकों के धारण पर बस एवं अन्य व्यवस्था का कार्य गन वष की माति ही इस वर्ष भी मण्डल के स्वयं सेवकों ने सफलता पूर्वक सम्पन्न किया।

मालपुरा छरी पालता सघ —

हाल ही में पुष्य श्री वाति सागरजा में सा की प्रेरणा से श्री सीतलदासजी धनरागिहजा हरकचन्दजी प्रेमचन्दजी एवं मुनेकुमारजी रावयनि द्वारा जयपुर से मालपुरा का छरी पालता चतुर्विध पशुन यात्री सघ निरामा गया। मण्डल उक्त आयोजन में भी धर्यनी सेधाएँ धरित करने में पीछे नहीं रहा। यात्री सघ में शामिल सभी यात्रियों के समस्त सामान की सुरक्षा सपय समय पर उन्हें यह सामान उपलब्ध कराने तथा फिर पुन वापस सन्धानन का धरित जिम्मेदारी पूर्ण काय मण्डल को सौंपा गया था। इस जिम्मेदारी को जिस दक्षता पूर्वक हमारे कुशल कायकत्तामा ने निभाया उगका सपपनि तथा सभी यात्रियों ने सराहना की है। इतना ही नहीं भोजन व नास्ना उपलब्ध कराने तथा धन्य कार्यों में सहयोग के साथ ही हमारे सगीत विभाग ने जगह-जगह धरने भक्तिपूर्ण धारणक कायक्रम प्रस्तुत कर मानो सभी का मन मोह लिया था। मालपुरा

पहुँचने पर सघपति जी को मान-पत्र एव पुष्प माला अर्पित कर उनका अभिनन्दन किया गया। सघपति जी ने मण्डल की सेवाओं से प्रसन्न होकर ३०१) रुपये मण्डल को सहायतार्थ प्रदान करने की घोषणा की। इसके अतिरिक्त टोडारायसिंह के श्री पद्मानालजी कोठारी ने २०१) रुपये तथा श्री हेमचन्द्रजी पारख (दिल्ली वाले), श्री लालचन्द्रजी वैराठी, श्री रतनचन्द्रजी मिथी तथा श्री नेमीचन्द्रजी भसाली, प्रत्येक सज्जन की ओर से भी १०१) रुपये तथा श्री दौलतचन्द्रजी महता द्वारा ५१) रु० भी मण्डल को सहायतार्थ प्रदान करने की घोषणा की गई। सभी सहयोगियों-को हमारे अध्यक्ष महोदय ने आभार प्रदर्शित किया। उक्त समारोह में मण्डल की सफलता के लिये विशेषतः श्री सुशील बुरड, श्री माणक गोलछा, श्री अनिल जैन व अन्य सहयोगी कार्यकर्ता भी धन्यवाद के पात्र हैं।

### भावी गतिविधियाँ —

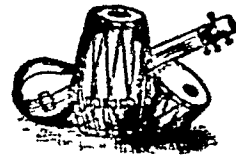
मण्डल द्वारा अपनी भावी गतिविधियों में एक पुस्तकालय एव वाचनालय तथा एक निःशुल्क धर्मार्थ औपघालय की स्थापना का निर्णय लिया जा चुका है। पुस्तकालय योजना के अन्तर्गत समाज के निर्धन वर्ग के विद्यार्थियों को सम्पूर्ण सत्र के लिये पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध कराने का भी प्रावधान है। सभी गतिविधियों को कार्य-रूप प्रदान करने में हमारे समक्ष समस्या, मुरयत

उपयुक्त भवन का अभाव है। मुझे यह बताते हुये अत्यन्त लेद अनुभव हो रहा है कि मण्डल ने नामाजिक कार्यों के प्रमुख केन्द्र श्री शिवजीराम भवन में, भवन के बाह्य और म्जिन वर्षों में ग्वाली पढी दूकान को किराये पर उपलब्ध कराने का श्री ग्वे० जैन सरतरगच्छ मघ में, म्थानीय तेरापुयी भवन के बाहर ग्वाली दूकान किराये पर तथा श्री पूज्य जी महाराज के बड़े उपामरे में उपयुक्त स्थान इम हेतु प्राप्त करने की चेष्टा की किन्तु मम्ब्रन्धित व्यक्तियों में इम सम्बन्ध में सहयोग नहीं मिल सका है, आशा है निकट भविष्य में शीघ्र ही किसी उपयुक्त स्थान की व्यवस्था होने पर हम अपनी वर्तमान प्रवृत्तियों का और अधिक प्रचार तथा भावी प्रवृत्तियों को मूर्तरूप प्रदान करने में सफल हो सकेंगे। समाज के प्रत्येक वर्ग में पूर्ण सहयोग की अपेक्षा के साथ ही मैं अपने सभी सहयोगी वन्दुओं का पुनः हार्दिक आभार एव धन्यवाद करता हूँ।

अधिकतम सहयोग की आशा में।

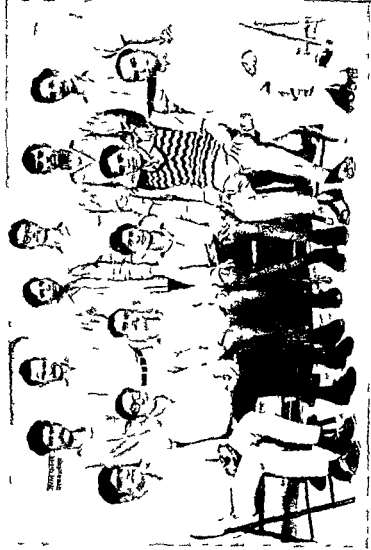
भवदीय

विजयकुमार लोढा-सचिव,  
श्री जैन मित्र मण्डल, जयपुर।



आज हमारे राष्ट्र पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। शत्रु ने हम पर पुनः आक्रमण किया है। हमारी आजादी फिर खतरे में है। ऐसी परिस्थितियों में हम सभी का कर्तव्य है—अपनी पूरी ताकत के साथ अपने राष्ट्र व स्वतन्त्रता की रक्षा करना। हम सभी तैयार हैं, और दुश्मन को ऐसा सबक सिखाने के लिये कटिबद्ध हैं कि वह भविष्य में फिर कभी हमारी पावन भूमि की ओर आंख उठाने की भी हिम्मत न कर सके।

❁ श्री जैन मित्र मण्डल जयपुर ❁



का र्क का रि णी स मि लि

१९५७-५८

बायें से दायें बड़े हुए—सबश्री प्रकाशचन्द वाटिया—जोपाप्यक्ष श्री विजयपुरमार गोडा—सचिव श्री मुशीतकुमार बुर—ग्रध्यक्ष  
 श्री बनक श्रीमाल—उपाध्यक्ष श्री विमलचन्द मसानी उपसचिव तथा श्री माणकचन्द गोपछा सगटन मंत्री  
 बायें से दायें छोटे हुए—सबश्री मुभापचन्द गोलछा श्री प्रजोतकुमार शोला श्री विजयचन्द वाटिया श्री प्रकाशचन्द महरा,  
 श्री बजीधर सठिया तथा श्री प्रजोतपुरमार झुगीवाल—कायकारिणी के सदस्य



# एक समर्पित व्यक्तित्व

★ गुलाबचन्द गोलेछा

एक जनकार, एक आस्था जिन प्रामाण्य सेवा में समर्पित एक जीवित-जन एक जनतर मायताया का एक प्रथम आजस्यो प्रवक्ता । अल्प जीवन-काल में इस महान् व्यक्तित्व ने जन माहित्य एवं मशहूरति की जा सवा की मायना की वह उस उल्लव धम के मशान् घुग घर साधक शकुरात्राय क समकक्ष क जातो है । ..”

तकिन जमी हमारो सामाजिक परम्परा रही है विशेषकर छतरगन्धीय-उम सार पान शान को हमने अत्यन्त आदर पूर्वक भाव-पौछ कर अछे मूल्य की अलमारी और ताने में प्रतिष्ठापित कर लिया है । शायद पानपत्रमी के पुण्य दिवस पर श्रद्धालुजन नामधय के अनुगार उम पर कुछ अय चलाकर वासपोष डाल दें । वस पानपूजा का हमारो कार्य पूरा हो जावगा ।”

स्व० मुनि श्री कानिगागजी महाराज साहब के युग प्रवक्तव्य व्यक्तित्व का भारगभित विवचन तथा उह मादर श्रद्धा-सुमन अर्पित करने के साथ ही युवाहृत्पो श्री गुलाबचन्दजी गोलेछा ने समाज द्वारा मुनि श्री के अप्रकाशित साहित्य मृजनों, उनके तथा कई अन्य साहित्य एवं पान-भण्डारा की अमुरक्षा एवं दुखपयोग पर करारा प्रहार किया है । प्रस्तुत है सग्वक द्वारा सत्य की यह निर्भीक अभिव्यक्ति ।

—सम्पादक

छेकवम एक मप्लाह का अन्तर रहा और उमन हमस एक अमूल्य निधि मना-मना क निष्प हीन ही । गितम्बर १९७७ में याना मय क माघ में भी शेषममर मगाकपुर घाटि म्पानी की याना के शिग अयपुर में रवाता टुषा । पुण्यभाष माकोदा हम सोप ८ गितम्बर की राति की पदुष ही य कि दूगर तिन प्रात काम अन्तुर ग घाने काने फोन ग

हमें स्पष्ट कर देने वाला समाचार मिला कि मुनि श्री कानिगागजी महाराज का निधन २८ का ही माघ ३ बज दशम हो गया । एषम जइवन् कर ि या ममाकार न । मानसिक तोर पर हमारी कोई संभारी नहीं थी इग अावमिक अथर को महा कर पाने की । उनकी अ निम शिवा म शक्तिशिल शाने का कोई उभाव नहीं था अणएष वही स मारी





विए हों किन्तु जन साधुग्रा म ज्ञवप्रथम मुनि श्री जिन विजयजी न और उनके पश्चात् मुनि श्री ने ही इस और काय किया। अब तो बहुत लोग इस क्षेत्र न घा गये हैं लेकिन जिस लयन से जोश से प्रवर्तता से तेनविता से स्वपथ का अनुभवान करने गौरवपूर्ण भाषा म उसका प्रतिपादन उन्हीने किया वह बेमिसाल रहा है।

उाकी कुछ पुस्तकें पढ़ी हैं लेख भी पडे है चापरिया पढी हैं लिप्यलिखा आलोचनाए पना हैं सन म एव ही दृष्टिकोण परिलक्षित होता है—स्वाभिमान पूर्वक अपने पक्ष का प्रतिपादन अत्यन्त सारगर्भित सहज सौष्टिकपूर्ण विवचना समग्र ज्ञान का भोजस्वी दशन। अभी कुछ समय पूर्व ही मैं उदयपुर गया था। साहित्य मृजन काल म उहीने जितना कुछ लिखा है प्रकाशित कराया है या उनके बारे म प्रकाशित हुआ है उनके काय पर लिप्यलिखा हुई है इत्यादि का एक अन्ध्या खासा सग्रह वहा मिला। उसे ल तो आया लेकिन जसी हमारी सामाजिक परम्परा रही है विशय कर तरतर गच्छीय उस सारे ज्ञान स्रोत को हमने अत्यन्त आन्तरपूर्वक भाड पौंड कर अन्धे मूल्य की अलमारी और हाले म प्रतिष्ठापित कर दिया। शायद ज्ञान पचमी के पुण्य निवस पर अज्ञातु जन सामय्य के अनुसार उस पर कुछ धय चढा कर वासमेव डान दें। बस ज्ञान-पूजा का हमारा काय पूख हो आवेगा।

उनके साथ जो ज्ञान एव साहित्य का भंडार था उसका भी यही सौभाग्य रहा। वह भी पूणत सुरक्षित हा गया। विदम्बता तो यह है कि उससे अधिक और अच्छा ज्ञान का उपयोग हम समझ म ही नहीं आता। प्रसंगवश उन्हेखनीय है कि जयपुर म उसके भलावा और भी साहित्य भंडार सय के पास इसी प्रकार सुरक्षित पडे हैं। शायद निछने बीस बपों म उनम से एक भी पुनक किमी

न लेखने का भी नहीं निकलवाए पढने की तो बात ही दूसरी है। मैं भी १०० तयाकथित सम्यक ज्ञान पूजका म हू।

रोगशय्या पर पड़े हुए भी व साहित्य का मृजन करत रहे। उस हेतु उहाने एक प्रकाशन समिति निर्मित कराई और उसका सबप्रथम प्रकाशन यति जयविमनकृत मर्कटी परजनका पालित्यपूग विवचन था। यह कृति प्रकाशित नो चुकी है प्रस म तपार पना है लेकिन हम उडातु श्रावक अगर ज्ञान पचमी के ज्ञान पूजा करें कय ? शायद यह रचना कभी मक्के सामने आ जाये।

मुनिवर के जीवन की घटनाग्रा का उल्लेख करना म अनावश्यक समझता हू। मेरे ज्ञान तो उनका एक ही पहलू आता है और वह है उनकी ज्ञान की मत्त साधना। वे न कवन शोध पर शकटरेट हा प्राप्त कर चुके थे वरन् जमन व फ्रँच भाषा म एम ए भी थे। जमे जन पुरानत्व पर उहोने शोध की वन ही शक मन को पाणुपत शाखा पर भी उहोने काय किया। आयुर्वेद व प्रति ता ऐमा महान् काय किया है कि जो अभी प्रकाश म भी नहीं आ पाया। उहोने गुजरानी भाषा म आयुर्वेद ना अनुभूत प्रयोग नाम से लगभग १४ पुरतकी क प्रकाशन की पूरी तयारी कर वा थी। उसका प्रथम अक प्रकाशित भी हा गया है। अण १३ अको का माग्य सम्भवत नियित क डूर हाथा म चला गया। उन अका को लिनी भाषा म प्रकाशित करवान की योजना भी उनकी थी उमके लिए राजस्थान के एक अपने परिचित तजानान मंत्री से भी उहाने लिखा पनी की थी। जिस लयन के साथ जगन जगन मटक कर और परतरा की छान धीन कर शोध की तीव्र प्रवृत्ति और बलाकार के भावुक हून्य से जन मस्तुति के पुनर्जीवन हेतु उहाने खोज की पगलिया एक सप्टहारों का वभव का मृजन किया वह उनक

गहरे अध्ययन एवं सर्वपरात्मक भेषा की छाप है। उदयपुर के महाराणा भगवतनिहजी के निमन्त्रण पर एकलिंग भगवान को निमित्त बना कर मेवाड के इतिहास पर जो ग्रन्थ उन्होंने तैयार किया वह प्रकाशित हो रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय म्यानि का प्रकाय रहेगा वह ग्रन्थ, यह मुनिञ्चित है। इस ग्रन्थ की भूमिका सू० काश्मीर नरेश डा० कर्णमिह जी ने लिखी है।

प्रमगवण उनके जीवन की नवमे दडी घटना का जिक्र करना आवश्यक हो जाता है। वह ही उनके उदयपुर चातुर्मास के दौरान राज्य मरका द्वारा उन पर दुर्लभ चित्र गायक करने का आरोप। मामला जिस तरह लडा गया, जिस प्रकार डमका अन्त हुआ वह उस आरोप का ग्योखलापन जाहिर करता है। लेकिन उसने उनके जीवन के बहुमूल्य समय और शक्ति का अपव्यय कर दिया। लगभग आठ वर्ष तक वे उदयपुर ही रहे मुकदमे के कारण। सनम्मान मुक्त हुए उम आरोप से। अपने ही बल पर अपने ही साधनों से उन्होंने यह मुकदमा लडा। समाज तो उनमे उस दौरान दूर चला गया। इस समय मे ही उन्होंने स्थानकवामी नमाज के लिए एक शोध प्रबन्ध लिखने का कार्य हाथ मे लिया दुर्भाग्य से वह अपूर्ण रहा। अस्पताल मे चर्चा के दौरान कई बार उन्होंने यह कहा था कि स्वस्थ होते ही सबसे पहिले मैं इस कार्य को पूरा करूंगा। उनकी यह इच्छा काल ने पूरी न होने दी। एकलिंगजी का इतिहास भी उन्होंने इस मुकदमे के समय मे ही लिखा। इस मुकदमे का पूरा फमला अभी हाल ही मे मुनि श्री मंगल सागरजी महाराज ने भिजवाया है। श्री घण ही उसकी जानकारी समाज के सामने रखने का कोई अवसर आवेगा ही।

उनके बहुमुखी ज्ञान के अनेको उदाहरण दिए जा सकते हैं। वे लखनऊ के संगीत महाविद्यालय के उपाधि प्राप्त स्नातक थे। जवाहरात उद्योग के

क्षेत्र मे भी उन्होंने कुछ प्रयोग किए थे। उम कागण उनके भक्तो की मध्या मे कुछ अप्रत्याशित वृद्धि जयपुर प्रवास के समय हुई थी, तैकिन अन्वम्प रहने के कारण इन प्रयोगो को वे मुनिञ्चित स्वम्प नहीं दे पाये। उनके परिचय एवं सम्पर्क का क्षेत्र बहुत विशाल था। भारत के सुदूर प्रान्तो मे रहने वाले विद्वानो, मनीषियो तथा राजनीतिज्ञो मे उनका व्यक्तिगत परिचय था। उत्तर प्रदेश के प्रवान ने शंगन किमी समय वे एक प्रमुख अश्री जी दैनित्र के सम्पादन मे भी व्यस्त रहे थे। विचारधारा मे उम समय उन्हें प्रच्छन्न वम्पूनिस्ट भी माना जाता था। उदयपुर प्रवान मे म्यानीप राजनीतिक तलचनो मे भी उन्होंने काफी उत्साहपूर्ण भाग लिया था। और उम ही कागण वे राज्य प्रशासन के कोप का आधार भी हुए, ऐसा भी बहुत ने परिचित कहते हैं। अद्भुत स्थिति तो यह हुई है कि एक और राज्य प्रशासन उन पर मुकदमा चला रहा था, ठीक उमी समय उनमे राजम्यान की सांस्कृतिक परम्परा पर एक विशेष शोध कार्य का सम्पादन भी हाथ मे लेने का अनुरोध शासन ने किया था। उम समय प्रशासन के मुख्य सचिव श्री भगवतनिहजी मेहता उम कार्य हेतु कई बार मुनिश्री मे मिले थे।

वर्तमान मे जयपुर आने का उनका मुख्य उद्देश्य यह था कि वे कुछ समय यहा स्थिर रह कर सध को सुगठित करते, साहित्य की मतव साधना मे लगते। और कुछ ऐसा ठोस कार्य कर जाते कि जिममे जैन शासन की चिर स्मरणीय सेवा हो सके। लेकिन स्वास्थ्य की खराबी ने यह योजना भविष्य के अन्धकूप मे डाल दी। जो वातावरण उनके देहान्त के पश्चात् बना उससे मुझे इतनी निराशा हुई कि नमाज और शासन की उन्नति के बारे मे सोचने की तो जैसे मन स्थिति ही नहीं रही। एक गहरी उदासी सारे कार्य के प्रति आ गई। अब कव कुछ कर सकने की इच्छा

पूरा हागा नियति का जान। हम बाह्याम्बरा  
 म शासन मवा की कवन ऊपरी कायवाण्या म ही  
 उचन गय है। मन्त्रि विधान मुन्त्र व दणनाय  
 कन बने घातम क्याण हेतु जितना अधिक् म  
 अधिक् तप करके कर्मों की निर्जरा कर नें  
 प्रभावण ला मध्य ममारो व घायारा कर नें  
 वम गमात्राथान एव म मवा व मार काय की  
 निधी ही गम्। किन्तु वास्तविक घोर व्यावहारिक  
 जगत् म प्रपना जगह पर मार विचार पूषक प्रपन  
 वन पर मन्त्र एत की शक्ति कौनमा वचारिक  
 भूमिका निवाहन म घायगी हम घम व मून  
 निदाना का प्रपन जीवन में उनकी वास्तविकता  
 ममभ कर उतार पायें स्वय ममभगे जानेंगे घोर  
 करेंगे घोर दूमरा को हम मार प्रवत हान की का  
 राह् निवा पायें क्या? कव होगा यह सर?  
 कौन करेगा? कौन गन् निवायगा?

मुनिश्री की प्र निम क्रिया मोहनवाडी का पाला  
 भूमि म सपान हुई हाल ही म उत पर एक  
 पत्ता खूतरा भी बनवा लिया गया उनके चरण

भी स्थापित कर लिया गए। सम्भवत यह प्राणिकी  
 य द्वाजनि हा सक्ती थी जो मत्तजन प्रपन गु  
 को दे मरें। मक वा उनके उठाए गए काय की  
 मुख्यत साहित्य साधना को भी सम्भवत इसी  
 पक्के खूतरा व मध्य ममाधिस्य करवाना ही  
 अधिक् लाभकारा लगन गे तो मारक्य नहीं  
 हागा। प्रपनी एक पुस्तक म मुनिश्री न उगाहरण  
 त हूण निला है कि—गाइप्रन्म म सवम अधिक्  
 ज्ञानवान बुद्धिसम्पन्न व्यक्ति को देवी की मँट  
 चढ़ा दना बहा किसी समय म सबसे उपयोगी काय  
 माना जाता था। पानी का हमगे मरुद्धा उपयोग  
 उनक समथ नहीं था। दश बाल व भाव को ममभ  
 कर काय करने वाला हमारा यह समाज गोड  
 प्रन्म के निवासिया सा ही मारचरण करने म व्यस्त  
 है। प्रपान घोर थाप क्रिया विधानों की बनिवेदी  
 पर लागणिक पात की मँट चढ़ा कर हम सब काय  
 पूरा कर चुक हैं। एक समर्पित जीवन का सही  
 स्थान पर समर्पित कर लिया गया।

\*\*\*

जे पाव कम्महि घण मणूसा समयावती घमइ गहाय ।  
 पहापते पामपयट्टिए नरे, वेराणुबद्धा एणय उवेत्ति ॥  
 जो मनुष्य धन का प्रमून मान कर घनकविध पाप कर्मों द्वारा धन की प्राप्ति  
 करता है वह कर्मों व दृढ़ पाश म बंध जाता है घोर घनेक जीर्वा व साय बरानुबध  
 कर घन म सारा धन एवय यही छोड़ नरक म जाता है ।  
 'उहेसो पामगस्स गगिथ या ने पुण णिह कामसमणुण्णे ।  
 घसिम दुक्खे दुक्खी, दुक्खाणमेव भावह प्रणुपरियट्टइ ॥'  
 उन्नेम की भावश्यकता सामान्य व्यक्ति को होती है विवकी व सिए कन्धि  
 नहीं। प्रपाना राग-द्वेष म प्रस्त घोर कपायों से पीडित तथा विषय-भोगों को  
 क्याणकारा मानकर उमम प्रामत्त रहने वाला मनुष्य उनक उन्वन् हान वान दु मा  
 को ज्ञान नहीं कर पाता है। घत शरीरिक घोर मानसिक दु मा से पीडित वह दु मा  
 चक्र म ही मन्वना रहता है ।

—भगवान महावीर

# हमारा मण्डल परिवार

( सत्र १९७०-७१ )

१ श्री सुशीलकुमार बुरड	अध्यक्ष
२ श्री कनक श्रीमाल	उपाध्यक्ष
३ श्री विजयकुमार लोढा	मचिव
४. श्री विमलचन्द भसाली	उपमचिव
५ श्री प्रकाशचन्द वाठिया	कोपाध्यक्ष
६ श्री माणकचन्द गोलछा	मगठन मंत्री एवं नयोजक "संगीत विभाग"
७ श्री अजीतकुमार लोढा	मदत्य कार्य-कारिणी
८ श्री प्रकाशचन्द महता	"
९. श्री विजय वाठिया	"
१०. श्री वशीधर सेठिया	"
११ श्री नरेशकुमार मोहनौत	"
१२. श्री अजीतकुमार जूनीवाल	"
१३. श्री फतेहसिंह वरडिया	मह-नयोजक "संगीत विभाग"
१४. श्री उम्मेदचन्द वैराठी	मदम्य
१५. श्री सुरेन्द्रकुमार वैराठी	"
१६ श्री पदमचन्द पु गलिया	"
१७ श्री बलवन्त छजलानी	"
१८ श्री अशोककुमार सिधी	"
१९. श्री पदम बडेर	"
२०. श्री विमलचन्द भडारी	"
२१. श्री मोतीचन्द जूनीवाल	"
२२ श्री कनक गोलछा	"
२३. श्री मूलचन्द श्रीमाल	"
२४. श्री शरदकुमार टाक	"
२५. श्री निर्मलकुमार टाक	"
२६. श्री महेन्द्रकुमार टाक	"
२७ श्री योगेन्द्रसिंह वैद	"
२८. श्री जयकुमार महमवाल	"
२९. श्री पारसचन्द श्रीमाल	"
३०. श्री विजयचन्द वैराठी	"
३१. श्री शिखरचन्द कोठारी	"

१२	श्री राजकुमार कोचर	सदस्य
३०	श्री मेन्तावचन् वाठिया	,
३४	श्री भगोवकुमार बाहुरा	,
३५	श्री बहादुरसिंह बाठिया	,
३६	श्री सुभाषचन् गोनछा	"
३७	श्री पन्मचन् महता	
३८	श्री पन्म महता	
३९	श्री जतनमन डोर	,
४०	श्री बेसरीचन्द गुजरानी	
४१	श्री महेंद्र मिषवी	
४२	श्री धमचन्द महता	"
४३	श्री नरिन श्रीमान	
४४	श्री नरेन्द्रकुमार जन	,
४५	श्री मन्नेकुमार छाजेड	
४६	श्री भमयकुमार जन	,
४७	श्री राजकुमार मत्तानी	
४८	श्री पन्मसिंह कोठारी	
४९	श्री बीरेन्द्रकुमार श्रीमान	,
५०	श्री महेंद्रसिंह महता	,
५१	श्री कुशलचन् महता	"
५२	श्री अनिलकुमार जन (श्रीमान)	
५३	श्री नवनीत महता	
५४	श्री कृष्णवान्त महता	
५५	श्री ताराचन् जन	
५६	श्री प्रभातकुमार सोडा	
५७	श्री अनिलकुमार जन (बन्)	
५८	श्री विमलवान्त दगार्द	
५९	श्री प्रकाशचन् बाहुरा	
६०	श्री चमनसिंह छाजेड	
६१	श्री कमलचन् कोषर	
६२	श्री पारतराज महता	
६३	श्री मुग्धचन् जन	
६४	श्री गुनीचकुमार छवेती	
६५	श्री राजेन्द्रकुमार गंधी	

# खण्डहर ?

★ सत्र सृष्टि श्री कान्तिसागरजी

निर्जन-एकान्त में अनेक लता एव वृक्षों में परिवेष्टित, धूलिधूलि-रित द्व्यणवज्जोप को दुनिया के लोग भले ही खण्डहर कहे किन्तु मैंने उसे कभी भी खण्डहर नहीं माना। अपितु मानव-संस्कृति के समुज्वल प्रतीक के रूप में स्वीकार किया है। वह सृष्टि का महान् कीर्तिस्तम्भ है। उसमें स्फूर्तिदायक तत्व है, महती उत्प्रेरक शक्तियाँ हैं। भारतीय लोकजीवन को सर्वांगपूर्ण करने की उसमें अद्भुत क्षमता है। उसके अग्रगण्य परमाणु में क्रांति की चिनगारिया है। वहाँ के पापाण शब्दरहित वाणी में युग-युग का संदेश सुना रहे हैं।

विश्व की दृष्टि में कहे जाने वाले खण्डहर के कण-कण में उन उदारचेता वीरों की निर्मल आत्मा जय घोष कर रही है जिन्होंने राष्ट्र और संस्कृति के रक्षार्थ हृमने-हमने आत्मकर्तव्य की बलिवेदी पर अपने आपको होम कर दिया वे उच्चतम प्रादण्य पापक भावनाओं का सृजन कर, मानवता को नवजीवन का संचार कर अमर हो गये। उन आत्मीय विभूतियों की ज्योति आज कलात्मक पापाणों के रूप में जल रही है, मानवता के प्रशस्त राजमार्ग का प्रदर्शन कर रही है और प्राचीन तत्वों में अंतर्प्रोत भावनाओं का नवीन सस्करण उपस्थित कर नव कांतिकारी-मानव को अग्रिम विकास के लिये उत्प्रेरित करती है, अर्थात् अतीत से अनागत की ओर डगित करती है। इसलिये मैं ऐसे स्थान को अतीत का जीवित प्रतीक मानता हूँ, जहाँ पर काव्य की आत्मा, रम की निमल मरिचा द्रुत गति से प्रवाहित होती हो। जिसके कण-कण में सस्रिता हो, उसे मैं खण्डहर कैसे कहूँ ?

उस स्थान के एक २ पत्थर पर जो शिखरभास्कर्य है, हमारे कलाविनामी पूर्वज और कला के परम माधक प्रतिभा सम्पन्न शिल्पियों का मुस्मरणा कराना है। उन्हें देखकर अन्तर्नयन तृप्त होते हैं। हृदय कमल प्रफुल्लित हो उठता है। भावनाओं का द्वन्द्व मच जाता है। अतीत चित्रवत् मम्मूख उपस्थित हो आता है और वहाँ उन पापाणों की मूक वाणी-जिसमें विशुद्ध भारतीय लोक जीवन का बहुमुखी चित्र उत्कीर्ण है—मार्मिक विविध रंगीन जीवन की कहानी सुनने को उत्सुक हो उठते हैं। वहिर्बहु युगल वहाँ अनन्त शान्ति के सुकुमार और स्वस्थ सौंदर्य की खोज में विह्वल हो उठते हैं। मीनों तक की भीषण गति के बाद चरम नव शक्ति को लिये हुये हो ऐसे आत्मवलवर्धक, उत्प्रेरक पुनीत और सरस स्थान को भला, मैं खण्डहर कैसे कहूँ।

★★★



भगवान महावीर निर्वाण-स्मृति पर्व

## दीपावली

★ साध्वी श्री निर्मला श्री एम ए साहित्यरत्न भाषारत्न

भगवान के निर्वाण के पश्चात् याप्त गहन अंधकार से जब विश्व व्याकुल हो उठा तो उसने दीप प्रज्वलित कर प्रकाश किया। अमावस्या की वाली रात्रि के अंधकार पर दीपदान द्वारा विजय प्राप्त की गई और वह रात्रि एक ज्योति पर्व दीपावली के रूप में मस्जति का प्रतीक तथा स्वच्छता प्रकाश एवम् उल्लास का पर्व बन गयी।

प्रस्तुत है श्रद्धा विदुषी साध्वी जी श्री निमला श्री जी म सा की एक रचना।

—सम्पादक

भारत का धर्मप्रिय देश है इसलिये यहाँ की जनता अपने परिवारों में सदैव तत्पर रहती है। और इन पर्वों का आराधन का कोई न कोई कारण अवश्य होता है। जिनके भी पर्व हमारे यहाँ मनाये जाते हैं उन्हें हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं—(१) सौखिक और (२) सौख्यतर।

पर्वों का आरम्भ का दिनवत्त यदि देखा जाय तो हमें यह स्पष्ट जान होगा कि प्रत्येक सौखिक पर्व प्रायः तान कारणों से पैदा हुए हैं—कई भय से कई सामय से और कई विरमय से। नागपंचमी और शीतला जग पर्व भय से उत्पन्न हुए हैं। नागपंचमी के दिन यदि नाग की पूजा नहीं की जाती तो नाग काट जायगा और शीतला की पूजा नहीं की

तो मानव बामार हो जायगा—इसी भय से आज पर्व मनाये जाते हैं। सामय से उत्पन्न होने वाले पर्वों में मंगला गौरी सम्मी पूजन आदि उत्पन्ननीय हैं कई पर्व विरमय से भी उत्पन्न होते हैं जैसे समुद्र पूजादि। इस प्रकार उक्त कारणों से सौखिक पर्व की शुरुआत होती है। इस तरह पर्वों का आरम्भ मानव की भौतिक आवश्यकताओं का परिचायक होता है किन्तु सौख्यतर पर्वों का आरम्भ भया नहीं होता ये दूसरे दृष्टिकोण को लेकर आते हैं।

अपने अपने दृष्टिकोण से सभी पर्वों में सौखिक और सौख्यतर दोनों तरह के पर्व हैं। मुसलमानों में 'रमजान' का पर्व सौख्यतर पर्व है। वही



दिनों में कोई बुरा काम नहीं करते। ईसाइयों में 'क्रिस्मस' का दिन लोकोत्तर पर्व है। इसी तरह हिन्दू धर्म में भी है। किन्तु जैन धर्म की उन गवने अपनी अलग ही विशेषता है। उनके जितने भी पर्व हैं सब लोकोत्तर पर्व ही हैं। लौकिक पर्व का कहीं नाम निगान भी नहीं है। लोकोत्तर पर्व आत्मशुद्धि के लिये होते हैं, इनके द्वारा मनुष्य वामना के पङ्क में मुक्त होता है। जैन ध्यान में द्वितीया, पचमी, अष्टमी, चतुर्दशी, नवपदागधन, तीर्थङ्कर कल्याणक, पयुं पण-पर्वादि सब लोकोत्तर पर्व हैं। ये पर्व ज्ञान दर्शन और चारित्र्य की उपासना पर बल देते हुए हमें यह नदेश देते हैं कि तुम अपनी आत्म साधना करो।

उक्त पर्वों की आराधना विशेषतः जैन धर्मानुयायी ही करते हैं। किन्तु इनके सिवा कुछ पर्व ऐसे भी हैं जिन्हें जैनो के अलावा हिन्दू भी मनाते हैं। ऐसे पर्वों में सबसे अधिक उल्लेखनीय पर्व दीपावली है। अनेक शताब्दियों से यह पर्व मनाया जाता है किन्तु अब तक प्रायः हमें यह पता नहीं कि यह पर्व कब चला, क्यों चला और किसने चलाया? कोई इसका सम्बन्ध रामचन्द्रजी के अयोध्या लौटने से लगाते हैं, कोई इसे सम्राट अशोक की दिग्विजय का सूचक बतलाते हैं, किन्तु रामायण में इस तरह का प्रायः कोई उल्लेख नहीं मिलता है, इतना ही नहीं किन्तु हिन्दू पुराणादि में भी इस सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं मिलता। बौद्धों के जातक में कार्तिक की रात्रि को होने वाले उत्सव का वर्णन है, परन्तु बौद्ध धर्म में यह पर्व मनाया ही नहीं जाता। अब रह जाती है केवल जैन परम्परा।

जैन शास्त्रों में दीपावली पर्व का वर्णन अच्छी तरह पाया जाता है। उज्जयिनी नगरी में राजा सम्प्रति ने आचार्य आर्यसुहस्ति गुरुवर्य से पूछा कि "हे पूज्य! जैनगम में पयुं पणदि पर्व प्रसिद्ध है

किन्तु जैनगम में त्रिधाया दीपावली पर्व की उत्पत्ति कैसे हुई? क्योंकि उन दिन लोग विविध प्रथ पतते हैं। नाक गुबरे महान, कार्तिक अमावस्या की मध्याह्न दीपो के प्रकाश में जगमगा उठते हैं।" आचार्यजी ने राजा सम्प्रति में दीपावली पर्व की उत्पत्ति का महत्त्व नभभाते हुए कहा कि— श्रमण भगवात् महावीर प्राणन नामक स्वर्ग में न्युत हानिर (ईसवी सन् में ६०० वर्ष पूर्व) अषाढ शुक्ला षष्ठी की मध्यरात्रि के समय माता भी बुद्धि में अवतीर्य हुए। ईसवी सन् में ५६६ वर्ष पूर्व चंद्र गुप्त प्रथम की मध्यरात्रि में क्षत्रिय कुण्डपुर में उनका जन्म हुआ। उस पवित्र आत्मा के प्रादुर्भाव में समस्त नगर ने अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव किया। उनके पिता का नाम था राजा निद्धार्य और माता का नाम था रानी त्रिशला। निद्धार्य ज्ञानवर्गीय क्षत्रिय थे। उनका गोत्र काश्यप था और वे शूरवीरता, उदारतादि गुणों के कारण काफी प्रभावशाली थे। उनकी पत्नी रानी त्रिशला वैशाली के अधिपति चेटक राजा की बहन थी।

तीन वर्ष की अवस्था में श्रमण भगवात् महावीर ने राजकुमारोचित वनव का त्याग कर मार्ग शीर्ष बदी दशमी के दिन महावीरोचित अन्तिम कोटि की दुष्कर जीवनचर्या अङ्गीकार की। इस समय मार्ग का पालन उन्होंने अप्रमत्तभाव से किया। उनकी प्रतिज्ञा थी 'किसी प्राणी को पीडा न देना'। वे जगत के प्राणी मात्र को अपना मित्र मानते थे, अतः कदापि किसी का अनिष्ट चिन्तन नहीं करते थे। एकदा एक भयकर दृष्टिविषय सर्प ने उनके दायें पैर में दश दिया। तब भगवान ने— "बड कौशिक बुज्ज बुज्ज" ये शब्द कहकर उसके कल्याण की कामना की और उसका उद्धार किया। अपने जीवन में जितनी भी बाधाएँ उपस्थित होती थी उन्हीं वे विना किसी दूसरे की सहायता के समभाव पूर्वक सहन करते थे। जो मार्ग उन्होंने स्वयं

समाया उनी माग पर दूगर्गे को से जान क निय उनका उपाग रहा । जिया उहूति धान खीवन में पावत नहीं किया एमा बाई भी माग दूगरा क निय उहूति नहीं मानाया । उहूति विने कग मगय कानी बौगय धानि जनता म बिद्वार किया । वे बापुपीउ में प्राय एक स्थान म नियर उडे वे धीर धरिण्ट धान मार्गो म पृषा-पृषत स्थानो पर बिचरग करत थे ।

इस तरह विषम उासय तथा धीर परिपहो को सहते हुए धीर विविध ता घ्या का धम्यात करत हुए हड़ प्रतिग धीर भगवान न साडे धारह बप म कुछ अधिक समय तक जनि साधना की । उा साधना क दरमियात भगवान न कवल ६६ दिन ही पारणा किया था धीर सभी उावान निजत हुए थे । श्नु बाजिता न । क उत्तर टट पर मियन दवालय के सागीर धारकण क नीध निजस दो उपवास का प्रत्याख्यान कर धारा शुका ध्यात का धारमन किया धीर लीज ही इस ध्यान की प्रथम दो थ गियों का पार करत पातिजमो का धय किया धीर उमी समय (बगम मुक्ता टानी क निन बीम पार क ममय) ४० बप ही उम म धाने केयम इन को पात किया ।

भगवान् महावार न कयय प्राणि हू जाने क धान भाबीजार का बाल प्रारम्भ किया । उहूति तथा को श्वर-भाणि पगयग साधार म सिर धीर धर्म निय बनाा के निय प्रबलन धारमन किया । उनक इन उायेना का प्रभाव धारमन धारमन प्राक हुआ । जिन प्रबलन धार य-बागाि मला स्वयगाधार कम हुए मययी प्राका धारन करने के निरे मानी म लमिधि उागए हू मुग कुम का धनुष हय धारन बमो क धनुषार हाता है हायाि भात हया । कय प्रथम उाग लीमहादि हारग धरिण्ट का नियर बनया । य के के लीदिह कय क मया य । विष्णु उर मारवा न

उसरा मया धार्यामिब धय बतनाया तब उनका पारमायिब स्वल्प का जान हो गया । जिन बादाएा का धपनी जाति का धरना विन्ता का धमिमान का उनका बहु धमिमान भगवान क सामने पूर पूर हा गया । य भगवान क धरिण्टा धारिण्ट धनेवात धीर समभाव क सन्ता का सात भाया-प्राइत म प्रचार करत मग ।

भगवान् महावीर न चतुविध धय का म्यापना की । उाव उाग म प्रभावित होकर उनके धमएु धय क—राजा उावन पुष्पपाल प्रमधयद धानि कर् दारिय राजाधो न त्याग धम का धन्नी कर किया । स्वधय धानि प्रमुग बई साग मारवान के नियर बन गय । धारा जानिभगाि यय तथा रिमान धानि न त्याग माग को धरनाया ।

धोक रिचिया भी मसार की धगारता को ममनार उावे धमणी मयो म शानिम हो गई । उनम धाननबाका मुगाबी नियगना धानि राजपुत्रिया श्वान-भाि बादाएा पुत्रिया तथा वैश्य पुत्रिया भी थी ।

उने धमगीताक धय म—मगध राजा थ गिज कुमिक राजा धरत, पुपतात धरिण्टि धारप्रधान तथा शात निरधरी धीर मारगग प्राय सभी धरिय थे । धारम धानि वैश्य धमगी पागको क धयाका ककनातजन जंग कुमवार भी मय म थे । धनु मयायी प्रग हुट म हुट हायाे भी उनके पाग धर त्याग करत तथा को धारग कर दाता हुय य ।

उाव धमतागिहको का वगे बहुत रिमान था । ममे धुपसा रबनि उरणी धानि कर् रिणी मधारिण्टा लमिण्ट था । तीपकर हाये के धार धारगना म म न धर लयम भाग्य क विविध धारो म रिण्ट करके उरना का उाग किया ।

परमात्मा की इस देन को भारतीय जनता कैसे भुला सकती है ।

तीर्थंकर जीवन का तीसरा चातुर्मास परमात्मा ने अपापापुरी के हस्तिपाल राजा की रज्जुग सभा में किया । जीवन का यह अन्तिम वर्ष था । इस वर्ष भी प्रवचन देकर पुण्यपालादि अनेक भव्यात्माओं को दीक्षा दी । अपने जीवन की समाप्ति निकट जानकर रज्जुग सभा भवन में भगवान महावीर ने अन्तिम उपदेश की अखण्ड धारा चालू की जो अमावस्या की पिछली रात तक चलती रही । इस प्रवचन में अनेक गरामान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए थे जिनमें काशी कौशल, नौ लिच्छवी और नव मल्ल जाति के अठारह गणराज विशेष उल्लेखनीय हैं । इस दीर्घकालीन देशनामे ५५ पुण्यफलविपाक ५५ पापफलविपाक और ३६ अपृष्ठ व्याकरण सुनाये । अन्त में प्रधान नामक अर्घ्ययन का निरूपण करते हुए ७२ वर्ष की आयु में दो उपवास कर भगवान कार्तिक (आश्विन कृष्ण) अमावस्या की पिछली रात को निर्वाण प्राप्त हुए । शास्त्रों की परिभाषानुसार निर्वाण शब्द का अर्थ "बुझजाना" होता है । प्रभु महावीर देव की कर्मों की आग सर्वथा बुझ गई और उन्होंने शाश्वत सुख को पाया ।

यह लोकोत्तर पर्व है । क्योंकि इसका सम्बन्ध तीर्थंकर परमात्मा श्री महावीर देव के निर्वाण से है । श्रुतकेवली भद्रबाहु स्वामीजी के कल्पसूत्र में भगवान महावीर के जीवन का वर्णन करते हुए उनके निर्वाण कल्याणक से सम्बन्धित दीपावली की उत्पत्ति का वर्णन किया है जैसे कि—

“ज रयणि चण समणे भगव महावीरे कला गए, जाव सव्वदुक्खप्पहीणे, त रयणि चण राव मल्लई राव लेच्छई, काशीकौशलगा अठारसविगण रायाणो, अमावासाए पाराभोअ पीसहोववास पठ्विसु, गए से भावुज्जोए दव्वुज्जोअ करिस्सामो” ।

जिस रात्रि में श्रमण भगवान महावीर स्वामी मोक्ष गये, यावत् सर्व दुःखों से मुक्त हुए उस रात्रि को नवमल्ल की जाति के काशी देश के राजा तथा नव लेच्छ की जाति के कौशल देश के राजाओं का किसी कारण वहाँ पर सम्मिलन था । वे अठारह चेडा राजा के सामन्त कहलाते थे । उन्होंने अमावस्या के दिन सप्ताह समुद्र से पार करने वाला उपवास पौषध व्रत किया हुआ था । भगवान के निर्वाण पर उक्त गण राजाओं ने कहा—“अब सप्ताह से भाव उद्योत चला गया । अब हम द्रव्य उद्योत करेंगे” ऐसे महान् जगदीपक के बुझ जाने पर उसकी कमी को पूरा करने के लिए उस रात्रि में भव्य दीपमालायें जलाई गईं । परमात्मा के निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाने के लिये अनेक देवगण हाथ में रत्न लेकर आये और मानवगणों ने दीपक जलाये । उस समय उन दीपकों के प्रकाश में अपापापुरी का आकाश प्रदीपित हो गया था । चारों ओर प्रकाश फैल गया था “तत प्रभृति दीपोत्सव सवृत” तब से दीपावली पर्व प्रारम्भ हुआ ।

आज भी परमात्मा महावीर के निर्वाण महोत्सव मनाने के लिये देश विदेश से हजारों यात्रीगण पावापुरी में आते हैं । तपश्चर्या और आत्मकल्याण साधनापूर्वक निर्वाणलड्डू चढाते हैं ।

अर्वाचीन युग में प्रायः हमें यह कल्पना नहीं हो सकती कि भगवान महावीर निर्वाण के उपलक्ष्य में दीपावली मनाई जाती है । किन्तु उस समय प्रसिद्ध राजघराने के साथ भगवान महावीर का कुलक्रमागत जो सम्बन्ध और प्रभाव तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यदि परिवारों में उनका उपकार था उसे देखते हुए ज्ञात होता है कि राजाओं ने भावज्योति के विरह में द्रव्य ज्योति से प्रकाश किया । उसकी स्मृति में तब से आज तक दीपोत्सव पर्व चला आ रहा है ।

★★★

## जैन समाज में

### एकता का अभाव और समाधान

★ धनरूपमल्ल नागौरी एम ए बी एड साहित्यरत्न यायमध्यमा

जैन समाज में इतने खण्ड एवं प्रखण्ड हैं जो नगण्य से भेदा के आधार पर आज घञ्जकाय बन गये हैं। एक दूसरे की जिंदा क बुचक्र चल रहा है कभी प्रत्यक्ष तो कभी परोक्ष दिग्गम्बर और श्वताम्बरों की लड़ाईयाँ तो घाय देल ही रहें हैं। श्वताम्बरों में भी स्थापकवासी मी दरमार्गी और तरापयो आपस में बहुत भाव रखत हैं। घृणा और द्वेष के ये बीज यदि हमी वेग से पनपत रहें तो एक दिन विघटन की आघिया में हम इस तरह विघटन जाएंगे कि जिसका कही अता पता भी न लगगा। इस प्रसंग पर ही प्रस्तुत है जयपुर के श्री धनरूपमल्लजी नागौरी के विवेचनात्मक विचार।

—सम्पादक

विक्रमा ने ठीक ही कहा है कि सप शक्ति कनियुग' धर्मान् कनियुग में एकता में हा बल है। कोई भी राष्ट्र दम जाति धयका समाज एकता बिना जीवित नहीं रह सकता। आज मुस्लिम सिक्ख इसाई पारसी धाय समाजी आदि एकता क बन पर अस्तित्व बनाय हुण हैं। इस लिय यह निविधान है कि आधुनिक युग में जीवित रहन हेतु एकता की परमावश्यकता है। एक में अन्वता दुगन्धी और अन्वता में एकता सुगन्धी होती है। एक और एक मिलकर ग्यारह हान हैं। अन्वता एक निष्प्रिय है। अणएव समाज की उन्नति हेतु एकता आवश्यक है।

अब प्रश्न यह है कि एकता का समाज में अभाव क्या और उमका जुम्मेअर कौन ? प्रस्तुत अन्त में अन्त में हम यहाँ अन्त बाराजी पर विचार

न कर मुख्य-मुख्य हेतुमा को ही सोजन का प्रयास करेंगे।

भगवन्त परमात्मा महावीर न साधु साध्वी थावक और थाविवा को मितावर अपन चतुर्विद सप की आधार जिला रखी यह भानी हुई बात है कि आधार अणर वहीं में भी कमजोर होगा तो वह मवान शानि अस्त हुए बिना नहीं रहेगा। भगवन्त परमात्मा का यह सप परभोत्पष्ट था। भगवन स्वयम् एभानित्पाम्य' बहुकर सप को नमस्कार करत थे। इसलिय के इसका पूण ध्यान रागत थ कि वहीं स भी इस सप का कोई पाया कमजोर न हो जाय। यही कारण था कि उनक समय में सप न बहुत उन्नति की। साधु साध्वी थावक तथा थाविवामा की उनके समय में अच्यदी गन्था थी। उनके अन्त में यह अन्त सबको धर्पो तक इमी

अनुरूप चलता रहा। सध में मजबूती रही किन्तु समय परिवर्तनशील है, इसके थपेड़े हमारे इस सध पर भी पड़े। होते-होते-सोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दि में तो एक महान परिवर्तन आया। स्वानकवासी और तेरहपयियों का अस्त्युदय हुआ। इधर दिग्म्वर, श्वेताम्वर दो भेद तो आचार्य कुदकुदाचार्य से ही हो गये थे। रही मही एकता का विघटन मोलहवीं तथा सत्रहवीं शताब्दी में विशेष रूप में हुआ। मवने अपनी-अपनी खेचतान की, डोरी को इतनी मजबूती में खीचा की एकता रूपी डोरी में गांठे पड गईं। इधर गच्छवाद ने जोर पकड़ा और इससे वैमनस्यता अधिक बढ गई। सब अपनी-अपनी डपली और अपना-अपना राग आलापने लगे। भक्तों की भरमार बढ गई। उनकी पकड़ा-धकड़ी कट्टरता का रूप धारण कर गई। किन्तु हाल वही हुआ कि 'मज' बटना ही गया ज्यो-ज्यो दवा की'। इलाज ला इलाज हो गया। और बढते-बढते स्थिति यहा तक पहुँची कि जितनी कटुता और वैमनस्यता माधु वर्ग में व्याप्त हुई उतनी श्रावक वर्ग में नहीं। श्रावकों को तो मोहरा बनाया गया और वही हाल आज भी है। अधिक बातों को तो छोड दे लेकिन अगर त्रिथि-चर्चा के विषय की ही लें तो जात होता है कि इस चर्चा में ममाज का कितने लाख रूपया दोनों ओर में खर्च हुआ और कितनी वैमनस्यता, इर्ष्या, द्वेष, कटुता आदि बढी और अन्त में परिणाम भी कुछ नहीं निकला। क्योंकि परम श्रद्धेय आनन्दघनजी के शब्दों में, सब अपनी-अपनी गाँव 'मारग साचा कोहु न बताव' की स्थिति बनी रही और आज भी बनी हुई है। ऐसे एक नहीं अनेक ज्वलन्त उदाहरण एकता के विघटन के लिये जुम्मेदार हैं। अति सरल शब्दों में 'आज के विघटन का मूनाधार साधु समाज की अपनी पकड़ है।' श्रावक तो प्रवाह में बह जाते हैं। इनके इशारे पर लाखों रूपया पानी की तरह बहाकर लडने-भगडने को तत्पर रहते हैं। प्रणी-

खम्मा, अन्नदाता और नहत्तवाणी की रागान्विता के बशीभूत हो, श्रावक वर्ग अशोभनीय एव अवर्णनीय खीचतान में फना हुआ है। इमीलिये आचार्य हरिमद्र सूरि जी ने ठीक ही कहा है कि 'दृष्टि-रागन्तु पापीयाव' अर्थात् दृष्टि राग पापियों के लिये है। अनन्तलघ्वि के धारक गौतम स्वामी को केवलज्ञान क्यों नहीं हो रहा था? उसका मूल कारण भगवन्त परमात्मा महावीर के प्रति उनका रग था। जब परमात्मा को केवलज्ञान हो गया और गौतमस्वामी को नहीं स्थिति का बोध हुआ तो उन्हें भी तुरन्त केवलज्ञान हो गया। लेकिन उसी परम प्रभु परमात्मा के हम अनुयायियों में कितनी रागान्विता है? यह रागान्विता मत्र तरह से स्वयम् के तथा नमाज के लिये घातक मिद्ध हो रही है। आज हमारी कथनी और करनी में महान अन्तर आगया है। उपदेश दृढ़ और देने हैं और कर्मे कुछ और हैं। तात्पर्य यह है कि साधु समाज के विकृत रूप का समाज पर बहुत दुःप्रभाव पड रहा है। इनके अनिश्चित श्रावक एव श्राविनाशों में अध्ययनशीलता का अभाव भी सगठन के विघटन का कारण है। युवावर्ग की ओर कर्णधारों का उपेक्षा भाव, मध्यम वर्ग की दयनीय स्थिति, रचनात्मक कार्यों का अभाव, दकियानुमीपन, आदि एक नहीं अनेको कारण एकता के विघटन के हैं। अत अव थोडा समाधान की ओर भी विचार करलें तो ठीक होगा। सर्व प्रथम हमारा साधु नमाज ममन्वय की नीति का अनुमरण करे तो नमाज में एकता सरलता से स्थापित की जा सकती है। हमारे भेष अलग-अलग हो, हमारी मान्यताओं में भी भले ही अन्तर हो, लेकिन मवसे ऊपर उठकर हम सर्वप्रथम यह नोचें कि हमारा पिता एक है। परमपिता प्रभु महावीर एक है। उसका शासन एक है। चतुर्विध सध एक है, मूल सिद्धान्त एक हैं अत हम उनके अनुयायी एक हो सकते हैं।

इसने अनिश्चित समाज में अध्ययनशास्त्रता को बढ़ावा दिया जाय। राष्ट्रमाया में जन साहित्य का प्रयोग अधिक मात्रा में किया जाय। बालको या धर्म धनुष्य द्वारन व लिए सरन यात्रनायें बनाकर उन्हें शिवायनन किया जाय सरन साहित्य छायाया जाय मुक्त प्रोग जाय लप बधानक उपवाय एकांता शानि विधायें जन इष्टि म नियरी जायें मध्यमवय को ऊँचा उठाने हुनु ध्यान दिया

ताय उन्हें उठागतायें स्थापित कर काम किया जाय उन्हें धरना समभा जाय प्राधानता में नवीनता धान का प्रदाय किया जाय। इस प्रकार और भी कई काम हैं जो किए जायें तो समाज में एतना नला भाति स्थापित की जा सरता है। समाज का बिस्टन रूठ सरता है। समाज उन्नति की भार अप्रमर हा सरता है। कि बहुना—

\*\*\*



### मानवीय जीवन का अमृत आत्म-विश्वास

मानव-जीवन के समुद्र का मध्यन करन म जो अमृत हाय प्राया है वह है आत्म-विश्वास। उम बाहर यात्रा की आवश्यकता नहीं है। तुम्हारे हृदय में एक कोन में उतना घट भरा पडा है। वह बड़ा मधुर है। उम पाकर तुम धमर बन जाओगे। पयिक ! जीवन का प्रामाद इस आत्म-विश्वास की भित्ति पर प्राधारित है। सवार में इसमें बड़कर दूसरी घोर कार्य सम्पत्ति नहीं है। जिसने इस सा दिया उगत सब कुछ पा लिया। इसकी एक-एक बूद तुम्हारी यात्रा का महात्त्व सम्बन्ध है। म्यप के समूह। घोर बुतर्का व दिशा में इससे रस का प्रवाहित मन हाने दो।

मित्र ! ऊपर में क्याग सना या नहीं सना जीवन घोर मृत का सच्च सगाय नहीं है किन्तु आत्म-विश्वास का होना या न। हाता है। मन्त्र-सम्ब स्वाग देने बाल भी इसमें धमाय म निर्वीक हैं। उनकी चतना का सोन मदा व लिए मूम जाना है। उन्हें हम गिद-गिया व काम धान धाल मृत कन्दवरा में अधिक घोर कुछ नहीं कर सकत।

—मुनि श्री राधेशुमारजी

## धर्म से युवा पीढ़ी विमुख क्यों ?

★ अंबरवाड़ी रामपुरिया कलकत्ता

“हम ही हमारी युवा पीढ़ी की विमुखता के सही जिम्मेदार हैं। हम मुघरों, हमारी धार्मिकता में कुछ सुधार करें, प्रोग्राम कुछ दिलचस्प बनायें, कडुवी दवा को मुन्दर से कैपसूल में बन्द कर देने के समान केवल वधै वधाए धार्मिक क्रियाओं के टरों को बदले, तभी हम अपने कार्य में सफल हो सकेंगे।”

कितने सुन्दर एवं स्पष्ट विचारों की अभिव्यक्ति की है कलकत्ता की वहन भवर वाई रामपुरिया ने उनकी प्रस्तुत मौलिक रचना में।

—सम्पादक

इस प्रश्न पर विचार करने में पहले धर्म किसे कहते हैं, इस प्रश्न पर हमें पहले विचार कर लेना चाहिये।

वास्तव में धर्म कोई वस्तु नहीं, धर्म कोई पदार्थ नहीं, धर्म कोई चीज या व्यक्ति का नाम नहीं, धर्म तो एक मात्र द्रव्य में निहित अभिन्न, सदा सहचारी गुण किंवा स्वभाव है। जैसे अग्नि का स्वभाव उष्णता, जल का स्वभाव शीतलता है। अग्नि को चाहे जिस स्थान पर चाहे जिस अवस्था में रखे वह उष्ण ही होगी। यदि उष्णता नहीं रहेगी तो वह अग्नि ही नहीं होगी। जल किसी भी दशा में गर्म नहीं होगा, अग्नि के संयोग से गर्म किये जाने पर भी अग्नि से अलग हटाते ही जल अपने शीतल स्वभाव की ओर उन्मुख होने लगता है। उसमें रही उष्णता अग्नि का स्वभाव था जल का नहीं, इसी प्रकार आत्मा का स्वभाव धर्म, ज्ञान दर्शन चारित्र्यमय चैतन्य है। धर्म किसी

भी दशा में, परिस्थिति किंवा अवस्था में आत्मा से अलग नहीं हो सकता। यदि दर्शन ज्ञानादि चैतन्य से आत्मा मुक्त रहे तो वह आत्मा नहीं, जड़ पदार्थ ही होगा। धर्म आत्मामय है, आत्मा में भिन्न नहीं, लेन देन की चीज नहीं, करने या कराने की क्रिया नहीं। वह तो अपने आप में पूर्ण सहज अखण्ड स्वभाव है।

यहां एक प्रश्न उठ सकता है कि यदि ऐसी बात है तो फिर इन धार्मिक क्रिया-काण्डों का क्या अर्थ। क्या ये अधर्म हैं, धर्म नहीं है? जिस प्रकार ई धन के संयोग में जल गर्म हो जाता है उसी प्रकार क्रोधादि कपायों के संयोग से आत्मा भी तप्त सतप्त पीडित है, वह कपायों की आच से खीनती है, उबलती है, यह आत्मा का धर्म नहीं, इसे विभाव कहते हैं। आत्मा का शांत, शीतल अतिमधुरतम स्वभाव व स्वभावान्तर्गत आने वाले समता, सरसता, शान्ति आदि गुण जो कि क्रोधादि विभावों से आच्छा-

न्ति पढ़े हैं उन आच्छादना को दूर कर समवाप्ति योग का प्रगटीकरण करान में सहायभूत जो क्रियायें प्रक्रियायें साधन साधनाऱि हैं वे सभी धम नहीं बकि धार्मिक क्रियायें हैं ।

सामायिक यानी ध्यात्मा में समभाव की स्थापना व प्रयास में यदि आशिव सफलता भी न मिले तो वह प्रयत्न नहीं होता । श्रोत्राऱि दुःखवर्तियों से ध्यात्मा धनाऱि बाल से धिरो है एतस ध्यात्मा स्वय पीन्ति है और अपने मपक में ध्या वानो को पीडित करती है उनमें मुक्त होने की प्रक्रिया साधना किवा प्रयत्न का नाम सामायिक है । समता में शान्ति विपमता में अशान्ति अशांति में शान्ति की ओर ले जाने वाली सामायिक ।

सामायिक व दिष्ट केवल ध्यान मुग वन्धि का व खबला देकर ४८ मिनट बठ जाना ही पर्याप्त न्हा होगा । हमारी ध्यात्मा पर नगी धमन्व्याता विपमता की परतो को क्रमश एक क पश्चात् एक करके साफ करें और साफ करके समस्त भाव का शीतल शान्त रसास्वादन करावें ता ही हमारी सामायिक समस्त भाव का पान किवा आस्वादन करान में सक्षम है नहीं तो वह सामायिक व्यवहार में भले सामायिक कहा जाय पर वास्तव में जिसे सामायिक बताया गया है वह नहीं है ।

प्रतिदिन सामायिक करने वान के जीवन में प्रतिकूल परिस्थितिया के धाने पर ध्र श मात्र भी समता क दशन न हा श्रोत्राऱि कपायो की वही पुरानी धमा चौकड़ी मौजूद रह मानापमान की वही उभसता रहे तो मानना ही होगा कि दवाई ने असर नहीं किया ।

इसी प्रकार प्रतिभ्रमण को ल लें । पापा से पीछे हटाने का नाम प्रतिभ्रमण है । प्रात व साय दोनों समय प्रतिभ्रमण कर पापा की धालाचना

निष्ठा गर्हा करने वालो के जीवन में उन्ही पापा की बार-बार पुनरावर्ति होनी रहा तो प्रतिभ्रमण वता । झूठ चोरी छल प्रपञ्च दगा धनीनि बाला बाजारी हिंसाऱि यदि जीवन में 'यो व' त्या दशन में घटन की घजाय बन्त ही जाय तो प्रतिभ्रमण को पापा में पीछे हटने का वजाय बन्त ही जावें तो प्रतिभ्रमण का पापा से पीछे हटने की क्रिया बन्त बर्ता जा सक्ता है ।

वीतराग का मक्त धीतराग का पुजारी यदि राग के गहन गत में डूबा रहे । धीतराग की आगानुसार जीवन पथ पर 'गे-चार बदम भी धामे न वडें तो इस पूजा का भी क्या अर्थ ।

भगवान की भक्ति, भगवान की पूजा-सेवा मने हा कम हो पर जो हो वह ईमानदारी के साथ ही । भगवान के ध्यात्तर सत्कार के साथ ध्यात्मा पानन का लक्ष्य अत्यावश्यक है । यदि उपासक ध्यात्मापालक नहीं है तो वह धीतराग का सच्चा उपासक नहीं । यदि पिता का पुत्र अपने पिता की सेवा-भक्ति तो खूब करे वेंसर चदनादि स चरें भेवे मिष्टान्न आदि का भोग उगावे परन्तु पिता क वहे अनुसार न चने तो उस सपूत नहीं कहा जा सक्ता ।

वास्तव में ये सब धार्मिक क्रियाए धम न हाकर धम की ओर ले जाने वाला माध्यम हैं । इनका उपयोग इतना ही है कि हमारे जीवन में जो गुप्त सत्वरूप धम छिपा है उस धम को प्रगट करने में सहायक वनें और हम सच्चे ध्रध में धर्मिमा वनें ।

ध्रध हम अपने मून प्रश्न आज की युवा पीली धम से विमुख क्या है' पर धाते है ।

आज का जनमानस विचारशील है, शिक्षित है तकशील व जिनामुवर्ति वाला है । वह बाबा बाक्य प्रमाण पर विश्वास नहीं कर सक्ता । वह



जानना चाहता है आपने धार्मिक क्रियाओं में क्या लाभ उठाया ? आपके जीवन में क्या उपलब्धियां हुई ? क्या आपके प्रयोग सफल रहे, आप अपने ध्येय में कहा तक कामयाब हुए । उन्हें चाहिये अपनी जिज्ञानाओं का सच और सप्रमाण समाधान । उन्हें चाहिए धर्म के साक्षात् दर्शन । हम कहते हैं 'इसलिए करो' इस वाक्य से उन्हें ननुष्ट नहीं किया जा सकता । धर्म के लाभ उन्हें करके दिवाने होंगे ।

सन्धे-सन्धे तिलक धारी भगवान् के पुजारियों को जब बाजार में काला-बाजारी, मेल-सभेल, मिलावट, असली-नकली व अन्याय-अनीति दिल खोलकर करते व्यक्ति देखता है । उत्सव, महोत्सव, जीमनवार, पूजा, प्रभावना में नाम के लिए लाखों रुपये लुटाने वालों को, अपने पड़ोस में भूखे, नगे, अर्थ के अभाव व अव्ययन की उन्न में पेट की चिंता में पड़े, भूख की ज्वाला में मुलगते स्वधर्मो-वन्दुओं के बच्चे मानव पुत्रों को भयकर अभाव की चक्की में पिन्ते देखकर भी अनदेखा कर अभिमान में उन्मत्त देखता है । अपने घर में दादी, नानी को पूजा, वहिन, मा व पत्नी को प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, पीपघ करते देखता है । किन्तु दैनिक जीवन में वही प्रतिदिन की कटा-कटी, वही क्लेश, वही भगडा, वही व्यग्य और तानाबन्धी, तेरा-मेरा, निंदा विक्रया आदि अशातिप्रद, प्रवृत्तियां करते देखता है । इन प्रवृत्तियों में प्रत्येक मुज व्यक्ति यह सोचता है कि अभी तक उनके जीवन में धर्म नहीं आया ह ।

मन्दिर और उपाश्रय का धर्म यदि हमारे जीवन में कुछ परिवर्तन न ला सके, हमारे दैनिक जीवन पर जिस की कोई प्रक्रिया न हो, कोई प्रभाव न हो वह कैसा धर्म ? परलोक में देव, देवेन्द्र बनाने वाला सामर्थ्यवान धर्म यदि इस जन्म

में हमें मानव भी न बना सके तो ऐसे उपाय धर्म पर आज का मानव अद्रालु नहीं हो सकता ।

हम स्वयं वेत्मान, अमदाचारी, भूठे बने रहकर युवकों को ईमानदार, मदाचारी, सच्चे बनना चाहते हैं । स्वयं भूठ बोलने बाने हम, बच्चों को भूठ बोलना देव उन्हें पीटने हैं, हम स्वयं चोरी करते हैं लेकिन बच्चों को चोरी करने पर सजा देने हैं । यह व्यवहार बच्चे के मानस में सप्रप पंडा करता ह । हमारे उपदेश उन् निरर्थक दम मात लगते हैं और उन्निा धर्म पर नै आस्था उगमगा जाती है ।

एक बार एक महिला एक मन के पान अपने बच्चे को लेकर गयी और बोली-महात्मा ! यह गुड बहुत ताता है, डाक्टर कहता है जब तक यह गुड खाना नहीं छोडेगा तब तक यह बीमार बना रहेगा । आप उसे गुड न खाने की प्रतिज्ञा दिलाये । महात्मा ने कहा-वहिन ! एक महिन वाद आना । उनी दिन में महात्मा ने स्वयं गुड खाने का त्याग किया, क्योंकि पहले वे स्वयं गुड के स्वाद से मुग्ध थे और जानते थे कि जब तब वे स्वयं गुड खाते रहेंगे तब तक बच्चे को गुड न खाने का उपदेश नहीं लगेगा, इनीलिए उन्होंने पहले स्वयं गुड खाना छोडकर, बाद में बच्चे को उपदेश दिया तो बच्चा तुरन्त मान गया ।

इसी प्रकार महात्मा गांधी जब दक्षिण अफ्रिका में थे तब 'वा' को रक्त प्रदर की शिकायत हुई । हकीम ने दाल बन्द कर दी पर 'वा' दाल खा ही लेती, परहेज के अभाव में बीमारी बढनी चली गई एक दिन वापू ने 'वा' को डाटा तो 'वा' के मुह में निकल गया स्वयं क्यों खाते हो । वापू ने उनी वक्त अपना कान पकडा और तुरन्त दाल छोड दी । 'वा' ने बहुत अनुनय विनय की पर वापू की प्रतिज्ञा टड थी । 'वा' की बीमारी मदा मदा के

विण चनी गद्द यह है मुधार का नगवा । पत्त  
 हम घर्षो वनें हमार जावन म घम वा प्रभाव हो  
 घम क दशन न। ता ही हमार मुवा पीन घम  
 रिण बन सवगी ।

घात्मा पाद इटने नग मानव वा कण हम हमाग  
 हा कण नगन लग फिर लगे हमागी पाडी बने  
 हमार पण चिन्ता पर नगे चनगी । प्रवाप चनगी ।  
 बगनें हम भी बुद्ध बन क गियाये ।

जो उपरान हम उह नत है जग प्राचरण का  
 हम उनम घपना वरत है । वग हा पहन नम घपना  
 जानन बना कण गियाये मामाधिक वरे घोर जीवन  
 म समनात घाता जाय । घपन बच्च म घोर भाई  
 के बच्च म भाई घोर पडीन के वन में जा पण  
 नजर घाना है वह दूर हुना जाय । माधारण  
 बाना म जो मन मुगव न जात है के बडा बाना  
 मे भी न हा । घपनाय घनीनि करत हमार

हम ही हमागी मुवा पीन की विमुक्तता क  
 सही जिम्मवार है । हम मुपरें हमागी धामिकता  
 म बुद्ध मुधार वरे प्राधाम बुद्ध निचस्प बनाये  
 बडुवा ल्या वा मुग्ग म कपून म बड कर दन क  
 ममान कवन बघ-बघाण धामिक-गियाया के डरो  
 का वनें तभी हम घपन वाय म सान हो  
 सरेंगे ।

\*\*\*

हरकत

माय चलन एक बालक न एक पत्थर उरया । पत्थर न प्रसन्न होकर साधा अब तक मैं  
 व्यथ ही नन धुन पत्थरों की टांगों क बीच पड़ा था अब भाग्याप्य की पडी घाई है ।

मदक न एक ममान वा ऊपर का मजिन का निशाना बनाकर पत्थर घेरा । पत्थर मन  
 म पुनक रहा था— घहा ! उडन म बिनना घाना है ।

बाच की निहरी भना कर दूर गई । पत्थर पीगे की निकायन घनगुनी कर बोला—  
 मर माय म हवाबट घानन वाच को घहा ता दगा हानी है । घोर बट कमरे म बिछी राजकुमारी  
 की कामल लय मुग्गुनी मेर पर गिर पना 'बहुन धूम घुना अब घोश देर निधाम करगा ।

परन्तु तभी दागा ने उठाकर उम हलभान का बाहर मदन पर फेंक दिया । उही पहन क  
 पत्थरों की मजिन म प्रवस करत हुए उमन बहा— घमी घमी बभव के गाघ्राग्य म घूम कर  
 मीन है मुम घवन का घही मन न । मगा मैं ता घार मवरा बिनघ्न मवत है घापक चरणों  
 म हा रहना चाहता है ।

तमा उगवे प्रहार म दगा लर घूम मुगराया— तुम बही मी घानी हरकता म वाक  
 मही घान ।

—उपाध्याय घमरमुनि

## क्या स्याद्वाद अर्ध-सत्य या संशय है ?

★ चुनि श्री महेंद्रकुमारजी 'प्रथम'

भगवान महावीर ने वस्तु के अनेकात्मक स्वभाव को स्याद्वाद द्वारा बतलाया था। विभिन्न विद्वानों में "स्याद्वाद" की व्याख्या अलग-अलग ढंग में की है। सत्य को पहचानने की समग्रदृष्टि के रूप में स्याद्वाद को न लेकर, अर्ध सत्य या संशयवाद की संज्ञा भी उन्होंने दी है। प्रस्तुत है स्याद्वाद के विषय में श्रद्धेय मुनि श्री महेंद्रकुमारजी की स्पष्टोक्ति ताकि विद्वान स्याद्वाद की यथार्थता को समझ सकें और अपने विवेचनों पर पुनः चिन्तन कर सकें।

—सम्पादक

भगवान श्री महावीर ने व्यवहार के क्षेत्र में अहिंसा व अपरिग्रह का अवतरण कर उम्र समय के धार्मिकों को नई दृष्टि दी थी। दर्शन के क्षेत्र में आग्रह के परिहार तथा जीवन के अनेक उलभन भरे प्रश्नों के समाधान के लिए उन्होंने स्याद्वाद की एक विशेष पद्धति दी। विद्वानों ने भगवान् महावीर महावीर के अहिंसा व अपरिग्रह के विचारों को समझने में तो दक्षता दिखलाई, किन्तु, आश्चर्य है, स्याद्वाद का हार्द पकड़ पाने में वे लडखड़ा गये। सत्य को पहचानने की समग्र दृष्टि के रूप में स्याद्वाद को न लेकर अर्ध-सत्य या अपूर्ण सत्य की प्राप्ति का साधन मात्र मानने के लिए ही वे तैयार हो सके। कुछेक विद्वानों ने स्याद्वाद को संशयवाद तक की संज्ञा भी दी। उनका निरूपण रहा, स्याद्वाद का अधिकारी सदैव यही प्रतिपादन करता

है कि 'यह भी हो सकता है, यह नहीं भी हो सकता है।' उन विद्वानों में ब्रह्मनूय के भाष्यकार श्री शंकराचार्य, भू पू राष्ट्रपति डा एम राधाकृष्णन्, सुप्रसिद्ध साहित्यकी विद्वान् प्रो० महलीनोबिस, कविवर डा० रामधारीसिंह 'दिनकर' आदि हैं। इन्हीं विद्वानों का अनुकरण करते हुए अनेक विद्वान् उसी विवेचन को अपने साहित्य में तथात्प ही दुहराते रहे हैं। मद्य प्रकाशित 'गान्धी युग पुराण' का स्कन्ध पात्र, खण्ड दो देखा तो यह धारणा विशेष पुष्ट हुई। डा० सेठ गोविन्ददास तथा डा० श्रीमप्रकाश शर्मा ने इस ग्रन्थ में स्याद्वाद का संशयवाद के रूप में विवेचन कर उन्हीं प्राचीन विचारों की पुनरावृत्ति करने का प्रयत्न किया है तथा कविवर श्री रामधारीसिंह 'दिनकर' ने इसी ग्रन्थ की भूमिका में उसकी पुष्टि करने का प्रयत्न किया



वे ही वस्त्र गर्मी में निम्नयोगी भी । एक प्रकार का भोजन एक व्यक्ति के लिए बल-व्ययक है और दूसरे व्यक्ति के लिए वही भोजन नाना व्याधिया उत्पन्न करने वाला भी । रेखा छोटी भी हो सकती है और बड़ी भी । यदि उम रेखा के पाम में बड़ी रेखा नीच दी जाती है, तो वह छोटी हो जाती है और छोटी रेखा नीच दी जाती है, तो वही रेखा बड़ी भी हो सकती है । तात्पर्य यह है कि, प्रत्येक पदार्थ, कार्य व व्यक्ति में मापेक्षता है, क्योंकि वह देश, काल आदि की सीमाओं में विरा रहता है ।

## विरोधी युगलो का सहभाव

पदार्थ मात्र में अस्तित्व व नास्तित्व जैसे विरोधी युगलो का युगपत् सहभाव महमा व्यक्ति को चक्कर में डाल देता है । उसका कारण यह है कि व्यक्ति का चिन्तन सर्व निरपेक्ष होकर चरता है, जबकि प्रत्येक व्यवहार अपेक्षा के साथ प्रतिक्षण वधा रहता है । व्यवहार और चिन्तन को उम खाई का अनुभव करने से व्यक्ति चूक जाता है । स्याद्वाद के साथ से यही आकर उसका मन्वन्व दूट जाता है और उलभन के साथ नशय का अनायान आरम्भ हो जाता है । यह सर्व सम्मत मान्यता है कि व्यक्ति निरपेक्ष होकर उमी समय अपने अस्तित्व को स्थिर रख सकता है, जबकि उसकी चित्तमत्ता सर्वथा विकसित होकर परिपूर्ण बन जाती है । जब तक इम स्थिति में नहीं पहुँचा जाता है, तब तक वह मापेक्षता को गौरव करने का मात्र केवल बहाना कर सकता है, पर उसका यथार्थ में निर्वाह नहीं हो सकता । और जब मापेक्ष स्थिति जीवन के लिए अनिवार्य बन जाती है तो अस्तित्व-नास्तित्व का स्वर्प न रहकर सहभाव हो जाता है । उदाहरणार्थ—जिस समय जिस पदार्थ के अस्तित्व पक्ष की विवक्षा की जा रही है, उसी पदार्थ के इतर पक्षों का नास्तित्व भी तो अभिवाच्य नहीं होता है । केवल मुख्य-गौरव का ही वहा प्रसंग होता है ।

भगवान् श्री महावीर ने प्रत्येक पदार्थ में प्रतिक्षण उत्पाद और व्यय का प्रतिपादन किया है । उत्पाद और व्यय का यह नैर्गन्तरिक सहभावो क्रम पदार्थ की दीर्घतायान पर्यायोनता में हेतुभूत होता है तथा उमको जीर्णता और नवीन उत्पत्ति के रूप में स्पष्ट होकर उदभन भी नमान कर देता है । उमी तात्पर्य तो स्पष्टता में उम प्रारण कहा जा सकता है, यदि प्रतिक्षण जीर्णता नहीं हाती है, तो केवल वही अन्तिम क्षण कीनता था, जिनमें वह सर्वथा जीर्ण हो गया । वही पदार्थ उम दूसरे पदार्थ में बदलता है, तो वह क्षण भी कीनता होगा जहा में उममें नवीन परिवर्तन का आरम्भ हुआ था । जीर्णता और नवीनता में एक ही क्षण की परिवर्तना यथार्थ नहीं है । नकली गड़ी-गड़ी कुछ ही वर्षों में मिट्टी में बदल जाती है । तो क्या यह कहे कि वह एक ही क्षण में व्याप्य ही पर्याय को छोड़कर मृन्मयता में बदल गई है ? प्रत्येक पदार्थ में उत्पाद व व्यय (नाश) का क्रम अनवरत सहभावी चलता है और यही विरोधी युगलो का मह चक्रमण स्वीकार करता है । उत्पाद और व्यय की प्रवृत्तमान परम्परा में पदार्थ का ध्रुवीकरण (ध्रुव्य) मुनिचित है, जो पदार्थ को मन् में अमन् में बदलने नहीं देता ।

## अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम

अनुभूति और अभिव्यक्ति दो पृथक्-पृथक् कार्य तथा परिणाम है । अनुभूति एकाग्रग्राही व सर्वाग्रग्राही के रूप में उभय पक्षी होती है । अभिव्यक्ति मदा ही एकाग्र का पक्ष प्रस्तुत करती है । ज्ञान के अनन्त पर्यव है और व्यक्ति अपनी निर्मल वृत्ति में यथामभव उन्हें अविशुद्ध करता है । अभिव्यक्ति शब्दों के माध्यम में चलती है, अत अनुभूति की पूर्णता तथा अधिकता होने पर भी वह एक अश को ही प्रस्तुत करने में मक्षम होती है । यही एकाग्रता सापेक्षता की अनिवार्यता अनुभूत कराती

है। क्योंकि जित्त अपणा स विपणा की जानी है उसी अप ता-विपण म ही ग्रहण करत समय मत्व का उपनयि हानी है अथवा साथ क परिपात्र म ही भ्रवाव हाता है। यना अपणा समस्त अनु भूनिया को एक साथ व्यक्त नहा कर सना और जिननी यह व्यक्त करता है उतना का मुनन वाता अधिग्रहण नहा कर सकता। जितना नी ग्रहण हाता है वह अपेक्षा के साथ मयुक्त हावर ही हाता है अन सत्य वा पत्ता अपेक्षा क साथ ही सदा बधा रहता है और यही माध्यम सकत हाता है।

### स्यादाद और सापेभवाद

मगजान् महावीर न प्रापरिक सिद्धान्त क रूप में स्यादाद का निरूपण किया और वर्तमान म विज्ञान क क्षेत्र म डा० ब्रूट आईस्टान न सापेभवाद क रूप में उगता विस्तार दिया। स्यादाद का विस्तार ज चतन तक हा अधिकांशतः सीमित रहा वहा डा आर्टीस्टीन न उनके साथ आराग क बाल को याजित कर उसा सिद्धान्त का विशयन प्राधुनिक शक्ती म प्रस्तुत किया। समाप्त की पनी त्रि म देयने पर पान होवा के महावीर का स्यादाद का सिद्धान्त डा० आर्टीस्टीन क द्वारा विरचित होकर विज्ञान क क्षेत्र म आया है। दोना ही सिद्धान्त की प्रस्तुत समानता विस्मय-कारक है। यदि स्यादाद क अधिकांश आचार्य जड-चतन आराग-बाल क अनन्तर धम (गतिज्ञानता का माध्यम) और धम (स्पिचिगीनता का माध्यम) इन दोनों तत्वा को और मयुक्त कर विवचन करते है ता यद्व्यर्थों क विवचन की नवीन शृंगता तो आरम्भ हानी हा है साथ ही स्यादाद क लेख म अभिभाव चिन्ता की परम्परा भी प्रादुर्भूत हानी है।

स्यादाद को मापवा क धम सत्य क रूप म विरचित करत का जिन विज्ञान न साम्भ किया आरचय है सापेभवाद क प्रति उनका उक्त मन्त्र

नहा बना जरकि तानों के निरूपण म शान्ति क अनन्तर के अनिरिक्त धम बुद्ध भा मौनिक अनन्तर नहा है।

### गल्ती क्यों हुई ?

सहज प्रश्न उभरता है बड़े-बड़े विज्ञाना द्वारा स्यादाद के विवचन म गल्ती कम हुई ? सबसे कुछ कारण हैं। स्यादाद शान्त का विभाण स्याद' और वा' इन दो शान्त का समन्वित म हुआ है। स्याद अव्यय है और इसके क धम हैं। सम्भावना विधान प्रश्न आति क अनिरिक्त कयचित् अपणा विपण क एक दृष्टि किसी एव धम (स्वभाव) की विपणा आति धम भा होत हैं। किन्तु आरचय है विज्ञाना का चिन्ता केवल सम्भावनात्मक धम तब ही सामित रहा और उहाने ंगी धम के आधार पर स्यादाद का सशयवा क रूप म निरूपण करत का प्रयत्न किया।

श्वराचाय क युग म शास्त्राय का दौर विशेष चनता था और एक आचाय दूसर आचाय के उपहास क लिए भी प्रस्तुत रहत थे। स्यादाद को मापवा क रूप म उपहास-मात्र बनाने का कल्पित मन्त्र प्राप्त कर क उसका प्रयोग करने क कस बूक सवन थ ?

भू पू० राष्ट्रपति डा० एस० राधाकृष्णन् तथा प्रा० महाबानाधीम उपहास-परम्परा म मवधा दूर हैं किन्तु श्वराचाय क सम्भावनात्मक धम का पुरी म व भी दूर नही ह पाय और उमी विवचन को शान्तान्तर स धपनी पुनर्वा तथा तत्वा म सुदृशत रह। भारत म गह्र और स्वतंत्र अनुसंधान की और चतन की प्रवृत्ति चल है और पूव मोडो की ही धपन विवचन म दुर्दान अधिब। महा बारण हैं कवित्र डा० रामधारीसिन्धुकर डा० सठ गाविष्णम आति भी इस

अपवाद नहीं रह सके और उन्हीं शूलों को उन्होंने ज्यों का त्यों दुहराया। उन्हें उन श्रुति का आशय तक भी नहीं हुआ।

डा० दिनकर तो इसमें भी आगे बढ़ गये हैं। उनका कहना है—“जैन धर्म मानता है कि मत्स्य को पहचानने का कोई निश्चित आधार नहीं है। अतएव हमें चाहिए कि हम अपने मित्रान्त में आशय-पाम सशय को मडगत रहने दें। सच्चा अहिंसक मनुष्य वह है जो बराबर यह मोचना रहता है कि समझ है, मेरा मानना गलत हो और विरोधी की मान्यता ही ठीक हो। हम सभी लोग विरोधियों को शका की दृष्टि से देखते हैं। अहिंसक व्यक्ति की विशेषता यह है कि वह अपने ऊपर भी शका करता है। इस मतवाद को जैन धर्माचार्य अनेकान्तवाद कहते हैं।” लगता है, डा० दिनकर मत्स्य के प्रवाह में स्वयं बह गये। उन्होंने जैन धर्म व दर्शन को उनके मूल आधारों में जानने का प्रयत्न ही नहीं किया। जिस धर्म के पास सत्य को पहचानने का यदि निश्चित आधार नहीं है तो क्या वह धर्म हो सकता है? उसका कोई दार्शनिक आधार बन सकता है और क्या वह परम्परा सहस्राब्दियों तक जनता व विद्वानों को आकर्षित कर सकती है? एक सच्चा अहिंसक न तो स्वयं को ही शका की दृष्टि से देखेगा तथा न वह विरोधियों को ही शका

की दृष्टि से देखेगा। सच्चा अहिंसक अतन्त्रता व आत्मस्थ होता है। जब तक उनका मत्स्य में साक्षात्कार नहीं होता है, पूर्ण अहिंसक भी नहीं बनता। जब यह अनिवार्यता है, तब अहिंसक के परिपार्श्व में शका या मत्स्य के मडगते का कोई प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। अनेकान्तवादी मत्स्य के केन्द्र में होता है। उनकी अनुभूति व अभिव्यक्ति मशयानीत होती है। वह जो भी निम्पण करता है, उनमें आधिकार पूर्णता अग्रगण्य है। महावीर ने अविश्वास-परम अहिंसा का कर्म भी विवेचन नहीं किया। उन्होंने अहिंसा माना ही नहीं।

डा० राधाकृष्णन् जब उपगच्छति ये, स्याद्वाद के उन्नी पहलू पर अगुणत परामर्श मुनिश्री नगराजजी, जी० नि० के नाथ उननी गम्भीर चर्चाएँ हुई थी। एक घण्टे के चिन्तन के बाद उन्होंने इसे स्वीकार किया कि स्याद्वाद पर अर्थ सत्य का मुत्ताटा लगाना उनके नाथ न्याय नहीं है। अब भी अपेक्षा है, भारत के विद्वाद् भगवाद् महावीर के स्याद्वाद की गहराई में उतरने का उपक्रम करें और प्राचीन श्रुतियों को दुहराने के चिरन्तन अभ्यास में ऊपर उठें, ताकि मत्स्य का अकुर किन्ती भी प्रकार में अनत्य की धूल से आच्छन्न न हो सके।

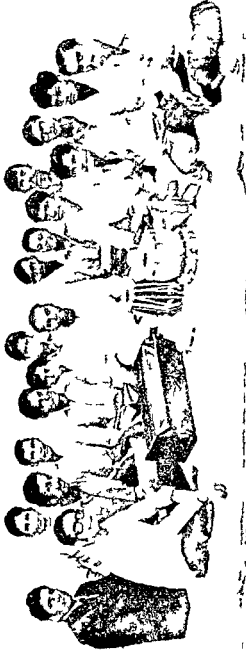
★★★

१ गान्धी युग पुराण, स्कन्ध ५ की भूमिका में



# ❀ श्री जैन मिल्स मण्डल, जयपुर ❀

-- सखीन-विभाग --



मण्डल के नवपठित मण्डल विभाग के सदस्यों के साथ विभाग के सभाजक श्री भागावचन्द्र गोयन्का तथा मन्-सभाजक श्री पतहर्षि शरडिया । इस वष पर्वधिराज पञ्चपण से भाद्र २ दिन पूर्व ही न्त विभाग का मन् किया गया था अपने अभावकाल में ही इस विभाग के अपने लोकप्रिय कार्यकर्ता द्वारा मन्-जन का हुय ।  
 नहा जाता है, बल्कि समाज में अपना प्रभुल स्थान बना लिया है ।





## कायोत्सर्ग और सामायिक

★ चन्द्रमन्त्र नागौरी, छोटी गान्धी (मेराठ)

महान् तपस्वी भगवान् महावीर ने तपस्या में बार बार कामोत्सर्ग ध्यान किया था। कायोत्सर्ग बाह्य व आन्तरिक शुद्धि कर आत्मशक्ति तथा बुद्धि का विकास करता है। किन्तु सामायिक की वर्तमान प्रचलित प्रथा में सुधार की आवश्यकता है, इस प्रथा से जो गई सामायिक चाह वह दशविरता हो या सवविरती यदि वह सम्पगज्ञान पूर्वक नहीं की गई है तो साभ्यामी नहीं होगी। इही विचारा का अवगत बनाने का प्रयास है—नागौरीजी की प्रस्तुत व्याख्यायुक्त रचना।

—सम्पादक

जैन धर्म क्रियाओं में कायोत्सर्ग का मुख्य स्थान है उसे छोड़ने बिना कोई मंत्र नहीं होना मन्त्रुगात्र काउत्सर्ग बिना कोई क्रिया नहीं होती। इसका मांग हेतु है कि हर क्रिया में मन बचन और वाचा व वाग्य की एकाग्रता मुख्य मानी गई है और धर्म ध्यान व शुद्ध ध्यान के बिना सब से प्रथम एकाग्र मन बनाना हाकर शरीर पर से ममता का त्याग करना और उत्तम करने ऊँची स्थिति पर पहुँचने का प्रयत्न करना इसी का नाम कायोत्सर्ग है। काउत्सर्ग के करने में ममाधी प्राप्ति है और बाह्य उत्सर्ग के साथ पर सहवर्गीयता रखने का गुण प्राप्त होता है, यह विचारणा और एकचित्त एक निष्ठा से रहना साथ सक्त्त है ध्यान परिणति स्थान भाव में रखने का पाठ मिलना है, और तीनों मार्गों को एक सूत्र में रखने का यह एक समुप साधन है जगद्विदे काउत्सर्ग करना अर्थात् तच्छे से सीपता चाहिये और स्वका अभ्यास करने

से पहिले काउत्सर्ग में लगने वाले शेषों को पूरे तौर से जान लेना चाहिये और सब दोषों को बर्हस कर लेना चाहिये जिससे हर क्रिया में दोषों का बचाव हो सकेगा, और याला बितायी ज्ञान होगा तो वह क्रियात्मक नहीं होने से तत्त्वान काम नहीं आ सकेगा इसलिये शेषों को अर्थात् तच्छे समझ कर उन पर विचारणा करने उनसे बचत रहिये, और जब सारी क्रियाएँ सतम हो जाय तब यह विचार अवश्य कर लेना चाहिये कि आज की क्रिया दाय रहित हुई है कि नहीं? जब इस तरह का अभ्यास करते रहेंगे तब किसी दिन अपने प्राण वह भाग मिल जायगा जिसकी प्राण में प्राण उत्सर्ग है।

कायोत्सर्ग बाह्य व आन्तरिक दोनों प्रकार की शुद्धि करता है ध्यान जनि का विचार करना है इसका करने से अज्ञान दूर होती है, किन्तु डि

होता है उसमें बुद्धि आती है, वायु प्रकृति बढ गई हो तो उसकी विषमता से मुक्त हो जाते हैं, मद बुद्धि होता है वह भी विचारवान हो जाता है, और भावना भी उसके माधन में शुद्ध बनती है, तब ही तो भगवत परमात्मा का बयान जो कल्प सूत्र में आता है उसमें यह जानकारी होती है कि भगवान ने तपस्या में बार बार काङ्गमग ध्यान किया था इसलिये इस त्रिया को बहुत प्रेम के साथ करना और इसके भेद भेदानुभेद गुरु में सीग लेना चाहिये, इस विषय का किञ्चित् स्वरूप आवश्यक सूत्र की निरूपित गथा १५४६ में जान लेना चाहिये और भी सूत्रों में, ग्रंथों में इस विषय का खुलासा बहुत मिल सकेगा। काङ्गमग मुद्रा में रह कर पूरे किये काङ्गमग में एकाग्रता आती है, एकाग्रता ध्यान का मुख्य अंग है, यह प्राणायाम का बीज है, वैसे ध्यान मार्ग में प्रवेश करने के कई तरह के योग बताये हैं आत्मा पर प्रभाव हो और आत्म गुरु ग्रहण करने में सहायता मिलने हेतु— ध्यान विधान बताया है, अतः इस विधान का शुद्धमान करना चाहिए।

सामायिक के तो अनेक योग बतलाये—परन्तु सब में मुख्य योग काङ्गमग माना है, काङ्गमग करते समय दोष न लग जाय इसे जानने को दोषों का वर्णन किया है। काङ्गमग मुद्रा के प्रकार भी समझने योग्य हैं। इच्छायोग साधू व श्रावक को एक सा होना कहा है। इस विषय के भेद भेदानुभेद अवश्य जानना चाहिए।

कायोत्सर्गानि सूत्राणां, श्रद्धा भेदादि भावत ।  
इच्छादियोग माफल्य देश सर्वत्रत स्पर्शान् ॥

भावार्थ—कायोत्सर्गादि, आवश्यक सूत्र पर श्रद्धा बुद्धि आदि भाव सहित देशव्रती या सर्व-विरती वाले मुनि को इच्छादि योग की सफलता प्राप्त होती है।

त्रियेष प्रकार में आवश्यक सूत्र में जो वर्णन दिया है, उस पर श्रद्धा हो और शुद्ध भावना हो तो उस तरह के सामायिक व्रत तमाम बातों की सिद्धि के लिये अमूल्य रत्न के समान हैं।

सामायिक की प्रथा जो वर्तमानकाल में प्रचलित है वह बदनीय एवं आद्रगणीय है लेकिन बहूत सुधार मागती है वर्तमानकाल के उपानकों ने ऐसे अमूल्यरत्न की कीमत करना नहीं मीठा, और येन केन प्रकारेण सामायिक करने की आदत ही रची फिर पह नैगमनय द्वारा हो या व्यवहारनय द्वारा हो मूत्र ध्येय एक ही रमते हैं कि सामायिक हो जाय तो अच्छा है, इस तरह के उपानक जितना कार्य की तरफ लक्ष्य देते हैं उतना निद्रि की तरफ नहीं देते, उनी कारण से सामायिक करने वाले सामायिक लेकर या तो माला फेर कर समय पूरा करते हैं, या पुस्तक वाच कर व्याख्यान के समय एक पत्र दो काज करते हैं या धर्म चर्चा में या स्तवन सभाय के घुमाने में, अपना पाठ याद करने में और सब से अंनिम घड़ी के मिनट गिनते या घड़ी की रेती हिलाने में समय पूरा करते हैं। इस तरह की क्रिया सबर पैदा करती हैं और निजंरा भी होती है लेकिन आत्मजाग्रति को स्थान नहीं मिलता, पडिक्कामामि, निद्रामि, गरिहामि श्रण्णण वोसिरामि के लिये जो प्रतिज्ञा ली गई है उसे पूरी करने का अवकाश तो मिलता ही नहीं और आत्मा को आगे प्रगति करने का रास्ता ही नहीं मिलता। अतः आत्म-जाग्रति के लिये जहा से उठे थे वहीं अपने आपको सज देवते हैं।

सामायिक के सुधारण के पाठ यथोचित नहीं पढाये जाते और किसी-किसी पाठशाला, बोर्डिंग अथवा गुरुकुल में तो सामायिक का करना फर्जियात रखते हैं, लेकिन यह अनुष्ठान तो मर्जियात किया जाय वही ज्यादा काम देता है हा यह बात मानने

जसी है कि फजियात म से मजियात हाना सगज बात है । लेकिन यह सज सज होना है कि तोता वाज पाठ न पढाये जाने ह्य और क्रियात्मक पद्धति नित्य बताई जाती हो जिसमे स्वाभाविक प्रम पदा ह्य कर शुद्धमान क्रिया होनी रहे तो आत्मजाग्रति की सम्भावना अवश्य हो सकेगा । जिस प्रकार आप अपनी आत्मावस्था म सामायिक करते थे उसी तरह यदि युवावस्था व वृद्धावस्था म भी करते रहें और आत्मजाग्रति की तरफ दुःख्य रखें तो समझ लीजिये कि जब क्रिया करना सीखा था काफी समय के बाद भी आप स्वयं को वहा पाएंगे । इस तरह की क्रिया ही होनी रहेगी तो पाली कायाकेश ही समभियगा ।

इस तरह की सामायिक दशविरती हो या सब विरती हो जो सम्यगानान पूर्वक नहीं है वह सामान्या नहीं हागी क्रिया अनुष्ठान तो ठास व सम्यगानान दृष्टि स ही होना चाहिये । खानी आठम्बर इसम काम नहीं देता यदि आप भी इस प्रकार की गलती करत ही हैं तो आप को पुन उस की पुनरावृत्ति नहीं करनी चाहिये । इस विषय म पचम अंग भगवत्सूत्र व आवश्यक सूत्र की नियुक्ति म गाया ७६९ म उल्लेख है कि सामायिक चार प्रकार से मानी गई (१) अत सामायिक (२) समकित सामायिक (३) देशविरति और (४) सब विरती । इन चारों म प्रथम जो अत सामायिक है वह भव्यमिध्यात्वी आत्मा को होती है और अमव्य आत्मा को भी द्रव्य से श्रुत का लाभ होना है जा कवन पाठरप होती है । ऐसी सामायिक करने वाला समकित दीपक के समान होता है जिसका स्थान प्रथम गुणठाणा है दीपक दूसरे की उजियाला बताने वाला होता है लेकिन खुद के नीचे अंधरा हाता है तदनुसार अमवी जीव भी जिन वचनानुसार प्ररपणा करता है दूसरे आत्माया को अण्डा माग बताता ह घम प्राप्त कराता है

और उसे किसी भी मूरत स थद्धा नहीं हो पाती अत प्रथम गुणठाणी होता है ।

दूसरी समकित सामायिक यान दशन सामायिक सम्यग्दृष्टि चोये गुणठाणे वाले श्रावक को हाती है । तीसरी देशविरती सामायिक वाला श्रावक पाचवे गुणठाणे और चौथी सबविरती वाला छठे व मानवें गुणठाणे मुनिमहाराज होते हैं इन चारों म श्रुत सामायिक पर ही यदि आप कदम रखे हुब हैं तो स्वयं सोच लीजिये कि आप किस जगह खडे हैं ।

जिन पुरुषों को ससारिक दशा का भान होता है वह अपन आप को उच्चगति म ने जाने जसा कृत्य क्रिया करत हैं उनके काय तौनिक नहीं होते, वह तो आत्महित के काम करते रहते हैं जिन मनुष्या को नित्य प्रति हित शिक्षा मिलती रहने पर भी धम माग और सामायिक जैसे रत्न स प्रेम नहीं हो पाता उनके त्रिय ममभिये कि उनकी ससार दशा अति कार्मी है । सासारिक जीवात्माया का उल्लेख करते हुय यह बताया गया है कि एक आत्मा ऐसी होती है जिसको सघन रात्रि की उपमा दी गई है जिस प्रकार मेघ की घनधोर घटा से आच्छादित अभावस्था की रात्रि म कुछ भी नहीं दिखाई पडता है उसी प्रकार आत्मा को प्रगाढ मिध्यात्व के उदय स तीव्र मोहिनी की प्रबलता के कारण किसी भी तरह का हित अहित सत्यासत्य श्रुत्याहृत्य की सूझ नहीं हो पाती । इसलिये ऐसे जीव प्रथम गुणठाणी भवाभिनदी मिध्यात्व-दृष्टि वाले हात हैं, इसी कारण वे सुनकर समझकर चुप बठते हैं ऐसे जीवा म क्रियाश्चि व प्रेम और अद्धा का अभाव हाता है ।

दूसरी प्रकार की जीवात्मा अघन रात्रि के समान होत हैं जैसे मेघ के बादल रहित रात्रि में कम दिखाई देता है, इसी तरह वह आत्मा मिध्यात्व

की कुछ नष्टता या मदता के कारण, मोहादिक के किञ्चित् क्षयोपशम से धर्म की और अग्रसर होती है, उसे धर्म के प्रति स्वाभाविक प्रेम होता है। ऐसे जीव मार्गानुसारी कहे जाते हैं।

तीसरी जीवात्मा सघन दिन के समान बतायी गई है, जिस तरह सूर्य का उदय होने पर भी बादलो से आच्छादित हो जाने ने वह दिखाई नहीं देता है, तथापि रात्रिकाल से अधिक प्रकाश होने के कारण घटादि वस्तु रात्रि की अपेक्षा अधिक स्पष्ट दीखती है, इसी तरह मे मिथ्यात्व के क्षयोपशम के कारण जीव, सम्यग्रदृष्टि हो जाता है और चोथे गुणगणने होकर अनुक्रम से बारहवें गुण गणने तक जाता है।

चौथी अघन दिन के समान बतायी गयी है अर्थात् बादल रहित आकाश हो, और सूर्य का पूर्ण

प्रकाश हो रहा हो निर्मलता दीयती हो, ऐसी अवस्था आठ कर्म का ध्य करने वाले केवल-ज्ञानी, जो पूर्ण प्रकाशी होते हैं उन्ही को प्राप्त होती है।

इस तरह मे चार प्रकार के आत्माओं मे जो पहले दर्जे पर ही गढे होंगे उन्हें वीतराग के बताये हुये मार्ग मे प्रेम करने हो मकता है? जहा भवाभिनदी का राज चलता हो वे जीव कैसे मुधर सकते है। मुधरेगें तो वही कि जो पुदगलानदी चोथे पाचवे गुणगणने वाले है, या आत्मानदी जो छठे मातवें गुण गणने है, वारी भवाभिनदी को समझ आना नो बहुत मुश्किल है, अत भव भीऊ आत्माओं को आत्म नापन की तरफ लक्ष्य देना चाहिये यही प्रार्थना है।

★★★

## आनन्द, आनन्द और आनन्द

आनन्द, आनन्द, आनन्द, माम की हर ध्वनि के साथ आनन्द, आनन्द, आनन्द। पयिक। आख खोल कर देखो, आनन्द का देवता तुम्हारे रवित्तम कपोलो पर अमृत का सीचन करना चाह रहा है। किन्तु चिन्ता पिशाचिनी की काली रेखा उमे पनन्द नहीं है, उसे धो डालो। इसका कलक तन पर ही नहीं, मन पर भी लगता है। उठो। आलस्य मत करो। मस्तिष्क से नई खोज करके इसके धन्वे को विल्कुल साफ करो। जीवन भार नहीं, उपहार है, निष्प्राण बन कर वजन मत डोओ। आनन्द का भण्डार तुम्हारे हाथ मे है। चावी का प्रयोग करो। खुलने मे देर नहीं लगेगी। अ धेरे के बादल प्रकाश की किरण बन जाएंगे। अम्बुदय और निश्र यस के सारे द्वार खुल जाएंगे। ससार की सारी निवियाँ पलक बिछाये आतुर हृदय से तुम्हारे स्वागत के लिये खडी रहेगी। सास की हर ध्वनि के साथ यह स्वर उठना चाहिये, आनन्द, आनन्द, आनन्द, आनन्द।

—मुनि श्री राकेशकुमार जी

# एक चिन्तन

\* गणेशलाल महता

मनुष्य आज अपने स्वार्थों के जाल में फसा है वह अपनी इच्छा, प्रतिष्ठा, स्वाथ सुख और भोग की भावनाओं में इस प्रकार घिर गया है कि अर्थ कोई श्रेष्ठ कल्पना ही उसके मस्तिष्क में प्रवेश नहीं पा रही है। जब तक वह अपनी कामनाओं और इच्छाओं की कद से मुक्त नहीं होता निज स्वाथ रूपी कट कण को तोड़ नहीं डालता, जब तक उसे शान्ति और सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती।

उक्त प्रसंग पर प्रस्तुत है जयपुर के श्री गणेशलालजी महता द्वारा एक विचार-चिन्तन।

—सम्पादक

सभी जीव सुख चाहते हैं और बचपन से बढावस्था तक क्रमशः मा पत्नी सन्तान विद्या धन धन में ही हमने सुख माना लेकिन अन्त में धन भी सुख की गरज पूरी नहीं कर सका, और अपने अन्त सारे प्रयत्न से समता व आनन्द प्राप्त होय लगा। इस अन्त की बात कारणों व अनेक जन्मों की ओर ध्यान न देकर परदृश्य परपदाय में सुख की चाह ने भौतिक साधना की ओर आकृष्ट किया। भौतिक साधन समृद्धि के विकास के उपरान्त जीवन में विषमता जटिलता अविश्वास एवं उन्मत्तता बढ़ रही है। भौतिक उन्नति के उत्तर देश अमेरिका में ये विषमताएँ—भौतिक अभाव और भी ज्यादा हैं। भौतिक उन्नति के विकास का पाया जब तक नतिकता के आधार पर खड़ा नहीं होगा तब तक इन विषमताओं का अन्त नहीं। शान्ति प्रगति के

लिए नतिकता का आधार मूल है, और वह है प्रकृति की अणुशक्ति की अपेक्षा अपने आत्म स्वरूप (आत्म शक्ति प्रभुता आनन्द) को सही समझना व तदनुसृत प्रवृत्त करना। जहाँ आत्म स्वरूप की समझने की प्रवृत्ति हुई कि शाश्वत शुद्ध चिदानन्द स्वरूप प्राप्त जिनश्वरा के जीवन वाणी (तत्त्व) आचरण प्राप्ति एवं तदनुसृत शान्ति समता अंतरात्म्य शुद्ध बुद्ध मुक्त बनने की इच्छा प्रयत्न हो उठती है। आत्म स्वरूप के सामने ये भौतिक साधन धन कुबेर की दौलत, इन्द्र का पद भी अनित्य एक अन्तकाल तक सत्कार में नष्टानवाला महसूस होने लगेगा। सृष्टि मही रहेगी दृष्टि में केर पद जायगा और यह केर पडते ही आचरण दुखी के प्रति कष्टना अपने से कमजोर के प्रति कीमलता अपने कष्टना एवं विकार दाय करने की

तीक्ष्णता एव शरीर, सम्बन्ध, सयोग, ससार, चक्रवर्ती का राज्य, धन कुवेर की दौलत, इन्द्र के पद के प्रति भी उदासीनता भलक आयेगी। ससार में रहते हुए भी ससार आपमें नहीं रहेगा। जैसे फिटकरी गढ़े जल में से कादव को नीचे विठा निर्मल जल को ऊपर ले आती है। साधुन जैसे मैल को साफ कर देता है वैसे ही आत्म-ज्ञान जीवन की विपमताओं के लिए एकमात्र अचूक औपध है।

सत व ज्ञानी इसीलिये कहते हैं कि आत्म स्वरूप को जानने श्रद्धा व तदनुकूल आचरण विना अन्य जो कुछ भी, यहा तक कि अणु परमाणु की शक्ति, चन्द्र यात्रा, प्रेक्षापाशस्त्र व समुद्रतल की खोज एव समुद्रतल में विचरण सब वेकार हैं कारण मानव जीवन में सतोप, समभाव, शान्ति के विना ये शक्तिया उपलब्धियों के स्थान पर विनाशकारी भी बन जाती हैं। हिरोशिमा काण्ड आदि में व पूर्वी व गाल में हो रहे नृशस नर सहार एव अत्याचार इसके प्रमाण हैं।

जितनी दौड-शक्ति, समय भौतिक उपलब्धि की ओर है उसका आठवा हिस्सा भी अगर अपने आपको समझने, जानने में व्यय हो तो महान गुणकारी एव लाभकारी सिद्ध होगा। विदेशी गुलामी के बाद स्वराज्य में भौतिक साधनों की दौड में नैतिकता का अद्य पतन हो गया है इसलिये इस ओर अपने व जनता के व अन्तोगत्वा विश्व के भले के लिये शासक वर्ग को ही जीवन व शासन दोनों में नैतिकता को पुन जीवित करना चाहिए और नैतिकता व आत्मस्वरूप की हितकर शिक्षा प्रणाली को अविभाज्य अंग बना देना चाहिये तभी हर विपमता जटिलता का उपाय ज्ञान, वैराग्य से अहंकार और स्वार्थ से ऊपर आत्मस्वरूप की प्राप्ति के लक्ष्य में कष्टेणा, कोमलता, तीक्ष्णता एव उदासीनता रूप मार्ग सहज ही सब जीवों के लिये कल्याणकर हो जाए। विपमतायें या जटिलतायें

कौटुम्बिक, मामाजिक, राष्ट्रीय जीवन में कम होने से आये दिन हडताल तोडफोड विनाश की कार्यवाही के वजाये मृजन, रक्षण एव विकास का मार्ग प्रशस्त होगा और भूतकाल में भौतिक व आध्यात्मिक समृद्धि का देश भारत फिर से विश्व को मार्ग दर्शन दे सकेगा। मच्चा व्यापार भौतिक तरक्की के साधन, टेकनोलोजी का जहा आयात होगा वहा जीवन की मूल आवश्यकता, शान्ति, ममता वीतरागता, आत्मस्वरूप के ज्ञान, श्रद्धान एव आचरण (जीवन पद्धति) का मुख्यत निर्यात होकर अविश्वाम का वातावरण कम होगा। रक्षा के नाम पर विनाशकारी उत्पादनों में हो रहा व्यय, सृजनात्मक एव सुविधात्मक कार्यों पर लगकर धरती को स्वर्ग बना देगा। इस प्रकार दृष्टि के पलटते ही यही सृष्टि कल्याणकारी हो जायगी।

शासक वर्ग के मन और प्रयत्नशील होने तक जैन समाज को मार्ग दर्शन एव मार्ग प्रशस्त करना चाहिये। यह कार्य दो प्रकार में किया जा सकता है।

(१) जैन समाज का जो अंग अपने यहा स्वयं एव बच्चों के आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति करीब करीब उदासीन है उसे योजना बद्ध तरीके से नियमित एव अवाधरूप से इस ओर तुरन्त प्रयत्नशील होना चाहिये। यही कसौटी द्रव्य धामिक कार्यों में भावों की अभिवृद्धि, विषय कपाय विकारों के स्थान पर शान्ति समता वीतरागता आदि हैं।

(२) समाज का वो अंग जो ज्ञान को बहुत महत्व देता है—उन्हे यह न भूल जाना चाहिये कि ज्ञान की प्राप्ति स्वयं व्यवहार से होती है और जब तक वे गृहस्थ हैं। सामाजिक व्यवहार ही उसका बाहरी रूप है गृहस्थ छोड़ मुनि हो जाय—आत्म-ज्ञान में लीन रहे—आत्म-कल्याण के इस परम पुरुषार्थ को हमारा सहस्त्र वदन। लेकिन

दृश्य रहे ता—अपने पक्षेय। एक मन की पर-  
 द्रव्य परप्राय म गुण महगुण करने हूये  
 कीदुम्बिक गामाजिन व्यवहार का छोड़ सिध जान  
 का चर्चा करें ता कामन्व म जान ना उत्पाद व्यय  
 प्रीठय युक्त म सारा धा गया—इसाक ममभन म  
 सारा जीवन बिना घोर व्यवहार पण म गामाजिन  
 मानविर नतिवता शुद्ध शुद्ध मुक्त क राह पर  
 मागानुसारी न बन पायें तो आत्म प्रवचना  
 बहमायगी। आचरण जान की बनोगी है।  
 आत्मजान व तन्तुरूप आचरण ही ठोग नीव पर  
 आधारित सर्वोप्य माग है जा म सागतवा स्वाधीन

अपने अणव स्वराग्य प्राप्ति स्वरूप प्राप्ति की  
 कामता रगता है।

एक प्रकार जान व तन्तुरूप वराग्य कामित  
 नतिव मार्गानुगारी जावन निरवय ही आमर वय  
 की प्रेरणा देगा। घोर मदबुद्धि देगा। अपने जीवा  
 आगन म नतिवता की प्रतिष्ठित करें व शिवा म  
 इस व आत्मस्वरूप के जान को अविनाय अण  
 बनार्ये ताहि विरय शान्ति का माग प्रगस्त हो।

'सम्बोधिका' के माध्यम से हम करने आचरण  
 सम्बोधित कर थडा पूवन शुद्ध आचरण करें यही  
 कामना है।

★★★



## महान् शत्रु—आलस्य

'मावधान रणे मावधान रहा जीवन का एक महान् शत्रु बर्णन का जान बिदाये  
 माग म गया है। प्रारम्भ म वह बडा मधुर व्यवहार करता है किन्तु अचरत वातर पीरत  
 धान जाय म पगा सेता है व मग के निग धरना बनी बना सेता है। मिन ! वह शत्रु है  
 आलस्य'। निराशा अचमध्यता घोर शरित्ता ये तीना उगरी अग्निप्र महारिणिया है।  
 त्रिग तरह पुण क माय अग्नि का होना निरिचय है उसी तरह उमरे साय इन तीनों का  
 हाना भी विस्तुष निरिचय है।

पवित्र ! विद्याम का प्रनामन देकर वह तुम्हें बार बार रोदने का प्रयाग करेगा।  
 किन्तु प्रगति तुम्हारा जीवन धर्म है। यदि एक बार भी तुम उमर आमर जादू म पण मये  
 तो मग के लिये करने मार्ग मे अज्ञ हो आयोग। करने वाला रण के लिये रत जाजा है।  
 साथे। परती मचना मार उठागी है। किन्तु उगे हजारों पुरगार्थी घोर अमठ मनुष्यों व  
 एक आचरणी का मार अधिक मागुम होता है।

—मुनि श्री रावे शत्रुमारजी



## दक्षिण भारत के जैन आचार्य

★ आचार्य तुलसी

बहुचर्चित पुस्तक 'अग्निपरीक्षा' के रचयिता अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी, नागपुर में गत वर्ष "अग्नि परीक्षा" को लेकर हुये उग्र आन्दोलन से पूर्व दक्षिण भारत की यात्रायें पधारे थे।

दक्षिण भारत में जैन सस्कृति के अवलोकन पर आधारित आचार्यश्री का यात्रा-संस्मरण यहाँ पाठको के लाभार्थ प्रस्तुत है।

—सम्पादक

जैन दक्षिण भारत की यात्रा कर उत्तर में आया हूँ। मैंने वहाँ जैन धर्म के बारे में जो देखा, वह अपूर्व था। जैन साहित्य और पुरातत्व दोनों की प्रचुर सामग्री दक्षिण भारत में आज भी विद्यमान है। वहाँ के बुद्धिजीवी लोगो में जैन साहित्य के प्रति प्रकृष्ट आदर का भाव है। किसी भी साहित्यकार से जैन ग्रन्थों के विषय में आदर पूर्ण उद्गार सुने जा सकते हैं।

जैन धर्म के अवशेष यत्र-तत्र देखने को मिल जाते हैं। बाहुबली की मूर्तियों की प्रचुरता है। जिस भाग में आज जैन नहीं रहे, वहाँ भी खेतों तथा कुओं की खुदाई में अनेक जैन प्रतिमाएँ निकल आती हैं। एक व्यक्ति के खेत में एक जैन प्रतिमा निकली थी। वह उसे बहुत महत्व दे रहा था। एक गाव के बाहर हमने देखा बाहुबली की प्रतिमा

गड़ी है। वह किसी अन्य देव के रूप में जनमाधारण द्वारा पूजी जा रही है।

हम लोग एक छोटी नदी के पुल से गुजर रहे थे। उसके दोनों पाश्वर्कों में बड़े-बड़े पत्थर लगे थे। निकट से देखने पर पता चला कि वहाँ कुछ प्राचीन मूर्तियाँ हैं और उनमें कुछ जैन मूर्तियाँ हैं। वे काल की लम्बी अवधि में घिसती-घिसती काफी घिस चुकी हैं। दक्षिण के पुरातत्व विभागों में हमने ऐसी मूर्तियाँ देखीं, जिनमें सलेखना और अनशन की पद्धति अंकित है। भगवान् ऋषभ की जटाधारी प्रतिमा भी वहाँ देखने को मिली। जैन मंदिरों और गुफाओं के परिवर्तित रूप की अनेक जनश्रुतियाँ हमारे सामने आईं। मदुरा के पार्श्ववर्ती पहाड़ों में जैन गुफाओं में तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। अब उनमें शिवलिंग स्थापित किया जा चुका है।

साहित्य पुरातत्व के अक्षेप और बच्चे हुए जन श्रावक को दानने म पता चलता है कि किसी दिन यंग जन धम उत्तर भारत की तुलना म अधिक प्रभावशाली रहा है। जन आचार्यों तथा जन मनीनियया न माया साहित्य महृनि, जन-जीवन और राजनीति-जन सभी पर अपना प्रभाव डाला है। तमिल के आचार शास्त्र के निर्माण म मुख्य योग जन धम का रहा है। हिंदी जगत म आ म्यान मूर तुलसी कवीर और मीरा का है वही तमिल और कन्नड साहित्य म जन विज्ञाना का है। उनका प्रया को पड विना उन मायाओं के आदिवाल का महत्व समझा ही नहीं जा सकता।

मैंने एक-एक भट्टारवा के प्रयागार देखे। धात्र भी उनम काफी प्रच्य हैं। उनम से बहुत मारे अप्रवाणित भा हैं। इन सारी स्थितिया का प्रत्यक्ष अवलोकन करन पर मुझे लगा कि दक्षिण भारत के जन आचार्यों न धम का व्यापक दृष्टि म प्रसार

किया। उन्होंने श्वेताम्बर सिगम्बर की दृष्टि को प्रधानता नहीं दी उनका दृष्टिकोण जन धम पर ही आधुन रहा। यंग कारण है कि मूलत दक्षिणमाया जना म मुझे साम्प्रदायिक भेद भाव लगने का न। मित।

दूसरी बात-उत्पति जन तथा को काव्या क माध्यम से हम प्रकार सावजनिक बना लिया गि गिण भारत के नीतिप्रदो व अचार प्रया म उनका मुख्य स्थान हा गया।

मैं दक्षिण भारत की अपनी माया के रोगन यहा के पूर्ववर्ती जन आचार्यों की शासन सेवा देखकर हृष-विमोर हो गया हू। मम मन्त्र आचार्यों मुनिया व विज्ञान् श्रावकों के प्रति उदा-भाव उनकी बान्धविकता को हृदयगम करन ही किया जा सकता है।

★★★

## जोहरियों से

जवाहरात क पारसी जोहरियो ! इन ककड-पत्थरों को रत्न समझ कर बहुत दिन भटक लिए पागन हो गिण। अब जरा इन जीत-जागते मानव-पथारी हीरा की परग करो। दुस है कि तुम जड़ ककड-पत्थर परसते रहे और इधर न जान कितन अनमोन रत्न धूल मिल गए ! वह धनी धनी नहीं पापी रागता है जो मवा करने योग्य घन रगत हुए भी किसी को भ्रम स बिलविनाता हुमा देगता रहे और कुछ भी न कर !

—उपाध्याय अमरमुनि

समन्वय का अद्भुत मार्ग

## अनेकान्त

★ अग्रचन्द्र नाहटा, बीकानेर

जैन दर्शन की प्रमुख विशेषता 'अनेकान्तवाद' में स्पष्ट रूप से निहित है। 'सत्य के अनेक रूप' को स्वीकार करने में सम्पूर्ण जैन दर्शन बहुत ही उदार रहा है। एकाग्रहण हठ सत्य नहीं होता। हमारे व्यावहारिक जीवन में एक ही घटनाक्रम की सत्यता, अनेकता लिये हुए सदैव प्रस्तुत रहती है। खुले दिमाग से विचार करने के लिये यह आवश्यक भी है।

जैन समाज में शोधपूर्ण कार्य के लिये प्रख्यात श्री अग्रचन्द्र नाहटा द्वारा प्रस्तुत विचार-त्रिन्दु आपके समक्ष प्रस्तुत है।

—सम्पादक

जगत में जड़ और चेतन दो पदार्थ हैं। सारी सृष्टि का विकास इन्हीं पर आधारित है। जीव का लक्षण "चैतन्य-मय" कहा गया है। जिस वस्तु में चैतन्य नहीं, वह जड़ है। विचार चैतन्य के ही हो सकते हैं, जड़ के नहीं। जीव अनन्त हैं, स्वस्वत समानता होते हुए भी सन्कार, कर्म और बाह्य परिस्थिति आदि अनेक कारणों से उनके शारीरिक व मानसिक विकास में बहुत ही अन्तर नजर आता है। एक जीव से दूसरे जीव की आवृत्ति नहीं मिलती। ध्वनि, अवयव, प्रकृति, रुचि, इच्छाएँ आदि सभी बातों में एक दूसरे में कुछ न कुछ

अन्तर रहता है। इसी कारण सब की पृथक् सत्ता है। जैन दर्शन मानता है कि-अन्य कई दर्शनों की भाँति जीव एक ही ब्रह्म के अंश नहीं हैं। न कभी किसी ईश्वर ने उसे पैदा किया, न वह ईश्वर कर्म फल ही देता है। जीव अनादि हैं, उनका स्वयं अस्तित्व है, स्वयं कर्म करता है और स्वयं ही भोगता है। उत्थान और पतन की सारी जिम्मेवारी उसी की अपनी है। वधन और मुक्ति स्वकृत हैं। वह चाहे, तो ममस्त वधनों को तोड़कर शुद्ध बुद्ध सर्व शक्ति सम्पन्न बन कर मोक्ष व परमात्मपद को

या सक्ता है। दूसरे व्यक्ति द्रव्य व भाव तो निमित्त मात्र हैं। उपादान वह स्वयं है।

अनन्त जीवा का पृथक्-पृथक् अस्तित्व है ता बर्णों धारणों की विविधता और कमीवैशी से उनके विचारों में भी विभिन्नता रंगी ही। पृथक्-पृथक् जावा की बात जान दीजिए एक ही मनुष्य में समय-समय किन्ने विचार उत्पन्न होने हैं बढ़ना के तो उन विचारों में कोई सामंजस्य नहीं होता। अथवा और परिस्तिथिया आदि के बन्त जान पर उसके विचारों में गहरा परिवर्तन हो जाता है। हम यह कल्पना ही नहीं कर सकते कि प्रमुख व्यक्ति के विचार आज जो कुछ हैं उनके थोड़े समय और थोड़े वर्षों पहलू उसमें मजबूत विपरीत थे। आसपास के वातावरण व्यक्तियों का और घटनाओं का उस पर जबरन प्रभाव पड़ता है। जब एक मनुष्य की ही मूल्य हालत है तो समस्त जीवों के विचारों में साम्य बनी हो ही नहीं सकता। विपरीतता में समता किस स्थापित की जाय? हम पर उन तीर्थकारों ने विशेषतः भगवान महावीर ने बन्त ही गम्भीर चिन्तन किया है। उन्होंने अपने चारों ओर देखा कि विचार विभिन्नता के कारण प्रवृत्ति विभिन्न जाती है और एक दूसरे को विरोधी मान कर लोग परस्पर में भगड़ते हैं व टकराते रहते हैं। घर-घर में बाप बेटे में पति-पत्नी में भेद व विरोधी भाव हैं, भाए में अन विभिन्नताओं से सघन कलह, वर-विरोध युद्ध घृणा जाव हिंसा आदि नजर आ रहे हैं। धर्म जो आत्मा का माप है उसमें भी यहाँ हीनता सुनग रहा है। व्यक्ति दूसरा व विचारों को ठीक न समझ कर उसमें द्वेष करने लगता है।

भगवान महावीर ने जगत् के प्राणीयों में जो हिंसा की भावना बढ रही थी उस राग का उपचार पहिला रूपी धर्मन में किया। सामाजिक व आर्थिक ऊच नीचता को भ्र-भाव और मनुष्य की संपूर्ण

तुष्णता व नि का स्वाज अपरिग्रह बतनाया तो विचारों की विपरीतता में समन्वय करने का प्रयत्न और सुगम उपाय अनेकान ही स्थापना है सन्ध्या नहीं अनन्त गान तिमिन भीति न। पर वस्तु स्वयं क वास्तविक जान का वह सच्चा द्वार है और विचार वषम्य में समता स्थापित करने का एक मात्र तरीका है। चू कि हर एक वस्तु और जान के अन्त पहलू जान हैं। जब तक उसक समस्त पहलुओं पर विचार न किया जाय उस का जान भ्रात और अप्रगण हा रहगा और अप्रगणता और भ्राति का पूणता और सत्य मानकर ही मनुष्य अपने विचारों और स्थापनाओं का आग्रह बन जाता है। मैं जो कुछ कहता हू विचार करता हू वहा ठाक है दूसरे के विचार और सिद्धान्त मिथ्या हैं गलत हैं यही एकान्त है और अन दशन में हम सबसे बन्त पाप-मिथ्यात्व बतनाया गया है। मिथ्यात्व का अर्थ है झूठापन वस्तु के वास्तविक जान के विपरीत बात को सत्य मानकर मताग्रह बनना।

वस्तु अनेक धर्मात्मक है। अपेक्षा में से एक ही वस्तु में अनेक धर्म रहे हैं उन सब की ओर लक्ष्य न देख केवल एक ही धर्म या बात को वस्तु का पूरा स्वरूप मान लेना भी मिथ्यात्व है। एक ही मनुष्य अपने पुत्र की अपेक्षा पिता है भ्राता का भनीजा है, मामा का भानजा है शिष्य का गुरु है और गुरु का शिष्य है। इस तरह के और अनेक सम्बन्ध उस एक ही व्यक्ति में भिन्न भिन्न अपेक्षाओं से रहते हैं। अनन्त उन मार दृष्टि भंगी और अपेक्षाओं को स्वीकार करता है एवं म्यापन द्वारा प्रतिपादन करता है। पर एकान्तवादो यह आग्रह कर बन्ता है कि यह तो पिता ही है पुत्र नहीं और ऐस एक-एक का नकर अनेक व्यक्ति भिन्न-भिन्न प्रकार व आग्रह कर बढते हैं तो उन सब में एक सघन छिा जाता है। व एक

दूसरे के विचारों का समझने का प्रयत्न नहीं करते ।  
 आखिर दूसरा व्यक्ति अपने में भिन्न विचार रखता है और उसे सत्य मानता है तो उसका भी तो कुछ न कुछ कारण अवश्य होना चाहिए । जिस प्रकार हम अपने मन्तव्य को सही समझते हैं, उसी प्रकार हर एक व्यक्ति भी अपने मन्तव्य को सही समझता है, वास्तव में दोनों ही एकान्तवादी हैं, क्योंकि जिस दृष्टि से एक का मन्तव्य सही है, वह दूसरे की दृष्टि से सही नहीं है । अतः यही कहना ठीक होगा कि अपनी-अपनी दृष्टियों से हर एक के मन्तव्य अशत सही हैं । इसी प्रकार इष्ट-अनिष्ट प्रिय-अप्रिय, मुख-दुःख, सत्-असत्, नित्य-अनित्य, दैव-पुरुषार्थ आदि सभी विरोधी प्रतीत होने वाले तत्वों का भी समन्वय अनेकान्त दृष्टि से महज में ही हो जाता है । अनेकान्त दृष्टि को अपनाते पर परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाले उन नातों में विरोध के लिए कोई स्थान न रहेगा । इसलिए समन्वय के अद्भुत मार्गरूप अनेकान्त दृष्टि को सदा मानने रखकर जीवन में आने वाले प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक, दार्शनिक, राष्ट्रीय और इसी प्रकार अन्य सभी समस्याओं का हल ढूँढना चाहिए । मेरा दृढ़ विश्वास है कि इसके द्वारा प्रबल विरोध भी सरलता से अविरोध में परिणत किया जा सकता है ।

जैन दर्शन में अन्य दर्शन एवं धर्मों का किस तरह अद्भुत समन्वय किया गया है इस के दो उदाहरण देने आवश्यक समझता हूँ । जैन धर्म में रत्नत्रय—ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य की आराधना को मोक्षमार्ग बतलाया है । इसमें समस्त धर्मों व मार्गों का समन्वय हो जाता है । भक्ति मार्ग का दर्शन में,

वेदान्त आदि ज्ञान मार्ग का ज्ञान में, और योग एवं कर्म मार्ग का चारित्र्य में समन्वय होता है । वास्तव में वस्तु स्वरूप का ज्ञान ही सम्मग ज्ञान है, उसकी प्रतीति कराने वाले तीर्थंकरों आचार्यों आदि महापुरुषों की श्रद्धा भक्ति है । सच्चे धर्म की श्रद्धा व आदर ही समान दर्शन है, एवं हेय-पाप कार्यों का त्याग और उपदेश-धर्मानुष्ठानों का अभ्यास ही चारित्र्य है ।

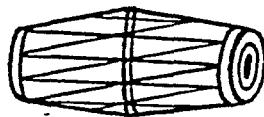
इसी प्रकार जैन दर्शन में द्रव्य का तक्षण उत्पाद, व्यय और ध्रुव त्रिगुणात्मक माना है । समार ६ द्रव्यों का समूह है । सागरी प्रकृति इन द्रव्यों के गुण पर्याय पर ही आश्रित है । वैदिक दर्शन में सृष्टि के उत्पादक, सञ्चालक या रक्षक तथा विनाशक तीन शक्तियों को ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश इम प्रकार तीन देवता मान लिये गये हैं । ब्रह्मा उत्पादक हैं, विष्णु रक्षक व पोषक व महेश विध्वंसक । वास्तव में ये तीनों उत्पाद, व्यय और ध्रुव रूप त्रिपदी के रूपक से ही लगते हैं ।

इसीलिए योगीराज आनन्दधन जी ने अपने नामि जिन के स्तवन में पट् दर्शनों को जैन दर्शनों का अ ग बतलाते हुए लिखा है, पट् दर्शनं जिन अ ग भजीजे ।

“जिनवरमा सगला दर्शनं छे, दर्शनं जिन भजनारे”

सागरमा सगली तटिनी सही, तटिनी मा सागर भजनारे”

★★★



मण्डल द्वारा यवस्थित विशाल, ऐतिहासिक शोभा-यात्रा का एक दृश्य



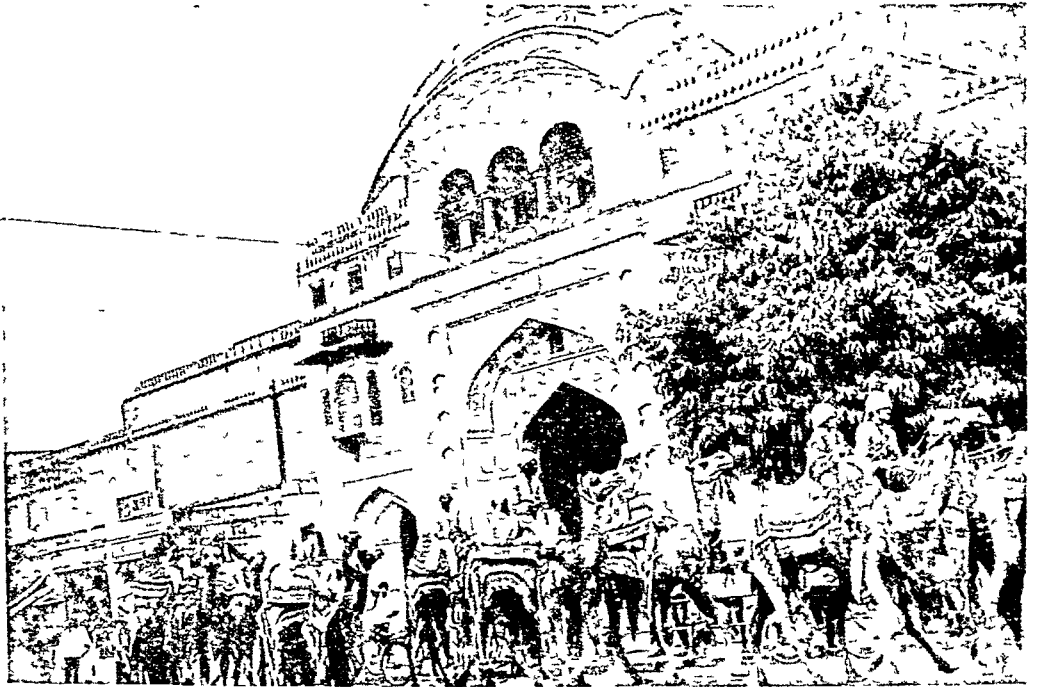
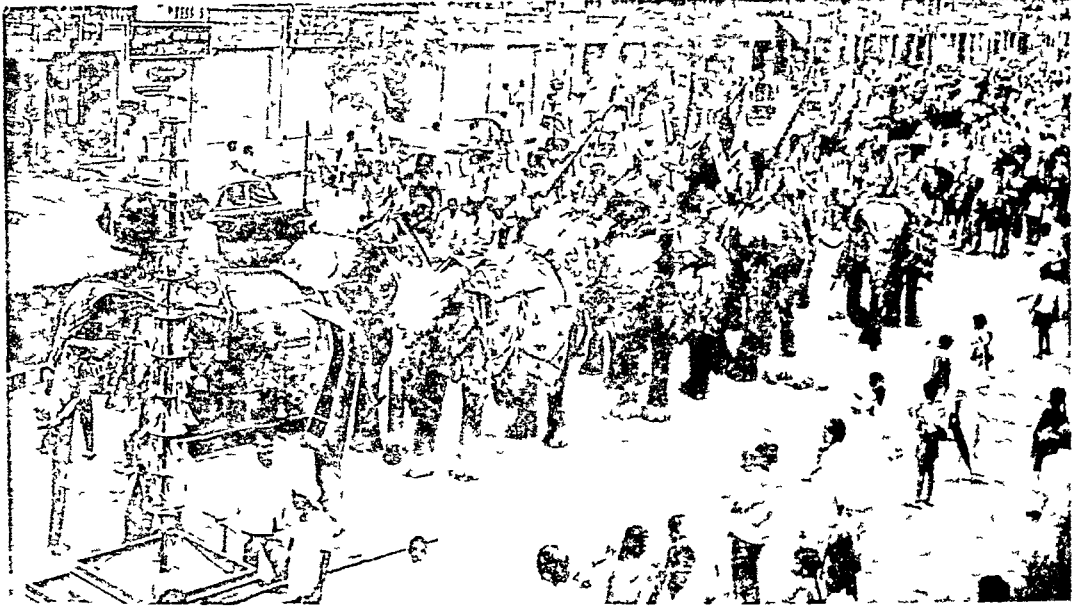
विगत नवम्बर मास मे सम्पन्न ७ मास क्षमण्डल क्रमश दो दो १७ ११ तथा ६ उपवास २१ अटारिया ७ पाच उपवास तथा २५१ मे भी अधिक अठठम तप ने तपस्वियो का एक मील न भी अधिक नम्बा विधान सामूहिक बर घोडा अयपुर क इतिहास न अभी तक सम्पन्न सभी आयोजना स

अधिन अतिरिक्तगीय भय शाभा-यात्रा न रूप न अयपुर के प्रत्येक नागरिक के हृदय पटन पर अकित रहेगा ।

एत विशाल जुलूस की व्यवस्था न्त्यादि ना दायित्व जिस कुशलता एव सफलता पूर्वक श्री जन मित्त मण्डल

के सेवा दान न बटन किया उसकी सभी ने मुक्त बठ से प्रसथा की

## मण्डल द्वारा व्यवस्थित तपस्वियों का वरघोड़ा जुलूस की अन्य भाकियाँ



‘जोभा-यात्रा’ में सबसे आगे इन्द्र ध्वजा और फिर सुसज्जित हाथी तथा ऊटों की पक्तियाँ शोभायमान थीं। इस जुलूस में ११ हाथी, ९ ऊट, २५ सज्जित घोड़े, ७ रथ, विभिन्न सस्याओं द्वारा प्रदर्शित कई भाकियाँ, ममाज की बहुमूल्यनिधि काष्ठ निर्मित भव्य रथ तथा अनेको सजी हुई पक्ति बट्ट कार्रें सम्मिलित थीं।

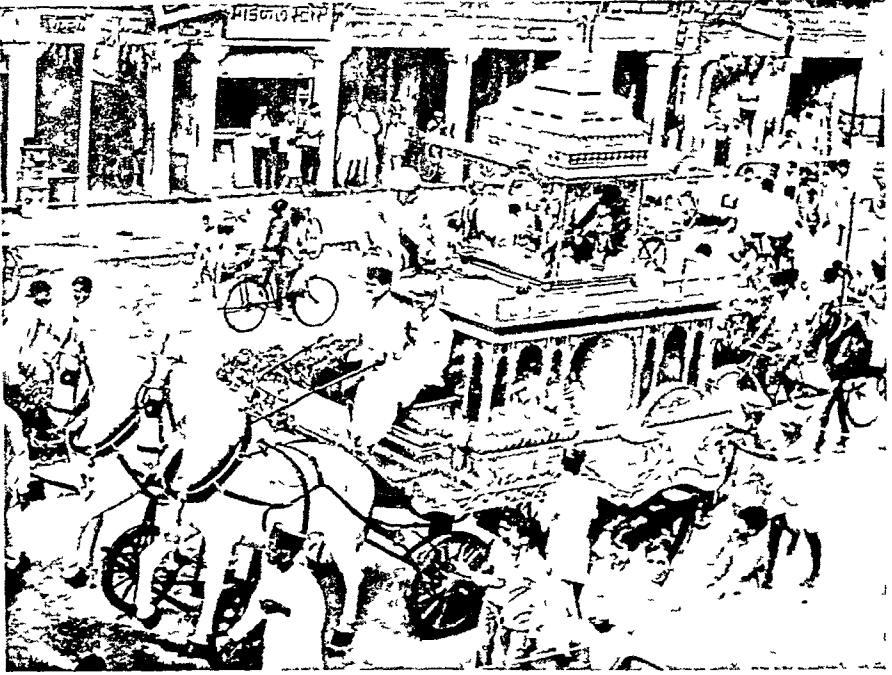


जन गिदाम्ता क पट्ट निय हूये थी भवे जन सव-ड़ी स्कूल के छात्र, टुक पर साल, हरी  
भण्डिया द्वारा याता-यात को व्यवस्थित करता हुआ मण्डन का एक स्वयं  
सेवक तथा पीछे श्रद्धेय मुनिराजो के साथ विमान धावन बग



विन्पी माध्वीयो क मानिष्य म शारिकाषा का विमान समूह तथा व्यवस्था म महायता  
करते हूये मण्डल क वापसना तथा सुन क धामबर ।





जुलूस में शामिल भव्य रथ इसमें जुते हुये काष्ठ निमित्त घोड़े तुरन्त दौड़ने की आतुर जान पड़ते हैं ।



मासक्षमण व अन्य तपश्यायो के तपिस्त्वयो का एक सामूहिक चित्र ।

## अन्धकार पर प्रकाश की विजय वेला

★ साध्वी श्री मणिप्रभना श्री

‘अप्य प्राणियो मे सोचने विचारने चिंतन मनन करने के लिए जान तत्तु इतने विकसित नहीं जितने मनुष्य मे । अतएव प्रत्येक व्यक्ति आत्म विकास के लिये निरंतर प्रयास करे तो कोई कारण नहीं कि वह सूर्य से भी सहस्र गुणा अधिक प्रकाश पुंज आत्मदेव को प्राप्त न कर सके । क्योंकि अज्ञान से ज्ञान, शब्द से भाव, बाह्य से अंतर, भौतिक से अध्यात्म दशारूपी प्रकाश को पाने के लिए मानव शरीर ही सर्वोत्तम है ।’

कितनी सुंदर शली प्रयुक्त की है इस लेख की रचयिता शासन प्रभाविका पूज्य साध्वीजी श्री विचक्षण श्री जी महाराज सा० की आज्ञानुवर्तिनी शिष्या साध्वी श्री मणिप्रभा श्री जी न ।

—सम्पादक

उषा की अणिमा प्राची के अंचल को सुशोभित कर रही थी बाल रवि व आने का आभरण दे रही थी अंधकार उसका आगमन पर प्रोहित हो रहा था कि अब मेरे यहाँ पाव टिक नहीं सकते उषा शरीर से यह व्यक्त नहीं कर रही थी कि तुम यहाँ से नौ दो ग्यारह हो जाओ किन्तु उमका प्रभाव ही ऐसा है कि उमकी आगमन की वेला के पूर्व ही उसने देवना कूच कर जात हैं जब उषा व पश्चात् बाल रवि प्रगट होता है तब प्रकृति भी प्रमुक्ति होती है पत्नी भी कनरव शब्द के द्वारा आनन्द की अभिव्यक्ति करते हैं प्रत्येक व्यक्ति नई उमंग नई चेतना नैकर काय क्षेत्र में प्रवेश करता है मृष्टि के सगस्त पदार्थों में उल्लास दिखाई देता है अतएव हम यह अनुभव करते हैं कि प्रकाश के प्रभाव में अंधकार कितने भी कबु

पित व पाप पूण कार्यों में प्रत्येक व्यक्ति को प्रवृत्ति कराते किन्तु अंधकार पर प्रकाश की विजय वेला अणिमा के साथ ही प्रारम्भ हो जाते हैं और जहाँ सूर्य अपना प्रभा से समस्त जड चेतन मय जगल का प्रकाशित करता है उस समय विचारों अंधकार के चरण चिन्ह भी दिखाई नहीं देते ।

यही बात मनुष्य जीवन में स्पष्ट दिखाई देती है जब वह अज्ञानता मूलक प्रवृत्तियाँ से विमुक्त बन कर आत्म विकास के लिए ज्ञान का प्रकाश पाता है, उस समय उसने जीवन में एक आश्चर्य उत्पन्न करने वाली वृत्ति उत्पन्न होती है जिसने प्रभाव से उसका हृदय एवम परिवर्तित हो जाता है और उस परिवर्तन का प्रत्यक्ष प्रभाव जीवन में होने वाले हर व्यवहार में परिलक्षित होता है

इसका अनुभव हमे आध्यात्मिक क्षेत्र में होता है, क्योंकि समस्त विश्व, जड़ व चेतन दो पदार्थों में परिपूर्ण है, जितने भी पदार्थ दिखाई देते हैं, उनमें इन दोनों तत्वों का ही सम्मिश्रण है, जब तक चेतन जड़ पदार्थों से प्रभावित रहता है, तब तक वह अपने सच्चित् आनन्दमय आत्मस्वभाव की ओर उन्मुख नहीं बनता, क्योंकि वह द्रव्यमान पदार्थों में ही आनन्द की अनुभूति करता है। उसी में सुख डूबता है, उन पदार्थों की उपलब्धि में ही जीवन की सार्थकता मानता है, किन्तु जब कभी उसे जीवन में सत् की ओर अग्रसर करने वाले सत्त्व का पावन प्रसंग मिलता है, उसके मानिष्य से जो तत्व-ज्ञान मिलता है, मानव जब उसकी वाणी का श्रवण करता है, उस समय उसकी स्थिति विचित्र होती है। जिस प्रकार वर्षों में खोये व्यक्ति को अपने घर का मार्ग मिल जाता है, उसी प्रकार उसे एक अपूर्व आत्म ज्ञान की उपलब्धि होती है जिमकी अनुभूति से वह हर्षविभोर बन जाता है। जिस साध्य के साक्षात्कार के लिए साधनों में खोज करता था, उस आत्म देव की उपलब्धि इसी शरीर रूपी मन्दिर में होती है। तब वह अज्ञान मूलक प्रवृत्तियों का उन्मूलन करने में तत्पर हो जाता है। जब तक वह भौतिक पदार्थों को बाह्य दृष्टि से देखता था, तब तक वह अन्धकार में था, वह सत्ता, सम्पत्ति व

मुग्ध-साधनों की प्राप्ति में ही जीवन का अन्तिम लक्ष्य व चरम उद्देश्य मानता था। सद्ज्ञान रूप प्रकाश के प्रभाव में उन समस्त प्रवृत्तियों के प्रति उसमें उपेक्षाभाव उत्पन्न हो जाता है और वह आत्म विकास मूलक प्रवृत्तियों में विशेष रूप में प्रयत्नशील बनता है।

उन प्रकार हम निश्चित रूप में कह सकते हैं कि अन्धकार पर प्रकाश की विजय वेला का प्रतीक मनुष्य भव मिला है। अन्ध किमी भी शरीर में आत्मा, अज्ञान रूपी अन्धकार पर विजय प्राप्त नहीं कर सकती, क्योंकि अन्ध शरीरों में मोचने मगभने व चिन्तन-मनन करने के लिए ज्ञान-तन्तु इतने विकसित नहीं होते जितने मनुष्य शरीर में। अतएव प्रत्येक व्यक्ति आत्मविकसाम के लिए निरन्तर प्रयाम करे तो कोई कारण नहीं कि वह न्यून में भी नहन्त्र गुणा अधिक प्रकाश पुज आत्मदेव को प्राप्त न कर सके। क्योंकि अज्ञान से ज्ञान, शब्द से भाव, बाह्य से अन्तर, भौतिक से अध्यात्म दशात्पी प्रकाश को पाने के लिए मानव शरीर का यही सही एव सर्वोत्तम उपयोग है। यही हमारे जीवन में अन्धकार पर प्रकाश की विजय वेला का प्रतीक है।

★★★

यो तो जन्म सभी लेते हैं ।

आते जाते रहते हैं ॥

विश्व-हितकर जो कर जाते ।

धन्य पुरुष वे होते हैं ॥

—उपाध्याय अमरमुनि

# धर्म और युवावर्ग

★ आर्य पुरुष मुनि श्री उदयसागरजी, लखर (ग्वालियर)

जीवन के उत्तरार्ध में यदि धर्म की ज्योति प्रज्वलित हो गई तो जीवन पयन्त धार्मिकता की वास्तवी वायु वेगशील रहती है। आज का युवा वर्ग दिन व दिन धर्म से विमुख हो रहा है उसमें धर्म के प्रति श्रद्धा व आस्था का अभाव प्रायः दृष्टिगोचर है। इसी प्रसंग से सम्बन्धित पूज्य मुनि श्री उदयसागरजी महाराज सा के प्रवचन का प्रस्तुत सफल ग्वालियर से भाई कस्तूरचन्द बगानी वरानी ने हम भेजा है।

— सम्पादक

स्वप्न परिवर्तनशील है समय के साथ-साथ पदार्थों में भी परिवर्तन क्रम चलता है पशुओं में भी परिवर्तन विद्यमान है जबकि पशु एक जड़ वस्तु है। उदाहरण स्वप्न एक ताना में पाना है और पानी व मध्य एक पत्थर पड़ा हुआ है शन शन उम पत्थर पर कोई अपना रूप धारण कर लगा जब जड़ वस्तुओं में भी परिवर्तन प्रक्रिया विद्यमान है तो मानव में व परिवर्तन स्वाभाविक ही है।

आज का समाज विनाश व चषा चौध व समग्र धर्म नष्ट व क्षय से विमुख हो रहा है। युवा वर्ग तो विशेष रूप से महत्वाकांक्षी होता जा रहा है। जहाँ महत्वाकांक्षा स्थान बनाती है वहाँ स्वाध परापरगता रहती है और जहाँ स्वाधवाद रहेगा

वहाँ पर अध्यात्मवात् व दशन दुलम हूँगे। और जहाँ अध्यात्म नहीं वहाँ धर्म नहीं विनय नहीं मानवता नहीं।

प्राचीन समय में मानव अपने जन्म व पश्चात् अवस्था में जन्म-जसे वृत्ता या वसे-वसे उम अपने वृत्तव्य का भान स्वयं ही होता जाता था। उसके शिक्षा काल में ऐसे कठे नियम रहते थे जिनमें धर्म एवं अध्यात्मवात् बूट-बूट कर भरा रहता था। मनुष्य के जीवन में शिक्षा का अन्तिम स्थान है धर्मानुरागी होना व निरप विनय की निराला आवश्यकता है और विनय नष्ट गिना से ही प्राणी है। प्राचीन आचार्यों ने भी कहा है विद्या ददाति विनयम् जहाँ विनय है वहाँ ही धर्म है नियम है सत्कार है नतिकता धार्मिक व धर्म भी

सुगमता पूर्वक वहाँ खुले रहते हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली अत्यन्त दूषित है, उसमें नैतिकता के दर्शन नहीं होते, उसमें सदाचार शब्द का अध्ययन तो है किन्तु क्रियात्मकता नहीं। शिक्षा में नैतिकता के स्थान पर आज का विद्यार्थी उच्छ्वलता व उद्वण्डता सीख रहा है। जिममें उद्वण्डता होगी, धार्मिकता का समावेश उसमें असंभव है। यही कारण है कि आज समाज में, विशेषकर युवा वर्ग में धार्मिक सत्कारों का अभाव दृष्टि गोचर हो रहा है।

आज के समाज के ठेकेदारों की मनोवृत्ति भी युवकों में धर्म के प्रति विमुखता का मुख्य कारण है। समाज के कर्णधार सम्प्रदायवाद का वाना पहन कर, अन्ध विश्वासी एवं खड़ीवादी परम्परा पर चल रहे हैं। उनके पास न चिन्तन है न मनन ही। आज का युवा वर्ग, इस परिवर्तनशील युग में दलगत साम्प्रदायिक विवादों से दूर रहना चाहता

है, उसकी श्रद्धा यथार्थता में है। भगवान महावीर की दिव्य वारणी, अनेकान्तवाद को आज ममम्न विश्व अपना रहा है, तब हमारे राष्ट्र का युवक वर्ग क्यों नहीं अपनाता? इसका मूल कारण रूढ़िवादी परम्पराएँ हैं।

समाज के महन्त एवं ठेकेदार सामाजिक कार्यों में युवा वर्ग को यथोचित स्थान नहीं दे रहे हैं, अपने परम्परागत आनन पर महन्तों के समान आमीन रह रहे हैं। जबकि विश्व में युवा क्रान्ति हो रही है। समाज के ठेकेदारों की इसी परम्परागत हठधर्मी के कारण ही जैन समाज दिन व दिन पतन की ओर जा रहा है, उसे रोकना युवा वर्ग पर निर्भर करता है। अगर सामाजिक कार्यों में युवा पीढ़ी को यथोचित स्थान प्रदान किया जाय तो वे अवश्य ही धर्मानुरागी बनेंगे। उनके हृदय में श्रद्धा है, भावना है।

★★★

## जीवन पथ

जीवन का पथ पकिल पथ है, संभल-संभल कर चलना।

क्षण-क्षण, पल-पल जाग्रत रहना, हो न कभी कुछ स्वप्नना ॥

जीवन-पथ पर बिखरे काटे, दुर्गन्ध पर्वत नदियाँ गहरी।

क्या चिंता, नन्दन-पथ होगा, मन में हो यदि साहस-लहरी ॥

जीवन का हर पथ हो जाए, सत्य-ज्योति से जगमग-जगमग।

अधकार से भुक्त चतुर्दिक, हो जाए जन का अन्तर्जग ॥

उपाध्याय अमरमुनि

## जैन समाज की अनेकता— कारण और निवारण

★ मुनि श्री मिश्रीलालजी

‘एनिहामिन् सत्तम वं आनोक’ में हमें मालूम होता है कि जय तक आचार और विचार सम्प्रदायों में भेदा न आग्रह का उग्र रूप धारण नहीं किया था तब तक जन एकता उत्पन्न रही। किन्तु ‘मरी मायता ही सत्य है और दूसरा की सचथा असत्य है’—आग्रह की इस तादृश तलवार ने उनको टुकड़-टुकड़ कर दिये। अनाग्रह-वृत्ति का विवास ही एकता का प्रथम आघातभूत सूत्र हो सकता है। मोक्षने और समझने के जो दरवाजे बन्द कर दिये गये हैं वे वापस नहीं खुलेंगे तो जन एकता की बात आकाश-कुमुद की तरह असम्भान ही रहेगी।

प्रस्तुत है मुनि श्री मिश्रीलालजी का मौलिक एवं युगसापेक्ष चिन्तन

—सम्पादक

### सत्तम की अविच्छिन्नता

अवर्गापिणी काल के प्रथम तीर्थङ्कर अमलग भगवान महावीर ने अमलग सत्तम की जो मुहूर्त एवं मुन्दर व्यवस्था की उसी का यह शुभ परिणाम है कि आज तक वह अमलग सत्तम का अविच्छिन्न रूप ही है। वास्तव में सत्तम विभक्त का प्रारम्भ भगवान महावीर की विच्छिन्नता में ही शुरू हो गया था। गौतमिक और जमानिक महावीर के समय में ही अमलग हो गये थे किन्तु वे जन एकता का परम्परा में सम्मिलित नहीं किये गए। उनका जन एकता में वृष्टक ही अमिलत्व बना रहा। परम्परागत महावीर

निवाण के बाद लगभग ६०६ वर्ष तक शासन की परम्परा मुहूर्त रूप में एक होकर चलती रही।

### श्वेताम्बर और दिगम्बर—

उपरोक्त जन एकता के आघात पर यह पड़ा जा सकता है कि भगवान महावीर ने अपने सत्तम में अमलग और अमलग की अमिल अमिल और अमिल अमिल के रूप में अमिल रूप में अमिल दिया था। उनके प्रभावशाली व्यक्तित्व के कारण अमिल प्रकार का आघात निविच्छिन्न रूप में अमिल काल तक चलता रहा। किन्तु यह अमिल का अमिल महावीर निवाण के बाद अमिल समय तक नहीं

रह सकी। इसका सकेत हमें भगवान महावीर के दूसरे पट्टधर जम्बू स्वामी के निर्वाण के बाद मिलता है। उनके निर्वाण के बाद जिन दस वस्तुओं का विच्छेद (लोप) माना जाता है उसमें जिन कल्पिक अवस्था भी है।<sup>1</sup> इससे मालूम होता है कि सचेतत्व और अचेतत्व का विवाद जम्बू स्वामी के बाद ही चल पड़ा था। इसी प्रकार कुछ वर्षों बाद चतुर्थ पट्टधर आचार्य शय्यभवन देशवैकालिक सूत्र में स्पष्टीकरण किया कि—ज्ञान पुन महावीर ने मयम निर्वाहार्थं वस्त्र, पात्र आदि को परिग्रह नहीं कहा अपितु उन पर मूर्च्छा-भाव रखने को ही वस्तुतः परिग्रह कहा है।<sup>2</sup> यह भी उमी द्वेष विचार धारा के विवाद को पुष्ट करने वाला था। पर लगता है फिर भी वह विचार—भेद अन्दर ही अन्दर चलता रहा और ज्यो—स्यो सघ की एकता बनी रही।

पर विभेद का वह छोटा पीवा विवाद के पानी से धीरे-धीरे बड़ा वृक्ष बनता गया और उसने अपने लचीलेपन को खो दिया। फलस्वरूप उसने आग्रह का रूप धारण कर लिया और आगे जाकर महावीर निर्वाण के लगभग ६०९ वर्ष बाद दिगम्बर और श्वेताम्बर इन दो परम्पराओं में सघ विभक्त होगया।

इसके बाद सैकड़ों वर्षों तक जैन सघ मुख्य तथा इन्हीं दो परम्पराओं के अन्तर्गत रहा। आगे जाकर महावीर निर्वाण के ८८२ वर्ष बाद श्वेताम्बर सघ में चैत्यवासियों की स्थापना हुई।<sup>3</sup> दूसरा पक्ष सविग्नया—सुविहित मार्गी कहालाया। इसके बाद तो

जैन सघ विभिन्न सम्प्रदायों में विभक्त होता ही गया जिसका बहुत लम्बा इतिहास है। उसका वर्णन यहाँ आवश्यक नहीं, केवल उन प्रमुख धाराओं का उल्लेख मात्र ही ममीचीन होगा। श्वेताम्बर सघ में मूर्तिपूजक और अमूर्तिपूजक दो विभाग होगये। मूर्तिपूजकों में खरतरगच्छ, तपागच्छ, अचलगच्छ, आदि कई परम्पराएँ हैं। अमूर्तिपूजकों में म्यानक वासी, और तेरापयी मुख्य हैं। दिगम्बर सघ में बीसपयी, और तेरापयी दो प्रमुख हैं। तारण—तरण पथ भी अपना पृथक अस्तित्व रखता है। इसी प्रकार श्वेताम्बर और दिगम्बर परम्पराओं में कई छोटे मोटे विभाग भी हैं, जो कि आचार—विचार की छोटी—छोटी बातों के आग्रह के कारण अपना अलग—अलग अस्तित्व बनाए हुए हैं।

जैन सघ में तीर्थंकर वाणी ही सर्वोपरि है। उसे पूर्ण आत्मानुभूति पर आधारित होने का श्रेय प्राप्त है। टीकाकारों और भाष्यकारों ने उसके अर्थ को परम्परा के प्रकाश में ही पकड़ने का प्रयास किया पर जहाँ कहीं सही मार्ग उसके समझ में नहीं आया वहाँ उन्होंने अपनी स्वतंत्र बुद्धि से नवीन स्थापनाएँ भी स्थापित कीं। वही स्थापनाएँ एव अर्थभेद आगे जाकर आग्रह के रूप में परिवर्तित होते गये। वास्तव में यही जैन समाज की एकता को विभक्त करने का मुख्य कारण बना है।

आइये अब हम इसके निवारण के कुछ सूत्रों पर भी विचार कर लें।

1 गण परमोहि पुलाए आहारग-खरग-उवसमे कपे ।

सजय-तिप केवलि-सिज्भणाय जवुम्मि वुच्छिन्ना ॥

विशेषावश्यक भाष्य २५६३

2 न सो परिग्राहो वुत्तो नायपुत्तेण ताइणा ।

मुच्छा परिग्राहो वुत्तो इइ वुत्त सहेसिणा ॥

दशवैकालिक ६-२०

3 धर्म सागरजी कृत पट्टावली ।

## अनाग्रह—

सहस्रों वर्ष बाद जन धर्मानुयायियों के हृदय में यह प्रबल आकांक्षा जागी है कि विभक्त विश्व धर्म एव विशिष्ट जन-समूह पुनः एकता में आवद्ध हो। यह एकता के लिए शुभ चिह्न है।

जसाकि ऐतिहासिक सदन के आनोक में हम मालूम होता है कि जब तक आचार और विचार सम्बन्धी भेदों ने आग्रह का उदय घाटा नहीं किया था तब तक जन एकता बनी रही। किन्तु मरी मायता ही सत्य है और दूसरों की सवथा असत्य है—आग्रह की इस तीव्र तलवार ने उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। अनाग्रह-वृत्ति का विकास ही एकता का प्रथम आधारभूत सूत्र हो सकता है। साधने और समझने के जो दरवाजे बन्द कर दिये गये हैं वे धापिस नहीं मुलेंगे तो जन-एकता की बात आकाश-कुसुम की तरह असम्मान ही रहेगी।

आज प्रायः सभी जनों में एक दूसरे की विचार धारा को समझने का दृष्टि कोण बना है। इसी का परिणाम है कि जन एकता का विचार तीव्रता से चल रहा है और कुछ-कुछ निवृत्ता भी बनी है। जन दशन का अनेकान्त दशन जो अनाग्रह का शाश्वत सन्देश देता है यदि जन धर्मानुयायियों के जीवन-यवहार में अवतरित हो जाये तो जन एकता बहुत शीघ्र ही हो सकती है।

अनाग्रहवृत्ति का यह अर्थ नहीं है कि हम हमारी मायताओं में ही विश्वास करना छोड़ दें उसके लिये तो एक ही शत जहरी है कि—हमने जो अपना मायताओं को ही सत्य मानकर दूसरों की मायताओं को सवथा असत्य ठहरा लिया है उसमें हम समुचित परिवर्तन करना होगा। दूसरों की मायताओं को भी शान्ति से समझने की चेष्टा करत हुए निरन्तर

सत्य की खोज करत रहना ही अनाग्रह का भावना है। इस प्रकार अनाग्रहवृत्ति के विकास से उस जन एकता की विरासत को पुनः प्राप्त करने के योग्य बन सकेंगे।

## गुण-प्राहकता—

जब अनाग्रह भावना में मनी परस्पर एक दूसरे के निकट सम्पर्क में आये तो एक दूसरे की विशेषताओं को भी नजदीक से देखने का स्वभाविक अवसर प्राप्त होगा। उस समय यदि हम एक दूसरे के गुणों का आदर करें तो एकता एव मनी का वातावरण बनगा।

जन-एकता को विभक्त करने में गुण-दान के स्थान पर केवल दोष-दशन की निदनीय वृत्ति ने बहुत बड़ा हाथ बटाया है। न जान इस वृत्ति ने कितना के दिना में घाव पदा किये हैं और कितने लोगों का दामन कीचड़ में पत्थर उछानने वालों की भाँति मजिन किए हैं।

गुण-प्राहकता की भावना हम यही माग बताती है कि—दोषों को नहीं गुणों को दलो।

भगवान महावीर का पचीस सौ वा जन्म शताब्दी महोत्सव अनिनिकट आ रहा है। इस महान अवसर के लिए और एकता को प्रायः बढ़ाने के लिए प्रत्येक परम्परा के प्रत्येक सन्स्य को कम से कम यह सन्धेप तो अवश्य करना चाहिये कि हम किसी की चाहें प्रशंसा करें या नहीं पर निन्दा तो बनी नहीं करेंगे।

इस गुण प्राहकता के निम्न मजिन में हम एकता के अद्वितीय पौध को मजिन कर बढ वश में परिणत कर सकन है।



## सह-अस्तित्व—

जैन-एकता का तीसरा महत्वपूर्ण सूत्र है—एक दूसरे के सहयोगी बनना । आज इसकी परम आवश्यकता है कि—जिन सिद्धान्तों में सभी जैन एकमत हैं और जिनकी आज के मानव को अत्यन्त आवश्यकता है उन तथ्यों और सिद्धान्तों का हम सम्मिलित होकर प्रचार एवं प्रसार करें ।

जैन दर्शन के प्रति आज के वैज्ञानिक, बौद्धिक एवं चिन्तनशील लोगों में आकर्षण बढ रहा है । पिछले कुछ वर्षों में लगभग सभी जैन परम्पराओं के प्रयास से जैन दर्शन के सम्बन्ध में विश्व को कुछ जानकारी प्राप्त हुई है । यदि जैन धर्म के व्यापक सिद्धान्तों का सह-अस्तित्व के आधार पर और

अधिक प्रसार हो तो यह जैन एकता की मिद्धि के माथ-माथ लोक-कल्याण की उपलब्धि का भी एक सुन्दर उपक्रम मिद्ध हो सकता है ।

जैनो के पास नायन-बुद्धि एवं कल्पना शक्ति का अभाव नहीं है अभाव है सह-अस्तित्व का । आज के इन प्रचार प्रदान युग में बिना मशक्त हुए किसी सगठन का सफल होना हूर उसका जीवन रहना भी मुश्किल हो रहा है । सह अस्तित्व एवं समन्वय में जैन समाज के लिए सशक्त आधार तैयार हो सकता है और वह अपनी सम्पदा से दूसरों को लाभान्वित कर सकता है । जैन-एकता का भव्य महल इन तीन सूत्रों का विकास कर खडा किया जा सकता है, जिसकी आज अत्यन्त आवश्यकता है ।

★★★

## कल नहीं, आज—

“कल नहीं, आज” कल नहीं, आज” मित्र ! तुम्हारे अघरों पर यह घोष हर समय प्रतिध्वनित होना चाहिये । इसके बिना तुम्हारा चलना छलना हो जायेगा व तुम्हारे लिए सफलता देवी का दर्शन बिल्कुल दुर्लभ हो जायेगा । मित्र ! चरण चरण पर इस सूत्र को दृढ सकल्प के साथ स्मृति में लाते रहो, तुम्हारा मार्ग स्वतः साफ हो जायेगा । कल का वरदान उसे ही मिलता है जो आज के वरदान को शत्रु के माथ स्वीकार करता है । आज की उपेक्षा करने वाले को कल का प्यार नहीं मिल सकता ।

साथी ! जो भावुक हृदय “कल नहीं, आज” के स्थान पर आज नहीं, कल का अपना लक्ष्य बनाकर चलते हैं उनका जीवन घोर अभिशापों में पीडित हो जाता है । मिथ्या आश्वासनों के पातक से भारी बनकर उनकी मानसिक शक्ति श्लथित और कुण्ठित हो जाती है, उनका कल आगे से आगे चलता ही जाता है । वह कभी भी पूरा नहीं होता । कल्पना के लोक में विचरण करने वाले वे मगु-मानव एक पाँव भी आगे नहीं बढ सकते ।

पथिक ! तुम्हारी आज तक की असफलता का कारण “आज नहीं, कल” का यह भ्रामक मन्त्र रहा है । विचारों और शब्दों के थोड़े से भेद से तुम्हारे जीवन का सौन्दर्य एक नई चमक के साथ लहलहा उठेगा । अतः तुम्हारे अघरों पर यह घोष हर समय प्रतिध्वनित होना चाहिये—“कल नहीं आज” कल नहीं, आज” ।

—मुनि श्री राकेश कुमारजी

प्रेरक कहानी—

## जवाहरात के दो डिब्बे

★ उपाध्याय श्रीअमरसुनि

गती बरने वाला व्यक्ति उतना दोषी नहीं होता जितना कि अपनी गलती को छिपाने वाला। सत्यवादी मदव एक सम्माननीय व्यक्ति के रूप में गौरवाचित होता है। सत्य एक साधना है कठोर साधना। व्यक्ति यदि जन्म सेता है तो मरता भी है, किन्तु सत्य धजर और धमर है।

प्रस्तुत है सत्य सचन पर आधारित कविश्रीजी की एक प्रेरणापूर्ण कथा—  
जवाहरात के दो डिब्बे।

—सम्पादक

एक बार भगवान् महावीर का समयमरण राजगृह में था। समयमरण सभा में बड़े-बड़े धार्मिक स्थानों परापी महापुरुष भी मौजूद थे और साधारण धर्मियों की जनता भी मौजूद थी। भगवान् धर्मोत्सव कर रहे थे। उनका मुग-बन्ध तो धमृत धरण रहा था। सभी लोग सतृप्य भाव से प्रभु की वाणी को ध्यानपूर्वक कर रहे थे। वहाँ एक धोर भी जा पहुँचा था। यह एक कोने में बसा रहा धीर प्रभु के प्रवचन-सीमुर का पात्र करता रहा। धयासमय प्रवचन समाप्त हुआ तो दूसरे लोग धयो-धयन स्थान पर चले गए। मरिन वह धोर

तब भी वहीं बसा रहा। एक समय ने उगमे पुछा—  
कैसे बीडे हा धमी तब ?

धोर ने कहा— मैंन धात्र प्रथम बार भगवान् की धमृत वाली सुनी है। वाणी कयो धनमोल राना की कर्पा हुई है।

समन ने कहा— सुनने क बाध कुछ प्रहण भी रिया है या नहीं ? जीवन भी क्यापा है या नहीं ? ररता की कर्पा तो हुई किन्तु सुनारे हाय एकाध ररल सगन या नहीं ? त सग सबा तो यह ररल कर्पा सुनारे क्या काम धार्ई ? एक ररन सुम भी तो काम से काम से मने।

चोर सोच में पड़ गया—“मैं क्या लू ?” तभी उसके अन्दर का सत्य-देवता स्पष्ट रूप में बोल उठा—‘भगवन् ! प्रभु की वाणी अमृतमयी है। वह राक्षस को भी देवता बनाती है, किन्तु मैं उसे ग्रहण नहीं कर सकती। मैं चोर हूँ, वस चोरी करना ही मेरा धन्दा है। मेरे इस कलुष जीवन के साथ भगवान् की पवित्र वाणी का मेल कहाँ ? चोरी छोड़ दू तो परिवार क्या खाएगा ? और चोरी नहीं छोड़ सकता, तो पाया क्या ?”

वह मन्त्र मनोविज्ञान के बड़े आचार्य थे। मनुष्य के मन को परखने की कला भी एक कला है। मैं समझता हूँ, हीरो और अन्य रत्नों को परखते-परखते किन्नो का जीवन गुजर जाता है, किन्तु उन्हें मानव को परखने की कला नहीं आती। इन्सान को परखने की कला के अभाव ने ही मन्त्र में अव्यवस्था पैदा कर रखी है। जवाहरात को परखना आता है या नहीं, यह कोई मूल्यवान वस्तु नहीं है। परन्तु मनुष्य को परखने वाला यदि एक भी आदमी परिवार में है, तो वह सब का जीवन शानदार बना सकता है।

हा, तो वे सन्त थे, मनुष्य को परखने वाले। उन्होंने कहा—“चोरी नहीं छोड़ सकते हो, तो दूसरी कोई चीज तो छोड़ सकते हो ?”

चोर ने उत्साह के साथ कहा—“हा, दूसरी चीज छोड़ सकता हूँ।”

सन्त बोले—“अच्छा और कोई चीज छोड़ो। चोरी छोड़ने के लिए अभी हमारा आग्रह नहीं है। उसे अभी नहीं छोड़ सकते तो न सही। किन्तु जो तुमने बहुत सच्चाई और ईमानदारी के साथ अपने जीवन का बही-खाता मेरे समक्ष खोल कर रख दिया है, मैं चाहता हूँ कि तुम उसी नियम को ग्रहण कर लो। देखो, सत्य बोला करो, वस सत्य, झूठ नहीं।”

चोर मन्त्र की वाणी में इतना प्रभावित हुआ कि वह कहने लगा—“अच्छा मैं सत्य बोलने का नियम ले लूँगा, आप दिना दीजिए।”

मन्त्र ने नियम दिना दिया और कहा देगो—“नियम ले लो, किन्तु नियम ले लेना तो महज है, किन्तु उसका पालन करना कठिन बात है। नियम पालन करने के लिए भी सत्य की जरूरत होती है। ग्रहण की हुई प्रतिज्ञाओं के पीछे सत्य का बल होना है, तभी वह निभती है। यदि सत्य न हुआ, तो कोई भी प्रतिज्ञा नहीं निभ सकती।”

चोर ने कहा—“नहीं, महाराज ! मैं सच्चे मन से प्रण कर रहा हूँ। अतः प्राणों के मूल्य पर भी मैं उसका पालन करूँगा।”

इस प्रकार प्रतिज्ञा लेकर चोर अपने घर चला गया। वह चना तो गया, पर प्रभु के चरणों में बैठकर उसने जो वाणी सुनी थी, उसमें उसके मन में एक अनोखी लहर पैदा हो गई थी। घर गया तो मोचा कि अभी घर में खाने-पीने की काफी सामग्री मौजूद है, फिर चोरी क्यों करूँ ? क्यों किसी को व्यर्थ ही पीडा पहुँचाऊँ ? जब तक रहेगा तब तक खाऊँगा, जब नहीं रहेगा, तो फिर चोरी की बात सोचूँगा।

यह सोचकर वह घर में ही रहा, और जो पास था, खाता रहा। एक दिन जब वह समाप्त हो गया, तो विचार किया—अब कहीं चलना चाहिए। इधर-उधर चलने का विचार हुआ, तो मन में एक मन्यन शुरू हो गया।

महापुरुष तो मनुष्य के अन्तःकरण में प्रकाश की एक छोटी-सी किरण डाल देते हैं किन्तु वह धीरे-धीरे चुप-चाप विराट् रूप ग्रहण कर लेती है। पृथ्वी पर एक छोटा-सा बीज फँक दिया जाता है, वह धीरे-धीरे पनपता हुआ एक दिन

महान् वृक्ष बन जाता है। जीवन में भी यही गति हानी है। जीवन में विचार का छोटा-सा बीज पड़ जाता है और यदि उसमें पनपने की शक्ति होती है तो वह एक दिन विशाल वृक्ष का-ना रूप धारण कर लेता है।

हाँ तो चार व मन में मन्वन्त आरम्भ हुआ। वह सोचने लगा— मैं अहिंसा के देवता की वाणी सुनकर आया हूँ परन्तु चोरी करने में तो हिंसा अनिवार्य है। क्या यह संभव नहीं कि मरग भा काम बन जाए और हिंसा भी न हो या कम से कम हो? इस तरह चोरी भी उम अहिंसा का दान मुनास नगी।

घोर न सोचा— किसी साधारण भ्रातृमी के घर में चोरी करूँगा तो उस बड़बुद होगी। न मालूम बेचारा कब तक राएगा और अपने परिवार का निर्वाण करने में लाचार हो जाएगा। घन यदि चोरी करनी ही है तो ऐसा जगह करना चाहिए कि गन्ना हाथ पड़ जाए तो भी घर का मानिक रोने न बडे। तो फिर किमक यहाँ जाऊँ ?

—हाँ राजा हैं न। उनक यहाँ दिन-रात राष्ट्रक दूर-सुदूर प्रेया से निमट कर घन का विशाल प्रवाह था रहा है। घन राजा क मजान में अरून के अनुसार कुछ न भी लिया ता वहाँ क्या कमी पडने वाली है। हाथी क लाने में स चीटा यदि एक-दो दान उठा लाए, तो हाथी का कुछ भी बनता-विगडना नहीं और चींगे का काम भी बन जाता है। अतएव राजा क यहाँ ही चोरी करनी चाहिए।

एक दिन वह मजान की तरफ गया। ताला की भली-भाँति जाँच कर आया। उनका तानी बनवाली। और एक दिन आधी रात का मठ क रूप में सातिया का मुच्छा सखर वह चल दिया सखाने में चोगे करने।

वह पुराना युग था। उस समय के राजा प्रजा से कर बगूल करते थे सही पर बन्ने में प्रजा की सया भी करते थे। यह नहा कि महलों में मस्त पडे हैं और नहीं मानूम कि प्रजा पर क्या-कसी गुजर रही है।

उम समय थ एक जसे राजा और प्रभयकुमार जसे मन्त्री थे जो प्रजा में धुन-मिल गए थे। वे प्राय वेप बदल कर रात्रि के समय घूमने चल दिया करते थे। सोचते थे—जानना चाहिए कि प्रजा को क्या पीडा है और कौन-सा कष्ट है? संभव है जनता की आवाज हम तक न पहुँच पाती हो। यद्यपि हमारे पास कोई भी और कमी भी आ सक्ता है फिर की संभव है लोगो को घाने और कहने की हिम्मत न पडती हो। किंतु हम ता चाहिए कि हम प्रजा की आवाज सुन सकें। योग रात के समय अपने-अपने घरों में खुसकर बातें करेंगे और उनसे हमें उनकी ठीक-ठीक स्थिति का पता लग जाएगा।

इस प्रकार विचार कर राजा और मन्त्री गहरी रात्रि क समय अपने-अपने गलिया में चक्कर काटा करते थे। उस दिन भी दोना वेप-परिवतन करके राजमहल से निकले। इपर से यह जा रहे थे और उधर में वह सग बना हुआ चोर आ रहा था। अकस्मात् सामना हो गया। राजा ने पूछा— कौन ?

अब सत्य-पालन का प्रश्न था सडा हुआ। वह सत्य-आपण करने का नियम लेकर आया है और पहली बार में ही उसकी अग्नि-परीक्षा का अवसर आ गया। साक्षात् राजा और मन्त्री को सामन प्रश्न करते देनकर एक बार तो चोर क्षण-भर के लिए द्विचिंकाया किंतु वह मुरन्त समल गया। उमने निश्चय लिया— कुछ भी हा सत्य ही बानना चाहिए।

इसी समय दोबारा वही 'कौन ?' प्रश्न उसके कानो से टकराया। उसने कहा—“कौन क्या, ? चोर हूँ।” और वह आगे चलता बना।

चोर का उत्तर सुनकर राजा और मन्त्री मुस्करा कर बगल से निकल गये। राजा ने मन्त्री से कहा—“यह तो कोई भला आदमी था। व्यर्थ ही हमने एक राह चलते भले आदमी को टोका।”

मन्त्री ने उत्तर दिया—“जी हाँ, तभी तो यह उत्तर मिला। चोर अपने मुँह से कभी अपने को चोर नहीं कहता, वह तो साहूकार कह कर ही अपना परिचय देता है। चोर को चोर कहने की हिम्मत कहाँ होती है ?”

राजा और मन्त्री बातें करते-करते आगे बढ़ गए और सेठ बना हुआ चोर खजाने के दरवाजे पर पहुँचा। वहाँ पहरा था। पहरेदार ने पूछा—“कौन है ?”

चोर ने बिना हिचकिचाहट के वही उत्तर दिया—“चोर हूँ।”

पहरेदारो ने जब यह सुना, तो वे भी उसे राज्य-अधिकारी समझ कर अलग हट गए। चोर ने खजाने का ताला खोला। भीतर जाकर इधर-उधर देखा। राजा का खजाना था—अपार सम्पत्ति का भण्डार। उसमें चोर ने बहुमूल्य जवाहरात के चार डिब्बे देखे और उसके मन ने कहा—चलो, अब तो काफी लम्बे समय तक का काम हो गया, हो सका तो इससे कुछ धधा भी शुरू कर दूँगा, और सदा के लिए यह चोरी का पाप छोड़ दूँगा। चोर के अन्तर्मन में एक गहरा मानसिक परिवर्तन आ चुका था, अतः उसने चार में से दो डिब्बे उठाए और बगल में दबा लिए। खजाने का ताला बन्द करके वह तुरन्त लौट चला।

चोर वापिस जा रहा था कि सयोगवश फिर राजा और मन्त्री ने उसका सामना हो गया। राजा ने मन्त्री से कहा—“पूछे तो सही कि कौन है ?” मन्त्री बोला—“पूछ कर क्या कीजिएगा ? यह मेठ है जो पहले मिला था और जिसने चोर के रूप में अपना परिचय दिया था।”

किन्तु जब राजा के सामने आ ही गया, तो राजा के मन में कौतूहल जगा और उसने पूछा—“कौन ?”

चोर ने कहा—“श्रीमान्, एकबार तो बतला चुका कि मैं चोर हूँ। अब क्या बतलाना शेष रह गया ?”

राजा—कहाँ गए थे ?

चोर—चोरी करने।

राजा—किसके यहाँ गए ?

चोर—और कहाँ जाता ? मामूली घर में चोरी करने से कितनी भूख मिटती है ? राजा के यहाँ गया था।

राजा—क्या लाए हो ?

चोर—जवाहरात के दो डिब्बे चुरा लाया हूँ।

राजा ने समझा—यह भी खूब है ! कैसा मजाक कर रहा है !

राजा और मन्त्री हँसते-हँसते महलो में लौटे और चोर अपने घर।

सबेरे खजाची ने खजाना खोला, तो देखा कि जवाहरात के दो डिब्बे गायब हैं। खजाची ने सोचा-कि जब चोरी हो ही गई है, तो इस अवसर से मैं भी क्यों न लाभ उठा लूँ। और यह सोचकर शेष दो डिब्बे उसने अपने घर पहुँचा दिए। फिर राजा

के पास जाकर निवृत्त किया— महाराज ! सजाने में चारी हो गई है और जवाहरान के चार दिव्ये चुरा लिए गए हैं ।

राजा ने पहरेदारों को बुलाया । पूछा— चारी कहां हैं ? पहरेदारों ने कहा— घमण्डता ! रात को एक आदमी आया अचानक या परन्तु हमारे पूछने पर उसने अपने आपको चार बननाया । उसने चोर बताने में हमसे समझा कि यह चार नहीं बल्कि आपका ही भेजा हुआ कोई अधिकारी है । चार अपना अपना चोर घोड़े ही कह सकता है ।

राजा साबन लगा— यह तो क्या हुआ है निवृत्त ! शास्त्र में वह चोर ही या साहूवार नहीं था । लेकिन साधारण चोर में अपनी हिम्मत नहीं हो सकती इतना बल नहीं हो सकता । जान पड़ता है—उसे मद्य का महाद्वय बल प्राप्त है । वह किसी महापुरुष के चरणों में पड़ना जान पड़ता है । यह चोर तो है किन्तु उसकी पगडंडी बन्दन के लिए सचाई का आदर उस पर कर लिया गया है । उसने अभी कुछ सत्य ही तो कहा था ।

मन्त्री ने कहा— कुछ भी हो चार का पता तो लगाना ही चाहिए अथवा सजान में एक राज मन्त्रियों भिन्न-भिन्न लगेगी ।

बस नगर में चिन्ता पिटवा दिया गया— जिससे राजा में सजान में चारी की हो वह राजा के दरबार में हाजिर हो जाए ।

लोगों ने डिंडोरा मुना तो बतियाने लगे— 'राजा कहा पागल तो नहीं हो गया है ? वही तो तरह भी चोर पकड़े गए हैं ? कोई चोर राज दरबार में स्वयं जाकर बने कहेगा कि मैंने सजान में से चोरी की है ? बाहरी राजा की बुद्धिमत्ता ?

डिंडोरा पीटा जाता रहा चोर पिटता-पिटता चोर के दरबार पर पहुँचा । डिंडोरा मुना पर चोर मन ही मन साबन लगा— मरे मृत्यु को एक चार

चुनौती मिन गनी है । सत्य की श्रेय और अमोघ शक्ति को एक बार मैं परख चुका हूँ अब उसमें हटने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता । मैंने रात्रि में जो अपना स्पष्ट रूप रखा है वही अब भी रखूँगा और सत्य के लिए अपने जीवन की बाजी लगा दूँगा ।

चार सत्य में प्रेरित होकर निपाहिया में कहना है— चोरी मैंने की है । निपाहिया उस राजा के पास लगे । राजा ने मन्त्री को कहा— रात वाला चार यही है ?

राजा ने पूछा— क्या तुमने चोरी की है ?

चार—जी हाँ यह तो मैं पहले ही बतला चुका हूँ आपको !

राजा—ठीक क्या-क्या चुराया है तुमने ?

चार—एक प्रश्न का उत्तर भी मैंने रात्रि में ही दे दिया था । मैंने सजाने में से जवाहरान के दो दिव्ये चुराए हैं ।

राजा—किन्तु सजान में तो चार चिन्त्र गायब है ?

चार— मैं तो दो हाँ न गया हूँ । शेष दो के विषय में मुझे कुछ भी मालूम नहीं है । मौन के मुह पर पट्टा बंध भी मैंने सत्य ही कहा है । यदि मुझे अमृत्यु का आश्रय देना होना तो मैं स्वच्छा में यहाँ आता ही क्या । दक्षिण महाराज भगवान् महावीर के समवरण में पहुँच कर मैंने अर्पणेश मुना । मुझे चारा छानने के लिए कहा गया पर परिवार के निर्वाह का दूसरा कोई उपाय न जानने के कारण मैंने अपना अक्षय्यता प्रकट की । तब मुझे कहा गया कि यदि तू चोरी नहीं छान सकता तो सत्य तो बोलना कर ! तब मैंने सत्य बोलने का प्रणय कर लिया । सत्य ने हाँ मुझे यथेष्ट किया कि मैं आपसे समझ उपस्थित हो सकूँ ।

कहते हैं उसकी सचाई से प्रभावित होकर राजा ने उसे अक्षय्यता का पत्र प्रदान कर दिया । चार का जीवन सुधर गया ।

★★★

# लंगड़ा विज्ञान अन्धा धर्म

★ ईश्वरलाल जैन, न्यायतीर्थ

आज का युग कहने का नहीं प्रत्यक्ष में कुछ कर दिखाने का युग है। इस वैज्ञानिक और शोध-प्रधान युग में केवल अज्ञान पूर्ण धारणाएँ, शास्त्रों के प्रति आस्था की नहीं अपितु उनके प्रति अज्ञानता की घेतक हैं। नया वैज्ञानिक दृष्टिकोण और अतीत का आध्यात्मिक दृष्टिकोण परस्पर पूरक हैं, विरोधी नहीं। नए चिन्तन के प्रकाश में पुरानी मान्यताओं एवं धारणाओं की पद्धति की पुनर्व्याख्या तथा रूढवादिता को छोड़कर युगानुकूल सुधार की आज धर्म, संस्कृति, समाज और जीवन सभी को आवश्यकता है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में केवल वही धर्म और सिद्धान्त जीवित रह सकते हैं जो मानव जीवन के लिये व्यवहारिक हों।

श्री ईश्वरलालजी जैन एक ओजस्वी एवं भावना प्रधान विचारक तथा आधुनिक विचार जगत के स्वतन्त्र चिन्तक व लेखक हैं। प्रस्तुत है सम्बन्धित विषय पर उनका विवेचनात्मक विचार चिन्तन।

—सम्पादक

“यह विश्व क्या है? विश्व के पदार्थ क्या हैं?” इस जिज्ञासापूर्ति एवं सत्य की खोज में जाने वाले के लिये दो ही मार्ग हैं—धर्म और विज्ञान।

धर्म प्राचीन है और विज्ञान अर्वाचीन। धर्म का आधार श्रद्धा और विश्वास है एवं विज्ञान का आधार तर्क और बुद्धि।

धर्म प्रवर्तकों ने अपने ज्ञानबल से विश्व के पदार्थों को जिस रूप में जैसा अनुभव किया और देखा उसका वैसा ही यथार्थ वर्णन किया, एवं

उन्होंने उनके लिये जो कुछ भी निर्देश दिया उसे बिना शङ्का किये उसी ही रूप में मान्य रखने का दृढ आग्रह धर्म की देन है।

विज्ञान अनुसन्धान व प्रयोगों से हर बात को अपनी कसौटी पर परखता है और उसे प्रत्यक्ष में जैसा अनुभव होता है उसका वैसा ही वर्णन करना विज्ञान का कार्य है। इस प्रकार किसी को धर्म की मान्यता पर गौरव है और कोई सभी उपलब्धियाँ एक मात्र विज्ञान की देन मानने की भूल कर रहा है।

हमारा भूतकाल ऐसा रहा है जब मानव का केन्द्र बिन्दु एक मानव घम ही था। घमग्रन्थों में कहे हुए वचनों को ही मानव यथाथ प्रामाणिक और अटल सत्य के रूप में मानता था। घम ही उसके जीवन के नियम जो भाग प्रशस्त करता था उसी पर बिना धाँका किये अग्रसर होता था और उसी के लिये अग्रण प्राणोत्सर्ग करने को—मर मिटने को तयार रहता था। श्रद्धा और विश्वास उसकी आधार शिला थी उसकी जीवन नम्या उसी के सहारे चलती थी श्रद्धा और विश्वास के बीज बोने के लिये वह एक अज्ञ और अनुकूल समय था।

आज के इस भौतिक युग में भी हमारी अधिकांश मायताओं का आधार धार्मिक ग्रन्थ है जीवन में प्रारम्भ में लेकर अन्त तक हम इन घमग्रन्थों से अपेक्षा रखते हैं घमग्रन्थों द्वारा निर्दिष्ट हेतु-उपायों, शास्त्र-प्रशास्त्र कर्तव्य-अवतव्य विधि-नियम और रीति-नीति को चुपचाप बिना सन्देह किये स्वीकार करते हैं। किसी प्रकार की जिज्ञासा अथवा अग्रण के उपस्थित होने पर हम उस तब की कमौनी पर परखने की अपेक्षा अग्रण-अग्रण घमग्रन्थों में उस का समाधान उत्तर या जिज्ञासा की पूर्ति चाहते हैं। धार्मिक परम्परा का अनुयायी बन उपनिषद् पुराण और भागवत में वृष्णभक्त गीता में रामभक्त रामायण में जनधर्मनुयायी आगमाएँ एवं भगवान् महावीर की वाणी से बौद्ध धर्मावधारणों पिठकों एवं बुद्ध के प्रवचनों से मुसलमान कुरान में और ईसाई बाइबल से इस प्रकार अथवा अग्रण-अग्रण घमशास्त्रों से उसका समाधान चाहते हैं। उनका धर्मशास्त्र क्या सम्बन्ध में क्या कहता है? इस प्रकार अग्रण प्रवचनों के वचनों का खोजने हैं उन में जो कुछ भी उपलब्ध होना है उसे अग्रण नियम के रूप में स्वीकार कर लेते हैं।

परन्तु यद्यपि अग्रण घम हैं भिन्न-भिन्न घमों की अलग अलग मायताएँ हैं उनका सामञ्जस्य भी

एक समस्या है उन में परस्पर विरोध मिलना भी सम्भव है ऐसी स्थिति में किये स्वीकार करना? इसने लिये अग्रणी विवेक बुद्धि का उपयोग करना है घम को भी अग्रणी बुद्धि का कसौटी पर परखना होगा।

जनाचार्यों ने तो इस सम्बन्ध में अत्यन्त उदारता पूर्वक खुले निःसाय से विचार करने की छूट दी है। उन्होंने स्पष्ट कहा है—

पथापातो न मे वीरे न द्वेष कपिलादिषु ।  
युक्तिमद् वचन यस्य तस्य काय परिग्रह ॥

अर्थात् भगवान् महावीर के प्रति मुझे पथापात नहीं है और न कपिल-बौद्ध आदि दर्शनों के प्रति किसी प्रकार का द्वेषभाव है। विवेक बुद्धि से जिन का वचन युक्ति युक्त प्रतीत होता हो उनका वचन स्वीकार करना चाहिये।

युक्तिमद् वचन यस्य' यह शब्द विशद महत्व रखते हैं इसका तात्पर्य स्पष्ट है कि घम को भी अग्रण विवेक तक और बुद्धि की कसौटी पर परखना चाहिये। इसी प्रकार यदि विज्ञान में भी जो वार्ते युक्तियुक्त प्रतीत हों तो उसे स्वीकार करने में भी काई सकोच नहीं करना चाहिये।

घम और विज्ञान का सम्बन्ध यद्यपि सदायः भिन्न है तथापि किसी भी प्रकार परखने में पलायन का यथाथ स्वरूप बदल नही जाना उम चाह विज्ञान की कमौनी पर परखिये या घम की कमौनी पर। अटल सत्य को निष्कान्त नहीं हो सकता यह तो परखने वाले की बुद्धि साधन और ज्ञान पर आश्रित है।

कोई समय ऐसा भी था जबकि जन घम की मायताओं का उपहास किया जाता था जल के एक बिन्दु में पृथ्वी मिट्टी पत्थर आदि के एक कण में अस्तित्व जीव है वनस्पति में भी जीवन है



वे आहार लेते हैं, सास लेते और छोड़ते हैं, दुःख और प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। शब्द आखो से अदृश्य होते हुए भी पौद्गलिक पदार्थ है। इसी प्रकार प्राचीन वातांग्रो मे आकाश मार्ग मे उडने वाले विमानो का वर्णन और तेजोलेश्या और शीतलेश्या की चर्चा उपहास का विषय बने हुए थे। जब तक वैज्ञानिको ने ऐसे विषयो पर अनुसन्धान कर प्रगति नहीं की तब तक ये उपहास का विषय बने रहे।

अब अपने अनुसन्धान प्रयोगो के बाद वैज्ञानिको ने इसे स्वीकार किया हे कि एक जल बिन्दु मे भिन्न भिन्न आकार के हजारो जीव विद्यमान हे जिन्हे आप माइक्रोस्कोप यन्त्र द्वारा स्वयं भली-भाँति देख सकते हैं।

वनस्पति के अनुसन्धान मे डा० जगदीशचन्द्र वसु ने तो अपना जीवन ही लगा दिया और उन्होने प्रमाणित करके दिखा दिया कि वनस्पति मे जीवन हे वे भोजन व हवा और पानी लेकर जीवित हे, वे बढ़ते हैं, सास लेते हे सास छोड़ते हे उनमे ज्ञान हे स्मरण शक्ति हे, स्पर्श से उन्हे ज्ञान और दुःख-सुख की अनुभूति होती हे, इनमे नर और मादा भी होते हैं और कई कई वृक्ष मासाहारी भी होते हे।

पृथ्वी आदि मे जीव होने का जैन दर्शन का सिद्धान्त आज के वैज्ञानिक यन्त्रो ने सत्य प्रमाणित कर दिया हे। न्यूजर्मी (अमेरिका) के रटजर्स विश्वविद्यालय के माइक्रोवायोलाजी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष एव नोबल पुरस्कार विजेता डा० वाक्समन ने अपनी लिखी पुस्तक "प्रिंसिपल आफ साइल माइक्रोवायोलाजी" मे एक चम्मच भर मिट्टी मे असंख्य जीवो का विद्यमान होना सिद्ध किया हे।

पत्यर मे भी जीवन हे वे पृथ्वी मे रहते हुए बढ़ते हे फलते हे। हाल ही मे भारतीय भू गर्भ सर्वेक्षण विभाग के निदेशक श्री जी० एन० दत्त ने

अपने अनुसन्धान और अनुभव के बाद हिमालय के सम्बन्ध मे कहा हे कि हिमालय की न केवल ऊँचाई ही बढ़ रही हे वरन् उसकी चौडाई भी बढ़ रही हे। अनेक स्थलो पर नई 'युवा' चट्टानें पुरानी चट्टानो के ऊपर अगल बगल धकेलती हुई और बढ़ रही हैं।

जब से रेडियो, टेलीवीजन आदि का आविष्कार हुआ हे तब से जैन दर्शन के इस सिद्धान्त को अन्य दर्शन वालो को भी स्वीकार करना पडा हे कि शब्द पौद्गलिक हे, आख से अदृश्य होने पर कान से टकराता हे शब्द ब्रह्माण्ड मे फैलता हे और विद्युत प्रक्रिया—रेडियो आदि द्वारा उसे पकडा जा सकता हे।

आज के युग मे अणु बम व उद्जन बम के आविष्कार के बाद भगवान महावीर पर गोशाला द्वारा डाली गई तेजोलेश्या का वर्णन अविश्वसनीय नहीं रह जाता, बल्कि तेजोलेश्या के परिहार के लिये जैसे शीतलेश्या का प्रयोग किया गया था, उसी प्रकार अणुबम और उद्जनबम के परिहार के लिये शीतलेश्या जैसे पदार्थ का आविष्कार वैज्ञानिको के लिये अभी भी बाकी हे।

रामायण और महाभारत आदि मे आकाश मार्ग मे विचरण करने वाले विमानो का वर्णन और अग्नि-वर्षक व शब्द भेदी वाणो की चर्चा आज के युग मे बडे बडे हवाई जहाजो के निर्माण, और तरह तरह के सहरक शस्त्रो के आविष्कार के बाद उपहास या अविश्वास के विषय नहीं रहे। आजकल के राकेट पूर्वकाल के अग्निवर्षक वाण और शब्द भेदी वाणो का एक सशोधित रूप भी कह सकते हे।

इस प्रकार विज्ञान ने अपने आविष्कारो से धर्म शास्त्रो मे कहे गये सिद्धान्तो का प्रतिपादन एव पुष्टि करके उनका गौरव बढ़ाया हे।

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान तब और युद्धि पर आश्रित होने के कारण अपने नवान्तम साधन-प्रयोग और अनुसंधान द्वारा कसौती पर खरा उतरने पर ही किसी बात को स्वीकार करता है किसी भी कारण से जब तक उसकी कसौती पर खरा नहीं उतरता तब तक वह उसे स्वीकार नहा करता। विज्ञान अपने निष्पक्ष आविष्कार या कथन को आधुनिक साधनों से प्रत्यक्ष सिद्ध कर के बताता है। अतः इस विज्ञान युग में उसका कथन अधिक मय व अधिक विश्वमानीय माना जाना लगा है। प्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर आश्रित होने के कारण मानव का विश्वास और भुक्ताव भी कम और अधिक होना स्वाभाविक बात है।

हम यह मानना होगा कि गत सौ वर्षों के अनुसंधान में विज्ञान ने अनेक ऐसे आश्चर्यजनक आविष्कार कर के दिखाए हैं जो अमभव में प्रतीत हान व विनाश ने जल धल और अन्तरिक्ष पर अपना प्रभुत्व प्राप्त कर ससार का अपनी उपनिधियों में आश्चर्यचकित कर दिया है। वनानिका ने विश्व को अनेक उपनिधियाँ ऐसी प्रदान की हैं जिनकी चर्चाओं में आज का मानव प्राचीन अंधों का अज्ञान को निष्ठापूर्वक पूर्णरूप में सही मानने में सकारण बन गया है। एक और कम युग का मानव चत्तार की धरा पर उतर कर घटा विचरण करने वहा के प्रत्यक्ष अनुभव बना रहा हा वहा के ककड-पत्थर साथ जाकर घटा की उपनिधियाँ बना रहा हो कमी प्रत्यक्ष सिद्ध बात पर हम विश्वास न करें उस भुठान का प्रयत्न करें तो यह हमारे निय उपहासास्प होगा।

विज्ञान स्वयं अपने में पूर्ण नहीं। वह अपनी क्षमता व शक्ति की सीमा को जानता है विज्ञान अपनी पूर्णता का दावा भी नहा करता उस की उपनिधियाँ अनुसंधान और आविष्कार समाप्त

और अन्तिम नहीं हो गये वह तो अनुसंधान के माग पर अग्रसर हा रहा है।

चन्द्रलोक में पहुँचने की सम्भता के बाद वनानिकों ने मंगल और शुक्र ग्रह की ओर भी अनुसंधान प्रारम्भ कर लिये हैं। हाल ही में अमरिका का मानव रहित अन्तरिक्ष यान मेरिनर ६ चालीस करोड किलोमीटर की लम्बी यात्रा ५॥ महीने में सम्पन्न करने के बाद मंगल की कक्षा में चक्कर काटने लगा है और वहा की सतह के चित्र भेजने में प्रारम्भ कर चुका है उधर हस के भी दो यात्रा मास २ और मास ३ मंगलग्रह पर उतरने के निय वहा पहुँच चुके हैं। और अब अन्तिम समाचार यह है कि वह यान जिना भूके के उतर भी गया है। वहा की विशेष जानकारी और अनुभव भविष्य ही बतायेगा।

विज्ञान ने पिछले समय में जिन जिन वस्तुओं का आविष्कार किया या चाहे वह रेन हो या हवाई जहाज देखिये हो या सितमा। आज के समय में उनका सशोधित और परिवर्तित रूप ही देखने को मिलेगा। उनमें भूतकाल की अपेक्षा पर्याप्त प्रगति हुई है और अनेक नये नये सुधार और आविष्कार हो रहे हैं। अगली शताब्दी तक क्या न में और अधिक प्रगति होकर सामने नहीं आयेगी? निश्चित रूप से उनका सुधार होगा एवं वे अधिक भावपूर्ण व सुख सुविधा सम्पन्न अनुभव में आयेंगे। भौतिक पदार्थों और बाह्य जीवन को विकसित करने का प्रकृति की अथवा पुद्गल पदार्थों की क्षुभी हुई अज्ञात शक्तियाँ को खोज निकालने और उन उपनिधियों के अनुसंधान व प्रयोग से मानव समाज की सुख-सुविधाओं में अचानक उपयोग करने का अथ विज्ञान को है। वनानिक मस्तिष्क न भौतिक एवं सांसारिक सुविधा और दिलबहुलाव के अनेक साधन जुटा दिये हैं, वनानिक शायद स दिन प्रतिदिन भौतिक साधनों

की नवीन से नवीन आश्चर्यजनक उपलब्धिया प्राप्त हो रही है, परन्तु सब कुछ होते हुए भी मानव को वास्तविक सुख शांति की अनुभूति नहीं हो रही, जैसे अपार धन सम्पत्ति और ऐश्वर्य का धनी अपने को कगाल समझता है वैसे दशा आज के युग की है, सर्व सुख सुविधा सम्पन्न उपलब्धियों पर भी आज का मानव असन्तुष्ट व दुःखी है, उम का मूल कारण विज्ञान की उपलब्धियों का केवल भौतिक पदार्थ व बाह्य जीवन को उन्नत करना है; इस प्रकार विज्ञान का विकास मर्यादिन होकर रह गया है, अन्तरंग जीवन व आत्मसुख एवं अध्यात्म के लिये उसकी कोई उपलब्धि नहीं। उधर धर्म के लिये भी हमें यह मानना पड़ेगा कि धर्म अनुसन्धान व प्रयोग के साधनों के अभाव से भौतिक पदार्थों के सम्बन्ध में "क्यों और कैसे?" प्रश्न वाचक चिन्हों का उत्तर देने में गूँगा बनकर रह गया है।

वर्तमान समय में तेजी से परिवर्तन हो रहा है, विचार धारा बदलती जा रही है, आज का युग 'बाबा वावय प्राणम्' स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं। प्राचीन होने के कारण उसके द्वारा उपलब्ध वर्णन ही यथार्थ अथवा एक मात्र अटल सत्य है ऐसा सिद्धान्त बना लेने से हम सत्य को पा सकने में सफल नहीं हो सकते। इसलिये प्राचीनता का मोह भी छोड़ने की आवश्यकता है।

श्री सिद्धसेन दिवाकरजी के निम्न दो श्लोक इस आशय को और भी अधिक स्पष्ट कर देते हैं—

पुरातनैर्या नियता व्यवस्थिति-  
स्तथैव सा परिचिन्त्य सेत्स्यति ।  
तथेति वक्तु मृतरूढ गौरवा-  
दह न जात प्रथयन्तु विद्विष ॥

अर्थात् प्राचीन पुरुषों ने जो व्यवस्था नियत की है क्या विचार की कसौटी पर वह वैसे ही खरी उतरती है? यदि ठीक सिद्ध होती है तो हम उसे

स्वीकार कर सकते हैं अन्यथा केवल प्राचीनता के नाम पर स्वीकार्य नहीं। यदि वह ठीक सिद्ध नहीं होती तो केवल मरे हुए पुरुषों के झूठे गौरव के कारण 'हा मे हा' मिलाने के लिये मैं पैदा नहीं हुआ। मेरी इस विचारधारा के कारण यदि मेरा विरोध करने वाले बढते हैं तो मुझे उमकी चिन्ता नहीं।

वहु प्रकारा म्यित्तय परस्पर  
विरोधयुक्ता कथमाशु निष्पन्नय ।  
विशेष मिद्विविधमेव नेति वा  
पुरातन-प्रेम जडस्य युज्यते ॥


अर्थात् प्राचीन परम्परायें विविध प्रकार की हैं। उन में परस्पर विरोध भी है उम लिये एकाएक कौसे निरास किया जा सकता है? यदि किसी विशेष कार्य की मिद्धि के लिये यह कहा जाय कि 'यही पुरानी व्यवस्था ठीक है-और दूसरी ठीक नहीं' ऐसी बात केवल पुरातन-प्रेम के विमोह में जड ही कह सकता है।

इसलिये जीवन में धर्म और विज्ञान दोनों की अपने अपने स्थान पर अनिवार्य आवश्यकता है। विज्ञान और धर्म एक दूसरे के न तो विरोधी हैं और न ही वाधक। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं अथवा एक दूसरे के महायक हैं। विज्ञान के लिये धर्म को और धर्म के लिये विज्ञान को छोड़ने की आवश्यकता नहीं। सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् आइन स्टाइन (EINSTEIN) ने बहुत ही स्पष्ट शब्दों में समीक्षा करते हुए कहा है—

"Science without religion is lame and religion without science is blind"

अर्थात् धर्म के बिना विज्ञान लगडा है और विज्ञान के अभाव में धर्म बिल्कुल अन्धा है।

दोनों के परस्पर पूरक होने में ही जीवन के विकास में दोनों का महत्वपूर्ण योगदान है, दोनों की ही जीवन के उत्कर्ष के लिये महती आवश्यकता है। जीवन के अन्तरंग और बाह्य उभय पक्ष को उन्नत व सफल करने के लिये धर्म और विज्ञान में से किसी को छोड़ा नहीं जा सकता। ★★



विज्ञापन



Gram GEMSTAR

Phone { Office 72621  
Res 74556

*With the best compliments from*

# HEERALAL CHHAGANLAL TANK



MANUFACTURERS  
EXPORTERS  
&  
IMPORTERS  
OF  
PRECIOUS &  
SEMI-PRECIOUS STONES



JOHARI BAZAR, JAIPUR-3

Office 75577  
Residence • 61177

# RAKYAN'S

## JEWELLERS

Importers & Exporters



*Dealers in :*  
Precious, Semi-Precious,  
Star Stones, Ivory And  
Embroidered Bags Etc

Mirza Ismail Road,  
**JAIPUR-1**

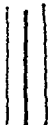
Phone : 62724

Phone - 62777

*With Best Compliments from :*

# LALWANI

## FANCY STORES



Dealers in •  
Top Class Hosiery,  
Luxurious Toilet Goods,  
& Other Requirements.

61, Bapu Bazar  
**JAIPUR-3.**

# MINERAL UDYOG

*Manufacturers & Dealers*

in

Precious, Semi Preciousstones

&

Minerals,



Golcha House

K G. B ka Rasta ( Kalon ka Mohalla )

**JAIPUR-3**

Telegram REAL

Telephone 74028

With Best Compliments From —

**G  
E  
M  
S**

**Trading Corporation**

卐

**PRECIOUS STONES**

★ **MANUFACTURERS**

★★ **IMPORTERS &**

★★★ **EXPORTERS**

卐

**TEDKIA BUILDING**

*Johari Bazar*

**JAIPUR-3 (India)**



❁ शादी कार्ड

❁ कैलेंडर

❁ कागज के रूमाल

❁ कागज की प्लेटें

राजस्थान का प्रमुखतम प्रतिष्ठान

# आनन्द प्रिंटिंग प्रेस

कलात्मक सुझणालय  
गोपालजी का रास्ता, जयपुर-३

फोन : 72858—75289

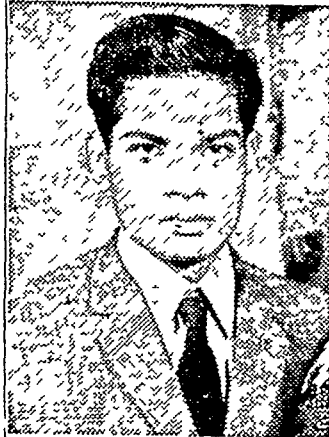
हार्दिक शुभकामनाओं सहित

## राजस्थान कैमिस्ट

अ ग्रेजी दवाईयो के थोक व खेरुज विक्रेता

जौहरी बाजार, जयपुर-३

फोन ७२०५६-६५०८६  
हाथी दात व चन्दन की मूर्तियो का प्रमुख प्रतिष्ठान



अ  
शो  
क  
ब्रदर्स

卐

प्रो० अशोक भण्डारी  
मोतीसिंह भोमियो का रास्ता, जयपुर-३

हादिक शुभ कामनाओ सहित —

❀ गोलचा मिनरल एण्ड केमिकल इन्डस्ट्रीज ❀

"गोलचा हाउस"

कुन्दीगर भई का रास्ता

जयपुर-३

फोन : ७१४४२

१० क्ताइव रोड,

कलकत्ता-१

फोन : २२२६६६

अनेकानेक मंगल कामनाओ सहित —

~~~~~ सौभाग्यचन्द लोढा ~~~~~

ज्वैलर्स

छाजेड हाउस कुन्दीगर भरू का रास्ता,

जौहरी बाजार जयपुर-३

अनेका मंगल कामनाओ सहित !

फोन ७२६७६

जयपुरी रगाई व बन्धेज की साडियो का प्रमुख प्रतिष्ठान

हमारे यहा सूती रेशमी व जार्जेट की साडिया, बाघी, लहरिया,

मोठहा व छापे की तथा गाटे की साडिया

थोक व खेह ज मे मिलते हैं ।

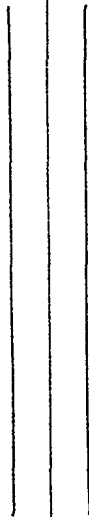
सिरहमल भंवरमल जैन

(स्टेट बक ऑफ वीकानेर एण्ड जयपुर के नीचे)

जौहरी बाजार जयपुर-३

With best compliments

from-



**SHAH AGROCHEMICALS**

S M S Highway,

JAIPUR-4.

*With Best Compliments from*

**BHURAMAL**  
**RAJMAL**  
**SURANA**

Manufacturing Jewellers & Commission Agents  
Exporters & Importers of Precious &  
Semi-Precious Stones



LALKATRA, JOHARI BAZAR,  
JAIPUR-3

Gram **Kushal**

Phone { 76667  
72628

Cable · Jeweemp

Phone : 7 5 7 6 7

With Best Compliments From:-

# Jewels Emporium



M. I. ROAD,  
JAIPUR (Raj.)

Gram VENUS

Phone : 64650

*With Best Compliments From*

## VIMAL JEWELLERS

Manufacturers  
Exporters &  
Importers

Of

\* EMERALDS  
\* RUBIES &  
\* SAPPHIERS

THAKUR PACHEWAR KA RASTA

RAM GANJ BAZAR, JAIPUR-3

Bankers Bank of Baroda  
Johari Bazar Jaipur

Phone : 

|     |       |
|-----|-------|
| Off | 65140 |
| Res | 65160 |
|     | 64829 |

*With Best Compliments from*

## JAINSON JEWELLERS

*Manufacturers & Dealers in Precious stones  
Specialist in Emeralds*

Partners  
Manak Chand Khawar  
Uttam Chand Bader

Chaku ka Chowk  
Gheelwalon ka Rasta  
Johari Bazar JAIPUR-3

Cable Indianstar

S. Room : 6 3 7 6 1

Residence : 7 3 7 6 1

# Jewels & Art Emporium

Precious & Semi Precious Stones,  
Handicrafts, Ivory Carvings, Indian Textiles.  
Paintings, Antiques & Curious

52, Serh Deodi Bazar  
(Hawa Mahal Road)  
JAIPUR.

---

Phone No 7 2 9 0 8

## RAJENDRA JEWELLERS JEWELLERS

Dealers & manufacturers of  
Precious And  
Semi-Precious  
Stones Etc.

Bairathi Bhawan  
Haldion Ka Rasta  
JAIPUR-3.

हमारी अनक मगल कामनायें सदव प्रापके साथ हैं



# नरेन्द्रकुमार एण्ड कम्पनी

ज्वैलर्स

ठाकुर पचेवर का रास्ता,  
रामगज बाजार, जयपुर ।

शुभ सन्देश

फोन ६५०००

विवाह सम्वन्धी श्रम्याइडरी व गोटा साडियो के विशेषत

**गंगवाल ब्रादर्स \* सुरेखा साडीज**

हमार यहा अय प्राधुनिक डिजाइना ती साडिया नी बनाई जाती हैं ।

छी वालो का रास्ता, जयपुर-२

## राष्ट्रीय सुरक्षा कोष

के

अधिक से अधिक सहयोग दीजिये ।

—धी जन मित्र मण्डल द्वारा प्रसारित



*With Best Compliments from .*



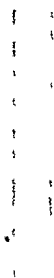
Phone [ Show Room 62003  
Residence 65123

## Jaipur Photo Art Palace

PHOTOGRAPHERS &  
PHOTO GOODS DEALERS

JOHARI BAZAR, JAIPUR-3

*With Best Compliments from :*



Phone 75664 P P

## Santosh Photo Studio

PHOTOGRAPHERS &  
PHOTOGOODS DEALERS

Film Colony  
S M S. Highway, JAIPUR-4

*With Best Compliments from ;*



Phone 65011

## Kamal Textiles

Nehru Bazar,  
JAIPUR

*With Best Compliments form :*



## Highway Tailors

Beri ka Bas  
Kundigar Bheron ka Rasta,  
JAIPUR-3

PHONE 63592

*With best compliments from*

**P A D A M**  
P U B L I C I T I E S

*Commercial Artists    Screen Printers  
&  
Order Suppliers*

DHAMANI STREET  
GHIAURA RASTA JAIPUR-3



*Available -*

**Pawan Dangi Sawan Dangi**  
( With full Orchestra & Good Singer )

**DANGI & DANGI**  
Pahwala House  
Near Bada Mandir  
Haldion ka Rasta JAIPUR 3

*With best compliments from*

*Phone 76517*

**Prakash General Stores**  
TOWEL CENTRE

*Dealers in*  
Top Class Hosiery  
Luxurious Toilet Goods  
& Other Requirments

126 Bapu Bazar  
JAIPUR-3

With Best Compliments From :

Phone: 76832

# RAJENDRA KUMAR SHRIMAL

MANUFACTURERS, EXPORTERS & IMPORTERS OF  
PRECIOUS & SEMI-PRECIOUS STONES

62, GANGWAL PARK,  
M. D. ROAD, JAIPUR-4 (India)

Phone 75195

With best compliments from ·

**RAJIV & CO.**  
JEWELLERS

Kundigar Bheron ka Rasta,  
Johari Bazar,  
JAIPUR-3

Phone 63332

With best compliments from ·

**AREN & CO.**  
JEWELLERS

Motisingh Bhomion ka Rasta,  
Johari Bazar,  
JAIPUR-3.

अनेकानेक शुभ कामनाओं सहित —

# ❀ भारतीय रत्नालय ❀

(बहुमूल्य रत्नों के निर्माता)

मोतीसिंह भामिया का रास्ता

जौहरी बाजार, जयपुर ३

हादिक शुभ कामनाओं सहित —

**सीताराम शाह**

ज्वैलर्स

१९२७-२८-२९-३०-३१-३२-३३

लाल बटला, हल्दिया का रास्ता

जयपुर-३

हादिक शुभ कामनाओं सहित —

**त्रिलोकचन्द बैद**

ज्वैलर्स

जयपुर ।

हादिक शुभ कामनाओ सहित—

फोन : ६१०५६

# त्रिलोकचन्द विनयचन्द एण्ड कं०

ज्वैलर्स

मोतीसिंह भोमियो का रास्ता,  
जौहरी बाजार, जयपुर-३.

अनेकानेक मंगल कामनाओ सहित—

# सुरेन्द्र कुमार टांक

घो वालों का रास्ता, जौहरी बाजार,  
जयपुर-३

हमारी हादिक शुभ कामनाए .

फोन : ७३३१५



# साईकिल हाट



हिन्द, नार्टन साईकिलो के प्रमुख विक्रेता  
किशनपोल बाजार,  
जयपुर-२.

हासिक शुभ कामनाया सहित—

हासिक शुभ कामनाया सहित—

**पदमचन्द काष्ठिया**

ज्वलर्स  
हल्दिया का रास्ता,  
जयपुर-३

**प्रेमचन्द बाठिया**

कुन्डोगर भटजी का रास्ता,  
जयपुर-३

अनक मंगल कामनाया सहित—

अनक मंगल कामनाया सहित—

**रतनचन्द कोठारी**

परतानियो का रास्ता,  
जयपुर-३

**गुलाबचन्द गोलेछा**

धो वाला का रास्ता,  
जयपुर-३

# त्रिशूल मार्क

सीमेन्ट ही अपनाइये

क्योंकि यह :-

प्रत्येक प्रकार की जलवायु में उपयुक्त होता है और उच्चतम प्रतिफल प्रदान करता है।

आधुनिक मशीनों के प्रयोग के साथ पूर्ण दुगल प्रबन्ध द्वारा मनालिन है।

विशुद्ध भारतीय श्रम व पूंजी के अनुत्पत्तीय महयोग का ज्वलन्त उदाहरण है।

राष्ट्रोन्नति की विशाल योजनाओं में महत्वपूर्ण योग प्रदान करता है।

दी जयपुर उद्योग लिमिटेड, जयपुर  
कारखाना- सवाई माधोपुर (५० रेलवे) राजस्थान

अनेक मंगल कामनाओं सहित—

## कन्हैयालाल एण्ड कम्पनी

त्रिशूल सीमेन्ट, वनस्पति घी इत्यादि के बोन विक्रेता

मथुरा दरवाजा, भरतपुर (राजस्थान)

हमारी अनेकानेक मंगल कामनाएं —

## मदन मिष्ठान भण्डार

शुद्ध दूध, दही व स्वादिष्ट मिठाईयो के विक्रेता

कुन्दीगर भैंरुंजी का रास्ता,

दूसरा चौराहा, जयपुर-३.

हासिक शुभकामनाओ सहित

फोन { कार्यालय ७३५६०  
निवास ६१४१६

## ❀ जयपुर टिम्बर ट्रेडर्स ❀

इमारती लकड़ी के प्रमुखतम विक्रेता

नाहरगढ रोड, जयपुर-१

  
**murphy radlo**  
*Delight the home!*

मरफी रेडियो व ट्रांजिस्टर रलोफन और रजन पसे  
पवन और नवनीत सिलाई मशीन के  
प्रसिद्ध विक्रेता व सुधारक

फोन ६३६०१

पवन इलेक्ट्रॉनिक्स ★ स्टैण्डर्ड रेडियो कार्पो०

लुहारवा का गुरा, घाटगेट बाजार, जयपुर-३

उच्चित्त भूख्य पर सेवा ही हमारा ध्येय है।

पतेन मन्वशामाभा तद्वि

पतेन ७३५१०

शर्मा रेडियो एण्ड टेलिविजन इन्स्टीट्यूट

मिर्जा इस्टाईन रोड, जयपुर ८

★ नवन तीन मां म रेडियो व ट्रांजिस्टर वातात व मरम्मत करता मोगिये।

★ हमारे यहाँ रेडियो ट्रांजिस्टर ट्यूरिक्वाडर पनगणन तथा मभा प्रकार के विजला  
व यत्रा की मरम्मत भा अनुभवी एव नुपान मजीयपरा द्वारा की जाता है।



With Best Compliments from .

—

Phone { Office . 73226  
Res. . 63063

**KARNAWAT**  
**Trading Corporation**  
JEWELLERS

M S. B Ka Rasta,  
JAIPUR-3.

हादिक धुमकामनायो सहित

फोन : ६४७५०

**वसन्दमल जियन्दमल**

अधिकृत विक्रेता — उपा सिलाई मशीन, पमे व प्रेसर कुकर  
सभी प्रकार के रेडियो व ट्राजिस्टर आदि का प्रमुख प्रतिष्ठान  
इर, नेहरू बाजार, जयपुर-३.

रेडियो, ट्राजिस्टर, रिकाडं व रिकाडं प्लेयसं स्टीरियोग्राम, पले, सिलाई मशीने,  
सोफा सेंट, स्टील आलमारी, साईकिले, विजली के सामान तथा स्टेट लाटरी  
टिकट के लिये हमारे नवीनतम भव्य शो-रूम पर अवश्य पधारिये—

**जयपुर क्रेडिट कारपोरेशन**

(आसान क्किस्तों वाले)

मयूर सिनेमा के बराबर, नेहरू बाजार, जयपुर

फोन ६३१२५

*With Best Compliments From*

## **Kankariya Corporation**

**JEWELLERS**

*Exporters & Importers*

Haldion 17 Rasta JAIPUR-3

PHONES { Office 65491  
Res 65336  
65108

*With Best Compliments from*

Phone : 65888

## **JAIPUR EMPORIUM**

- Precious & Semi Precious Stones
- Jewellery
- Indian Handicrafts
- Antiques & Curios

Khetan Bhawan  
M I Road  
JAIPUR-1 ( India )

## **GEMPAX**

**JEWELLERS**



140,-Pitaliyon ka Chowk

Johari Bazar

JAIPUR 3

With best compliments from :

## **S. ZORASTER & Co.**

MINERAL DEPARTMENT

SOLE SELLING CUM COMMISSION AGENT FOR :

Messrs Jaipur Mineral Developments Syndicate Pvt. Ltd.

Messrs. Udaipur Mineral Development Syndicate Pvt Ltd.

Messrs Associated Soapstone Distributting Co Pvt. Ltd.

MANUFACTURERS OF BEST QUALITY TALC / STEATITE

Moti Singh Bhomia Ka Rasta,

**J A I P U R - 3.**

Gram · JUPITER

Phone P. B. X. 64141, 64142 & 64143

*With Best Compliments From*

*Sobhag Mal Gokul Chand*

JEWELLERS



**Exporters & Importers of Precious  
& Semi Precious Stones  
Specialists in Emeralds**



**POONGALIA BUILDING  
M S B KA RASTA,  
JOHARI BAZAR,  
JAIPUR-3 ( India )**



**Cable Shikhar**

**Phone 72992 (3 lines)**



# MANGALCHAND GROUP

Leading Group in Non-ferrous metals

*Manufacturers of*

Copper rolled rods, wires, Conductors, & Strips

Specialists in Bright Annealed Copper wires

*Please contact*

JAIPUR  
DELHI  
CALCUTTA  
BOMBAY  
MADRAS

**Phone**

6 1 3 3 1  
2 7 1 4 6 7  
2 2 6 1 3 8  
2 3 4 4 7 9  
3 0 6 1 4

**Cable**

MANGALSONS  
MANGALSONS  
MANGALSONS  
LESSPROFIT  
DELHIWALA

## R. S. METAL INDUSTRIES

*Factory*

Industrial Estate,  
JAIPUR ( SOUTH )  
Tel : 62166 (3 lines)

*Office .*

Mangal Bhawan,  
Station Road,  
JAIPUR-6  
Tel · 63284

LESS PROFIT & BIG TURNOVER IS OUR MOTTO

